संक्षिप्त—

जैन इतिहास

भाग ३; खंड ३

(दक्षिणभारतका मध्यकालीन इतिहास)

"दिगम्बर जैन" के २४वें वर्षका उपहारग्रन्थ।

श्रीमान फतेलालजी [illegible] गोलेछा
जयपुर वालों की ओर से भेंट ॥

—बाबू कामताप्रसादजी जैन।

संक्षिप्त-जैन-इतिहास।

भाग ३ : खंड ३

(दक्षिणभारतका मध्यकालीन इतिहास)

लेखक—

श्रीमान् बाबू कामताप्रसादजी जैन,

ऑनररी सम्पादक "जैनसिद्धांत भास्कर,"

व ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, अलीगंज (एटा)

प्रकाशक—

मूलचन्द किसनदास कापड़िया,

मालिक, दिगम्बरजैनपुस्तकालय, सूरत।

प्रथमावृत्ति] वीर सं० २४६७ [प्रति ८००

"दिगम्बर जैन" के ३४ वे वर्षके ग्राहकोंको भेट।

मूल्य—बारह आने।

स्मारक ग्रंथमाला
नं० १

हमारी धर्मपत्नी सौ० सविताबाई वीर सं० २४५६ में सिर्फ २२ वर्षकी अल्पायुमें एक पुत्र चि० बाबूभाई व एक पुत्री चि० दमयन्तीको बिलखते छोड़कर स्वर्गवासिनी हुई थी उस समय उनके स्मरणार्थ हमने २६२२) का दान किया था, उसमेंसे २०००) स्थायी शास्त्रदानके लिये निकाला था जिसकी आयसे इसी ग्रन्थमालाका प्रादुर्भाव हुआ है और आजतक निम्नलिखित ८ ग्रन्थ इस ग्रन्थमाला द्वारा प्रकट करके 'दिगम्बर जैन' या 'जैन महिलादर्श' के ग्राहकोंको भेट दिये जा चुके हैं —

१—ऐतिहासिक स्त्रियां (ब्र० पं० चन्दाबाईजी कृत) ।)
२—संक्षिप्त जैन इतिहास (द्वि० भाग प्र० खण्ड) १।।)
३—पञ्चरत्न (बाबू कामताप्रसादजी कृत) ।=)
४—संक्षिप्त जैन इतिहास (द्वि० भाग द्वि० खण्ड) १=)
५—वीर पाठावली—(बा० कामताप्रसादजी कृत) ।।।
६—जैनत्व (रमणिक वी० शाह वकील कृत) ।=)

७—संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग २ खण्ड १) १)

८—प्राचीन जैन इतिहास तीसरा भाग (पं० मूलचन्द्र वत्सल कृत) ।॥

९—संक्षिप्त जैन इतिहास (भाग ३ खंड २) यह नवमां ग्रन्थ प्रकट किया जाता है और "दिगम्बर जैन" मासिक पत्रके ३४ वें वर्षके ग्राहकोंको भेट किया जाता है। इसकी कुछ प्रतियां विक्रयार्थ भी निकाली गई हैं।

यदि जैन समाजके श्रीमान व दानी महोदय ऐसे शास्त्रदानका महत्व समझें तो ऐसी कई स्मारक ग्रन्थमालायें दि० जैन समाजमें निकल सकती हैं जैसा कि श्वेताम्बर जैन समाजमें तथा अन्य समाजोंमें लाखों रु०के दानसे ऐसी कई स्मारक ग्रन्थमालायें चलती हैं। इसके लिये सिर्फ दानकी दिशा ही बदलनेकी आवश्यता है। क्योंकि दान तो दिगम्बर जैन समाजमें लाखों रुपयोंका होता है, लेकिन उसका उचित उपयोग नहीं होता है और बहुत जगह तो दानकी रकम अपने यहांकी बहियोंमें लिखी पड़ी रहती है तथा नाम बड़ाईके लिये धर्मके नामसे मन्दिरोंमें खर्च किये जाते हैं। अतः अब तो दिगम्बर जैनसमाज समयकी आवश्यक्ता समझे और जिनवाणी उद्धारका मार्ग अर्थात् शास्त्रदानकी तरफ ही अपना लक्ष दे यही उचित व आवश्यक है।

—प्रकाशक।

दो शब्द ।

प्रस्तुत पुस्तक 'संक्षिप्त जैन इतिहास' के तीसरे भागका तीसरा खंड है। इस खंडमें चालुक्य और राष्ट्रकूटवंशके राजाओंके समयमें जैनधर्मकी क्या दशा रही, यह बताया गया है। पाठकगण, देखेंगे कि यह समय जैनधर्मके उत्कर्षके लिये स्वर्णकाल था। जैनधर्मकी उन्नतिके साथ ही देश भी समृद्धिशाली उच्च दशाको प्राप्त हुआ था। जैनधर्मने लोगोंको सात्विक-दयालु परन्तु साहसी और वीर बनाया था। अहिंसाका गौरव उनके चरित्रोंमें प्रगट है। आशा है, पाठकगण इसके पाठसे समुचित लाभ उठायेंगे।

इस खंडको रचनेमें हमें श्री जैनसिद्धांत भवन, आरा और इम्पीरियल लायब्रेरी कलकत्तासे आवश्यक साहित्य प्राप्त हुआ है। इस कृपाके लिये हम उक्त पुस्तकालयोंके आभारी हैं।

श्री० कापडियाजीको भी हम भुला नहीं सकते। उन्हींकी प्रेरणासे यह खंड शीघ्र तैयार हो सका है और 'दिगम्बर जैन' के ग्राहकोंको उपहारमें मिल रहा है। एतदर्थ वह भी धन्यवादके पात्र हैं।

अलीगंज (एटा)
ता० ७-६-४१

—कामताप्रसाद जैन।

निवेदन।

दि० जैन समाजके सुप्रसिद्ध विद्वान व इतिहास लेखक श्रीमान् बाबू कामताप्रसादजीने संक्षिप्त जैन इतिहासके प्रथम १ खण्ड १ भाग, दूसरा खंड १-२ भाग व तीसरा खंड १-२ भाग बड़े भारी परिश्रम व खोज पूर्वक लिखे थे जो प्रकट हो चुके हैं। और यह तीसरे खंडका तीसरा भाग भी आपने ही अनेक ग्रन्थोंसे खोज करके लिख दिया है जो प्रकट किया जाता है। आप इसप्रकार जैन साहित्यकी जो सेवा कर रहे हैं उसके लिये सारा जैन समाज चिरकृतज्ञ रहेगा। तथा निःस्वार्थ भावसे ऐसी साहित्य सेवा करते रहनेके कारण आपके तो हम अत्यन्त आभारी हैं ही।

ऐसे ऐतिहासिक साहित्यका सुलभतया प्रचार हो इसलिये ही यह 'दिगम्बर जैन' के ग्राहकोंको भेटमें देनेके लिये व कुछ प्रतियां विक्रयार्थ भी निकाली गई हैं। आशा है जैन समाज इसको शीघ्र ही अपना लेगी।

सूरत
वीर सं० २४६७
आषाढ वदी ११
ता. २०-६-४१

निवेदक—
मूलचन्द किसनदास कापड़िया
—प्रकाशक।

संकेत-सूची।

प्रस्तुत ग्रंथकी रचनामें जिन खास ग्रन्थोंका उपयोग किया गया है, उनका उल्लेख संकेतरूपमें यथास्थान सधन्यवाद किया गया है। संकेत-सूची निम्नप्रकार है:—

आपु०=आदिपुराण, श्री० जिनसेनाचार्य कृत (इन्दौर)

इका०=इपीग्रेफिया कर्नाटिका (Epigraaphia Carnatica) बेंगलोर।

इए० } =इंडियन एन्टीक्वेरी (बम्बई)
इऐ० }

इहिका०=इंडियन हिस्टारीकल क्वार्टर्ली-(कलकत्ता)

उपु०=उत्तरपुराण, श्री० गुणभद्राचार्य प्रणीत-(इन्दौर)

एइ०=एपीग्रेफिया इंडिका (Epigraphia Indica) कलकत्ता।

कजैक०=कर्णाटक जैन कवि, प्रेमीजी (बम्बई)

कच०=करकण्डुचरिय (कारंजा जैन सीरीज)

कलि० } =हिस्ट्री ऑव कनारीज लिट्रेचर,
हिकलि० } श्री० ई० पी० राइस कृत (कलकत्ता)

कोपण०=इस्क्रिपशन्स एट कोपल (निजाम आर्केलाजिकल सीरीज, हैदराबाद)

जैए०=जैन एन्टीक्वेरी (आरा)

जैसाइ०=जैनीज्म इन साउथ इंडिया, एस० आर० शर्मा।

जैसिभा०=जैन सिद्धान्त भास्कर (आरा)

जैशिसं०=जैन शिलालेखसंग्रह (माणिकचन्द्र ग्रंथमाला)

जैहि०=जैनहितैषी (बम्बई)

दक्षिण०=दक्षिणभारत और जैनधर्म (मराठी), श्री बी. पाटीलकृत

दिजैडा०=दिगम्बर जैन डायरेक्टरी (बम्बई)

दीरा०=दी राष्ट्रकूटस एण्ड देयर टाइम्स, श्री अल्तेकरकृत (पूना)

नाच०=नागकुमार चरित्र (कारंजा जैन सीरीज़)

नीवा०=नीतिवाक्यामृतम् (माणिकचंद जैनग्रंथमाला बंबई)

बंगै०=गैज़ेटियर ऑव बाम्बे प्रावेंस (१८९६)

बंप्राजैस्मा०=बम्बई प्रान्तीय जैन स्मारक (सूरत)
श्री० ब्र० सीतलप्रसादजीकृत

भाप्रारा०=भारतके प्राचीन राजवंश, श्री वि० रेंडेकृत (बंबई)

मपु०=महापुराण, कवि पुष्पदंतकृत (श्री माणिकचंद्र दि०जैन ग्रंथमाला बंबई)

मैकु०=मैसूर एंड कुर्ग फ्रॉम इंस्क्रिपशन्स, श्री लुई राइसकृत (बंगलोर)

मेजै०=मेडियवेल जैनीज्म (Medieaval Jainism) श्री भास्करानन्द सालेतोरकृत (बम्बई)

विर०=विद्वद्रत्नमाला—श्री नाथूरामजी प्रेमीकृत (बम्बई)

हरि०=हरिवंशपुराण (मा० चं० ग्रं०)

हिंविको०=हिन्दी विश्वकोष (कलकत्ता)

A History of Classical Sanskrit Literature by A. Barriedle Keith (Heritage of India Series, Calcutta).

A History of Classical Sanskrit Literature. by M. Krishanamchariar, (Madras).

नोट—इनके अतिरिक्त अन्य संकेत पूर्व संटोंमें लिखे हुए है।

विषय-सूची।

न० विषय पृष्ठ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८१	२०	of......	of Jainism..." —Altekar
"	२१	0	......of
"	२२	atest	greatest
"	२३	×	Jain
८४	१२	अमोववर्पने	अमोघवर्ष
"	२२	religions	religious
"	२३	Amoghovarsha	Amoghvarsha
८८	२१	छोटे	छोटे भाई
८९	७	पोराण	पोण्ण
९०	६	जयवंट	जयघंट
१००	१२	के हाटक	कहाटक
११२	७	चक्रवर्ती	राजमंत्री
११८	१५	अहिंसाको	अहिंसाकी
१२९	१३	वज्रपाकार	वज्रप्राकार
१३०	१	निस्संन्देह	निस्सन्देह
"	२	इच्छापूर्वक	इच्छापूरक
"	५	के	का
१३१	१	पृजादिये	पूजादिके
१३२	१	निर्भय	निर्भर
१३६	१८	समयाभरणमें	समयाभरणने
१४२	१४	वाणजी	वाणकी
"	१८	संरार	संसार
"	२१	होना सम्भव	होना शायद ही सम्भव

शुद्धाशुद्धिपत्र।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५	१४	शासकी	शासककी
१६	१७	समृद्धिका विजयादित्य	समृद्धिका श्रेय विजयादि
१६	फुटनोट:	"मभवतः इन्हींका अपर नाम जयसिंह था" गलत है–निकाल दो।	
१७	१४	मृत्युके उत्तराधिकारी उनके	मृत्युके समय उनके उत्तराधिकारी
१८	१	जयसिंह सत्याश्रय	सत्याश्रय
२३	१	गुणभद्राचार्य	गुणचंद्राचार्य
२७	१४	समुदाय	समुदार
३२	६	मिलने	मिलनी
३४	६	मे	मे
३८	१५	पराम्त	परास्त
४०	८	ई०	ई० मे
४०	१२	अमोघवर्षके	अमोघवर्षको
५१	९	सम्राट्को	सम्राट्की
५१	दूसरा शीर्षक	यामीण	ग्रामीण
६४	१	ऊपर	अपर
६४	१३	उन्हें	×
७६	१	चतुरंगी	चतुर्दशीके
८०	७	वे	×
८०	१२	से	ने

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४५	२०	अनूढी	अनूठी
१४६	१०	कवितामें	कविता सी
,,	१७	Jainism	Jinasena
,,	२१	JABBRAS	JBBRAS
१४९	१	नानक	नामक
,,	१३	काव्यकर्मज्ञो	काव्य-मर्मज्ञो
१५०	११	' × '	
१५२	१३	उत्पत्ति	उन्नति
,,	१८	आश्रम	आश्रय
१५४	९	थी	थे
१५९	२१	Jain	gain
,,	२२	languge	language
१६२	१९	pillors	pillars
१६६	१०	पक्षिगों	पक्षियों

नोट—'महिमामंद शान्तीम' का वर्णन पृ० १२३ पर ठीक दिया है। पृ० २३ पर नहीं पढ़ना चाहिए।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८१	२०	of......	of Jainism..." —Altekar
,,	२१	..... o	......of
,,	२२	atest	greatest
,,	२३	×	Jain
८४	१२	अमोघवर्षने	अमोघवर्ष
,,	२२	religions	religious
,,	२३	Amoghovarsha	Amoghvarsha
८८	२१	छोटे	छोटे भाई
८९	७	पोराण	पोण्ण
९०	६	जयवंट	जयघंट
१००	१२	के हाटक	कहाटक
११२	७	चक्रवर्ती	राजमंत्री
११८	१५	अहिंसाको	अहिंसाकी
१२९	१३	वज्रपाकार	वज्रप्राकार
१३०	१	निस्सिन्देह	निस्सन्देह
,,	२	इच्छापूर्वक	इच्छापूरक
,,	५	के	का
१३१	१	पूजादिये	पूजादिके
१३२	१	निर्भय	निर्भर
१३६	१८	समयाभरणमें	समयाभरणने
१४२	१४	वाणजी	वाणकी
,,	१८	संरार	संसार
,,	२१	होना सम्भव	होना शायद ही सम्भव

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

संक्षिप्त जैन इतिहास

भाग ३--खंड ३।

प्राक्-कथन।

"वत्थु-सहावो-धम्मो"।

वस्तुस्थिति विवेचना।

वस्तुका स्वभाव ही धर्म है, स्वगुणोंमें स्थित रहना अपने धर्म पर आरूढ़ रहना है और अपने गुणोंसे चलित होना धर्मसे च्युत होना है। जिस प्रकार जलका स्वगुण शीतलता है, उसी प्रकार जीवात्माका अपना गुण दर्शन ज्ञान और सुख है। जानने देखने और सुख अनुभव करनेकी लालसा प्रत्येक जीवमें स्वभावतः है। अतएव मनुष्य, पशु, पक्षी सब ही जीवित प्राणियोंका धर्म दर्शन, ज्ञानमई और सुखको दिलानेवाला है। इस धर्मकी सिद्धिके लिये जो भी साधन काममें लिये जाते हैं, वह भी धर्मके अङ्ग होनेके कारण धर्म ही समझे जाते हैं। लोकमें सूक्ष्मदृष्टिसे अन्वेषण करने पर प्रत्येक मनुष्य इस परिणाम पर पहुंचता है कि प्रत्येक जीव स्वगुणोंसे भटका हुआ है तभी तो वह दुखी है। सुख पानेके लिये प्रत्येक प्राणी छटपटा रहा है। परन्तु वह नहीं जानता कि वह दुखी है अपनी ही गल्तीसे।

॰ नमः सिद्धेभ्यः।

संक्षिप्त जैन इतिहास।

भाग ३--खंड ३।

प्राक्-कथन।

' वत्थु-सहावो-धम्मो '' ।

वस्तुस्थिति विवेचना।

वस्तुका स्वभाव ही धर्म है, स्वगुणोंमें स्थित रहना अपने धर्म पर आरूढ़ रहना है और अपने गुणोंसे चलित होना धर्मसे च्युत होना है। जिस प्रकार जलका स्वगुण शीतलता है, उसी प्रकार जीवात्माका अपना गुण दर्शन ज्ञान और सुख है। जानने देखने और सुख अनुभव करनेकी लालसा प्रत्येक जीवमें स्वभावतः है। अतएव मनुष्य, पशु, पक्षी सब ही जीवित प्राणियोंका धर्म दर्शन, ज्ञानमई और सुखको दिलानेवाला है। इस धर्मकी सिद्धिके लिये जो भी साधन काममें लिये जाते है, वह भी धर्मके अङ्ग होनेके कारण धर्म ही समझे जाते है। लोकमें सूक्ष्मदृष्टिसे अन्वेषण करने पर प्रत्येक मनुष्य इस परिणाम पर पहुंचता है कि प्रत्येक जीव स्वगुणोंसे भटका हुआ है तभी तो वह दुखी है। सुख पानेके लिये प्रत्येक प्राणी छटपटा रहा है। परन्तु वह नहीं जानता कि वह दुखी है अपनी ही गलतीसे।

प्राणियोंको उसने नहीं चीन्हा है। वह शरीररूपी कारागृहको परपदार्थ नहीं समझे हुये है। यही भ्रांति उसके दुःखका कारण है। पराई वस्तुको मोहग्रसित होकर अपनाना अपराध है। अनन्त कालसे प्रत्येक प्राणी पुद्गलरूपी पर पदार्थको अपनाये हुये है—वह शरीर और शरीर-जन्य सुखाभासोंमें पागल हो रहा है। उसकी सद्दृष्टि खो गई है। वह परायेमें अपनेको ढूंढ़ता है। सांसारिक ऐश्वर्य और भोगमें अंधा होकर उनके पीछे भागता है और सबसे ज्यादा हिस्सा पानेके लिये अपने साथियोंसे लड़ मरता है। उसके स्वार्थमें जो बाधक बनता है वह उसके कोप—करवालका वार खाकर पृथ्वीपर लोटता दिखाई पड़ता है। यही नहीं कि कोई बाधक बनो, बल्कि अब तो नृशंसता और स्वार्थपरता इतनी बढ़ी हुई है कि सबसे अधिक लौकिक सम्पन्नता और महानता पानेके लिये अकारण ही पड़ोसियों पर भूखे भेड़ियेकी तरह टूट पड़ना एक मामूली बात हो गई है। यूरुपमें नरचण्डीका नग्न—नृत्य इस भयंकरताका ही दुष्परिणाम है। आज लोकके प्राणी संकटमें घबड़ा रहे हैं। उनके दिल दहल रहे हैं, उनके निरपराध पुत्र पुत्रियां और भाई-बंधु विषैली गैसों और ध्वंसक बमगोलोंके शिकार हो रहे हैं। उन्हींकी आंखोंके आगे उनका प्यारा परिकर, प्रिय परिवार और प्राणोंसे प्रिय परिग्रह—पोट नष्ट—भ्रष्ट किया जा रहा है। वह दिल मसोसकर यह अनर्थ देख रहे हैं। उनके मुंहसे 'आह' और आंखोंसे 'आंसू' भी नहीं निकलते। उनका दिल पत्थरका हो गया है और आंखें पथरा गई हैं! परंतु इस भयानकतामें उनको सद्दृष्टि नहीं सूझती—उन्हें अपनी करनीका ध्यान नहीं आता। क्या उन्होंने

अपने गतजीवनके पृष्ठोंको पलटा है ? प्राणशोषक बंदूक लेकर वह निरपराध मूक पशुओं और पक्षियोंके परिवार नष्ट करनेमें मजा लेते थे ! मूक प्राणी चुपचाप मानवोंके अत्याचारोंको सहते रहे हैं । भोजनके लिये ही नहीं, शौकके लिये, जबानके स्वादके लिये और न जाने किस किस वहमके लिये मानवोंने दीन हीन जीवोंके प्राण अपहरण करना एक खेल कर लिया है । पशु ही नहीं, गरीब और कमजोर मानव भी इन हिंसकोंकी गोलीके निशाना बनते आए हैं । फलतः यह हिंसक भावना उनमें यहां तक बढ़ी कि आज मनुष्यताका दिवाला निकल गया है और मनुष्यको मनुष्य ही नहीं समझा जाता है । यह सब कुछ एक मात्र परपदार्थोंमें अपनापन मान लेने और स्वधर्मको बिसार देनेका दुष्परिणाम है । सारे दुःखका मूल सद्दृष्टिको भूलने अपने और परायेके भेदको ठीक ठीक न चीह्ननेके कारण है । आज ही नहीं, कम और ज्यादा यह दुःप्रवृत्ति लोकमें हमेशासे रही है और इस दुःप्रवृत्तिसे प्राणियोंको सावधान करनेके लिये—उन्हें दुःखसागरसे पार उतारनेके लिये हमेशा महापुरुष उत्पन्न होते रहे हैं ।

जैनधर्मकी प्राचीनता !

जैनियोंका विश्वास है कि प्रत्येक कल्पकालमें ऐसे चौबीस महापुरुष जन्म लेते हैं, जो 'धर्म-तीर्थकी स्थापना करनेके कारण 'तीर्थङ्कर' कहलाते हैं[१]। यही लोकमें परमपूज्य होनेके कारण 'अर्हत्'[२] और क्रोधादि अन्तरंग शत्रुओंको जीतनेकी अपेक्षा 'जिन'

---

१. बृहद्जैनशब्दार्णव, द्वितीयखंड पृष्ठ ४८१ । २. अभिधानचिन्तामणि कोष (१, २४, २५) हरिभा०, भा० ५ पृ० ४७८ ।

स्वधर्मको उसने नहीं चीन्हा है। वह शरीररूपी कारागारको परपदार्थ नहीं समझे हुये है। यही भ्रान्ति उसके दुःखका कारण है। पराई वस्तुको मोहग्रसित होकर अपनाना असम्भव है। अनादि कालसे प्रत्येक प्राणी पुद्गलरूपी पर पदार्थको अपनाये हुये है—वह शरीर और शरीरजन्य सुखाभासोंमें पागल हो रहा है। उसकी सदृष्टि खो गई है। वह पदार्थमें अपनेको ढूंढ़ता है। सांसारिक ऐश्वर्य और भोगमें अंधा होकर उनके पीछे भागता है और सबसे ज्यादा हिस्सा पानेके लिये अपने साथियोंसे लड़ मरता है। उसके स्वार्थमें जो बाधक बनता है वह उसके कोप—करवालका वार खाकर पृथ्वीपर लोटता दिखाई पड़ता है। यही नहीं कि कोई बाधक बने, बल्कि अब तो नृशंसता और स्वार्थपरता इतनी बढ़ी हुई है कि सबसे अधिक लौकिक सम्पन्नता और महानता पानेके लिये अकारण ही पड़ोसियों पर भूखे भेड़ियेकी तरह टूट पड़ना एक मामूली बात हो गई है। यूरुपमें नरचण्डीका नग्न—नृत्य इस भयंकरताका ही दुष्परिणाम है। आज लोकके प्राणी संकटमें घबड़ा रहे हैं। उनके दिल दहल रहे हैं, उनके निरपराध पुत्र पुत्रियां और भाई-बंधु विषैली गैसों और भयंकर बमगोलोंके शिकार हो रहे हैं। उन्हींकी आंखोंके आगे उनका प्यारा परिकर, प्रिय परिवार और प्राणोंसे प्रिय परिग्रह—पोट नष्ट—भ्रष्ट किया जा रहा है। वह दिल मसोसकर यह अनर्थ देख रहे हैं। उनके मुंहसे 'आह' और आंखोंसे 'आंसू' भी नहीं निकलते। उनका दिल पत्थरका हो गया है, और आंखें पथरा गई हैं! परंतु इस भयानकतामें उनको सदृष्टि नहीं सूझती—उन्हें अपनी करनीका ध्यान नहीं आता। क्या उन्होंने

अपने गतजीवनके पृष्ठोंको पल्टा है ! प्राणशोषक दंडक लेकर वह निरपराध मूक पशुओं और पक्षियोंके परिवार नष्ट करनेमें मजा लेते थे ! मूक प्राणी चुपचाप मानवोंके अत्याचारोंको सहते रहे हैं। मांसके लिये ही नहीं, शौकके लिये, जबानके स्वादके लिये और न जाने किस किस वहमके लिये मानवोंने दीन हीन जीवोंके प्राण अपहरण करना एक खेल कर लिया है। पशु ही नहीं, गरीब और कमजोर मानव भी इन हिंसकोंको गोलीके निशाना बनते आए हैं। क्रमशः यह हिंसक भावना उनमें यहां तक बढ़ी कि आज मनुष्यताका दिवाला निकल गया है और मनुष्यको मनुष्य ही नहीं समझा जाता है। यह सब कुछ एक मात्र परपदार्थोंमें अपनापन मान लेने और स्वधर्मको बिसार देनेका दुष्परिणाम है। सारे दुःखका मूल सदृष्टिको भूलने अपने और पराये के भेदको ठीक ठीक न चीन्हनेके कारण है। आज ही नहीं, कम और ज्यादा यह दुःप्रवृत्ति लोकमें हमेशासे रही है और इस दुःप्रवृत्तिसे प्राणियोंको सावधान करनेके लिये—उन्हें दुःखसागरसे पार उतारनेके लिये हमेशा महापुरुष उत्पन्न होते रहे हैं।

जैनधर्मकी प्राचीनता ! जैनियोंका विश्वास है कि प्रत्येक कल्पकालमें ऐसे चौबीस महापुरुष जन्म लेते हैं, जो 'धर्म—तीर्थकी' स्थापना करनेके कारण 'तीर्थङ्कर' कहलाते हैं। वही लोकमें परम पूज्य होनेके कारण 'अर्हत्'[१] और क्रोधादि अन्तरंग शत्रुओंको जीतनेकी अपेक्षा 'जिन'

---

१. वृहत्‌जैनशब्दार्णव, द्वितीयखंड पृष्ठ ४८१। २. अभिधान चिन्तामणि कोष (१, २४, २५) हहिस्का०, भा० ५ पृ० ४७० ।

अथवा 'जिनेन्द्र' नामसे भी प्रख्यात् होते हैं[1]। निपरिग्रही और निरसंग होनेके कारण वह 'निर्ग्रन्थ' नामसे भी अभिहित हुये हैं[2] और परमोत्कृष्ट समभावी संयमशील होनेकी वजहसे उन्हें ही लोग 'श्रमण' कहकर पुकारते हैं[3]। तीर्थङ्करके इन नामोंकी अपेक्षा ही उनका प्रतिपादित धर्म (१) तीर्थक, (२) आर्हत्, (३) जैन, (४) 'निर्ग्रन्थ' और (५) श्रमण धर्मके नामसे समयानुसार लोकमें प्रसिद्ध हुआ मिलता है।

"संक्षिप्त जैन इतिहासके पूर्व प्रकाशित भागोंमें जैनधर्मकी वर्तमान कल्पकालीन उत्पत्तिका प्रामाणिक वर्णन लिखा जाचुका है, जिससे स्पष्ट है कि इस कल्पकालमें सबसे पहले सभ्यताके अरुणोदयमें तीर्थंकर भगवान् वृषभ अथवा ऋषभदेवने जैन धर्मका उपदेश दिया था। उनके पश्चात् समयानुसार तेईस तीर्थंकर और हुये थे, जिनमें सर्व अन्तिम भ० महावीर वर्द्धमान थे। अंतिम तीर्थंकर महावीरके समकालीन म० गौतमबुद्ध थे। गौतमबुद्ध पहले तेईसवें तीर्थंकर भ० पार्श्वनाथके तीर्थवर्ती जैन मुनि रह चुके थे। जैन मुनिके पदसे भ्रष्ट होकर ही उन्होंने बौद्ध धर्मकी स्थापना की थी। यद्यपि बौद्धधर्म जैन धर्मसे सर्वथा भिन्न और स्वतंत्र मत है, परन्तु उसका सादृश्य

---

१. 'घातिकर्माणि जयतिस्म इति जिनः।'—गोम्मटसार जीव० गा० १ - ।

२. 'णिग्गंथा णिस्संगा'-'बाह्यो ग्रन्थोऽङ्गमक्षाणामन्तरो विषयैषिता। निर्मोहस्तत्र निर्ग्रंथः पांथः शिवपुरेऽर्थतः।'

३. 'सगयाए समरणो होइ'—'समणोत्ति संजदोत्ति य रिसि मुणि साधुत्ति वीदरागोत्ति।'

जैन धर्मसे बहुत कुछ है। शायद यही वजह है कि बहुधा लोग जैन धर्म और बौद्ध धर्मको एक धर्म माननेकी गल्ती करते हैं। किन्तु वास्तविकरूपेण जैनधर्म एक स्वतंत्र और स्वाधीन मत है, जो प्रत्येक प्राणीको स्वभाग्यनिर्णय करनेका पूरा मौका देता है। उसका सन्देश प्राणी मात्रके लिये यही है कि जैसे चाहो वैसे बन जाओ। अच्छे कर्म करोगे अच्छा फल पाओगे, बुरे कर्म करोगे बुरा फल पाओगे।

लोकका प्रत्येक प्राणी सुखी जीवन बिताना चाहता है। प्रत्येकको स्वयं सुखी जीवन बितानेका न्यायसंगत अधिकार है और उसका कर्तव्य है कि वह दूसरेके सुखमई जीवन बितानेमें सहायक बने। 'जियो और जीने दो, यही नहीं बल्कि दूसरेको सुखमय जीवन बितानेके लिये सहायता दो' यह है जैनधर्मका संदेश और जहां जहां जिस जिस कालमें जैनधर्मका यह संदेश सर्वोपरि रहा वहां—वहां उस उस कालमें सुख और समृद्धिकी पुण्य धारायें बहीं थीं। उसपर खूबी यह कि जैनधर्म मनुष्यको स्वावलम्बी बनाता है। वह कहता है कि सम्यक्दृष्टी बनकर प्राणी पूर्ण ज्ञानी और पूर्ण सुखी बन सकता है। प्रत्येक प्राणीके लिये उच्चतम ध्येय परमात्मपदको प्राप्त कर लेना है। सबसे राव बनानेवाला धर्म केवल जिनेन्द्र महावीरका धर्म है, जिसमें मनुष्य—मनुष्यमें कोई मौलिक भेद नहीं माना गया है। मनुष्य मात्र भाई—भाई हैं और अपने कर्मसे वह उच्च और नीच बन सकते हैं। कवीन्द्र रवीन्द्रके शब्दोंमें कहना पड़ता है कि भ० महावीरकी यह शिक्षा तत्कालीन भारतमें इस छोरसे उस छोर तक फैल गई थी और भारतीयोंमें भ्रातृभावकी भावना जागृत हो गई थी।

अथवा 'जिनेन्द्र' नामसे भी प्रख्यात होते हैं[1] । निपरिग्रही और निरसंग होनेके कारण वह 'निर्ग्रन्थ' नामसे भी अभिहित हुये हैं[2] और परमोत्कृष्ट समभावी संयमशील होनेकी वजहसे उन्हें ही लोग 'श्रमण' कहकर पुकारते हैं[3] । तीर्थङ्करके इन नामोंकी अपेक्षा ही उनका प्रतिपादित धर्म (१) तीर्थक, (२) आर्हत्, (३) जैन, (४) 'निर्ग्रन्थ' और (५) श्रमण धर्मके नामसे समयानुसार लोकमें प्रसिद्ध हुआ मिलता है ।

" संक्षिप्त जैन इतिहासके पूर्व प्रकाशित भागोंमें जैनधर्मकी वर्तमान कल्पकालीन उत्पत्तिका प्रामाणिक वर्णन लिखा जाचुका है, जिससे स्पष्ट है कि इस कल्पकालमें सबसे पहले सभ्यताके अरुणोदयमें तीर्थंकर भगवान् वृषभ अथवा ऋषभदेवने जैन धर्मका उपदेश दिया था। उनके पश्चात् समयानुसार तेईस तीर्थंकर और हुये थे, जिनमें सर्व अन्तिम भ० महावीर वर्द्धमान थे। अंतिम तीर्थंकर महावीरके समकालीन म० गौतमबुद्ध थे। गौतमबुद्ध पहले तेईसवें तीर्थंकर भ० पार्श्वनाथके तीर्थवर्ती जैन मुनि रह चुके थे । जैन मुनिके पदसे भ्रष्ट होकर ही उन्होंने बौद्ध धर्मकी स्थापना की थी। यद्यपि बौद्धधर्म जैन धर्मसे सर्वथा भिन्न और स्वतंत्र मत है, परन्तु उसका सादृश्य

---

१. 'घातिकर्माणि जयतिस्म इति जिनः।'–गोम्मटसार जीव० गा० १०।

२. 'णिग्गंथा णिस्संगा'-'बाह्यो ग्रन्थोऽगमक्षाणामन्तरो विषयैषिता। निर्मोहस्तत्र निर्ग्रथः पांथः शिवपुरेऽर्थतः ।"

३. 'समयाए समणो होइ'–'समणोत्ति संजदोत्ति य रिसि मुणि साधुत्ति वीदरागोत्ति ।'

किन्तु लोकव्यवहारमें वर्तते हुये सब ही प्राणियोंके लिये पूर्ण अहिंसक वीर बनना संभव नहीं है। उनके लिये अहिंसा धर्मको आंशिक रूपमें पालनेका विधान किया गया है। इसमें गृहस्थ केवल संकल्प करके किसी भी जीवकी हत्या नहीं करते हैं जानबूझकर किसी जीवको नहीं मारते हैं। वैसे घर-गृहस्थीके निर्वाहमें जो हिंसा होती है, उससे वह विलग नहीं रहते। इसी तरह उद्योग धन्धेमें-अर्थोपार्जनमें जीवोंको जो दुःख पहुंचता है और हिंसा होती है उससे भी वह नहीं बच पाता है। साथ ही आततायीसे अपनी रक्षा करने अथवा धर्मका प्रकाश फैलानेके लिये कदाचित् पापियोंका संहार हो जावे तो उससे वह अहिंसक पीछे नहीं हटता है। वह निडर होकर परिस्थितिका मुकाबिला करता है, क्योंकि उसका ध्येय मारना नहीं बल्कि धर्मका प्रकाश करना होता है। जीवन संघर्षमें उसका ध्यान केवल यह रहता है कि जीवनके निर्वाहमें उसके द्वारा कमसे कम हिंसा हो। उसकी यह दयामय भावना ही उसके अहिंसा व्रतका मूल मंत्र है। इस अहिंसाणुव्रतका पालन करते हुये जैनी राजाओंने सराहनीय शासन किया है। जैनी सेनापतियोंने महान युद्धोंमें अपने भुजविक्रमका परिचय दिया है और जैन व्यापारियोंने वक्त पड़ने पर देशके लिये धन ही नहीं दिया अपने शौर्यको भी प्रगट किया है।

प्रस्तुत 'इतिहास' के पूर्व प्रकाशित भागोंमें वर्णित जैन वीरोंका चरित्र इस व्याख्यानका जीवित प्रमाण है। प्रस्तुत भागमें भी जैनी अहिंसक वीरोंका शौर्य और सुशासन प्रमाणित होता है। यह निश्चित है कि जैनी राजाओंके शासनकालमें

जैन धर्मसे भारतका पतन नहीं हुआ।

किन्हीं लोगोंकी यह मिथ्या धारणा है कि भारतमें जैन धर्मका अत्यधिक प्रचार हो जानेके कारण ही भारतका पतन हुआ, परन्तु यह धारणा भारतीय इतिहाससे अनभिज्ञताकी ही द्योतक है। जैन धर्म निस्संदेह अहिंसाको परम धर्म बतलाता है, परन्तु मनुष्यकी आत्मोन्नतिके अनुसार ही उसके दर्जे नियत कर देता है। अहिंसाके पूर्ण उपासक वह ही साधु–महात्मा होते हैं जो अहर्निश आत्मसाधनामें तल्लीन रहते हैं। जिन्होंने लौकिक व्यवहारमई जीवनमें कर्मवीरताका परिचय देकर उससे उदासीनता धारण कर ली है, पूर्ण संतोषी हो गये हैं, जिन्हें कुछ करने-धरनेकी लालसा बाकी नहीं रही है, वही पूर्ण अहिंसक वीर बनते हैं। उनके लिये शत्रुमित्र-उपकारी-अपकारी सब बराबर होते हैं। वह सब अत्याचारोंको शान्तिपूर्वक समभावोंसे सहन करते हैं और खूबी यह कि अत्याचारीके प्रति अमित दया रखते हैं। उसे सन्मार्गका पर्यटक बना कर ही शान्त होते हैं। ऐसे ही महान् साधुवरोंके लिये कहा गया है कि 'जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा' जो कर्मवीर हैं वही धर्मवीर होते हैं।×

× ऐसे महान् अहिंसक वीर आपत्ति आनेपर उसका मुकाबिला समभावसे शान्ति पूर्वक करते हैं। आज म० गांधीजीने जिस अहिंसाको राजनीतिका हथियार बनाया है, वह जैन संघमें हजारों वर्षों पहले-सामूहिक रूपमें भी आजमाया जा चुका है। हस्तिनापुरमें श्री अकम्पनाचार्य और सातसौ मुनियोंके प्राण लेनेपर बलि तुल पड़ता है। मुनिगण अहिंसक निरोध करते और अनशन माड़ बैठते हैं। सारे जैनी भी यही करते हैं। राजा बलिका अत्याचार निष्फल होता है और अहिंसाकी विजय होती है। जैन साधु शत्रुसे भी वैर नहीं रखते। [illegible]

भारतके पतनके मुख्य कारण।

प्राबल्य ही था। महाभारत युद्धके साथ ही भारत अपनी राष्ट्रहितकी ऐक्य भावनाको तिलाञ्जलि दे बैठा। भ० महावीरने इस दुर्भावनाका अपने अहिंसामई उपदेशसे प्राय अन्त ही कर दिया और भारतको सुसगठित बनानेके लिये लोगोंको सावधान किया। परिणामत मगधके मौर्य सम्राटोंने भारतका एकीकरण एव राष्ट्रीय संगठन करनेमे सफलता पाई। उन्होंने भारतसे विदेशियोंको बाहर निकाल फेंका और अफगानिस्तान एव ईरान तक अपना राज्य विस्तार किया। किन्तु भारतका भाग्य तो महाभारत युद्धसे ही राहु ग्रस्त हाचुका था। नवोत्थानकी यह सुवर्णवेला अधिक समय तक न रही। सब ही अपना अपना स्वार्थ साधनेमे लिप्त हो गये। विदेशियोंने भारतके इस अनैक्यसे लाभ उठाया और उसकी स्वाधीनताका अपहरण किया। सक्षेपमें भारत–पतनका मुख्य कारण यही है। यवनों, शकों हूणों और मुसलमानोंके आक्रमण समयकी घटनाओंका अवलोकन करनेसे यही परिणाम घटित होता है कि अपने ही लोगोंके स्वार्थ और देशद्रोहके कारण भारतका रानत्व नष्ट हुआ। जैनधर्म और उसका अहिसा सिद्धान्त तो व्यर्थ ही बदनाम किये जाते हैं।[१]

प्रस्तुत खड।

प्रस्तुत खडम दक्षिण भारतपर मध्यकालम शासन करनेवाले चालुक्य, राष्ट्रकूट आदि क्षत्रिय राजाओंके शासनकालमें जैनधर्मकी क्या स्थिति रही और

---

१ विशप्र लिये 'जैन सिद्धान्त भास्कर' भा० ६ किरण २ मे प्रगट हुआ हमारा लेख देखो।

देश समृद्धिशाली और धर्मपरायण रहा है। जैन इतिहासके लिये गौरवकी बात यह है कि भारत पर विदेशी अधिकारको नष्ट करनेवाले यूनानियोंको भारतसे बाहर निकालनेवाले जैनी ही राजा थे। मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्त जैनाचार्य भद्रबाहुजीके शिष्य थे और अन्तमें जैन मुनि होगये थे, जिन्होंने यूनानी बादशाह सिल्यूकसको बुरी तरह हरा कर भारतके पश्चिमोत्तर सीमाप्रांतसे बाहर भगा दिया था। उल्टे सिल्यूकसकी कन्यासे उनका ब्याह हुआ था। इसी तरह कलिंग चक्रवर्ती जैन सम्राट् खारवेलने यूनानी बादशाह दमत्रयको भारतमें ठहरने नहीं दिया था। उत्तर भारत और दक्षिणमें मुसलमानोंसे सफल मोरचा लेनेवाले सुहृद्ध्वज और वैचप्प भी जैनी थे। सारांशतः जैन शौर्य न केवल अध्यात्मिक क्षेत्रमें ही सीमित रहा, बल्कि लौकिक जीवनके कर्मक्षेत्रमें भी उसका अद्वितीय प्रदर्शन हुआ है।

खेद है कि जैन इतिहासके अभावमें लोगोंने जैनियोंके विषयमें भ्रान्तिपूर्ण मत गढ़ लिये हैं। ऐसे महानुभाव यदि इस 'संक्षिप्त जैन इतिहास' के ही सब भागोंको पढ़नेका कष्ट उठायेंगे तो वह जैनियोंके अपूर्व राष्ट्रहित सम्बन्धी वीरतामय कार्योंका परिचय पा लेंगे। अहिंसा और सत्य ही लोक कल्याण कर्ता है और साधारण जनतामें उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न करानेके लिये अहिंसक वीरोंका इतिहास प्रकाशमें लाना आवश्यक ही है।

वास्तवमें भारतके अधःपतनका मूल कारण यहांकी शासक जातियोंमें स्वार्थ, मान और अविश्वास जैसे दुर्गुणोंका

भारतके पतनके मुख्य कारण। प्रारम्भ ही था। महाभारत-युद्धके साथ ही भारत अपनी राष्ट्रहितकी ऐक्य भावनाको तिलाञ्जलि दे बैठा। भ० महावीरने इस दुर्भावनाका अपने अहिंसामई उपदेशसे प्राय अन्त ही कर दिया और भारतको सुसगठित बनानेके लिये लोगोंको सावधान किया। परिणामत मगधके मौर्य सम्राटोंने भारतका एकीकरण एव राष्ट्रीय सगठन करनेमें सफलता पाई। उन्होंने भारतसे विदेशियोंको बाहर निकाल फेंका और अफगानिस्तान एव ईरान तक अपना राज्य विस्तार किया। किन्तु भारतका भाग्य तो महाभारत युद्धसे ही राहु ग्रस्त हो चुका था। नवोत्थानकी यह सुवर्णवेला अधिक समय तक न रही। सब ही अपना अपना स्वार्थ साधनेमें लिप्त हो गये। विदेशियोंने भारतके इस अनैक्यसे लाभ उठाया और उसकी स्वाधीनताका अपहरण किया। सक्षेपमें भारत-पतनका मुख्य कारण यही है। यवनों शकों, हूणों और मुसलमानोंके आक्रमण समयकी घटनाओंका अवलोकन करनेसे यही परिणाम घटित होता है कि अपने ही लोगोंके स्वार्थ और देशद्रोहके कारण भारतका राजत्व नष्ट हुआ। जैनधर्म और उसका अहिंसा सिद्धान्त तो व्यर्थ ही बदनाम किये जाते हैं।[१]

प्रस्तुत खण्ड। प्रस्तुत खण्डमें दक्षिण भारतपर मध्यकालमें शासन करनेवाले चालुक्य, राष्ट्रकूट आदि क्षत्रिय राजाओंके शासनकालमें जैनधर्मकी क्या स्थिति रही और

---

१ विशेषके लिये 'जैन सिद्धान्त भास्कर' भा० ६ किरण २ में प्रगट हुआ हमारा लेख देखो।

उसकी प्रधानतामें राज्य और राष्ट्रकी कैसी उन्नति हुई ? इन बातोंका दिग्दर्शन कराना इष्ट है । इस विवेचनके द्वारा यह व्याख्या और भी स्पष्ट हो जायेगी कि जैनधर्मके वातावरणमें जहांपर राजा जैनी हो और प्रजा जैनी हो वहांपर सुख, शांति और समृद्धिका दौरदौरा होता है । प्रत्येक प्राणी जैनी राज्यमें अभय होता है और वह सद्दृष्टि और सद् ज्ञानको पाकर अपना आत्मकल्याण करनेमें निरत रहता है। यह है विशेषता जैनत्वके प्राबल्यकी ।

यह पहले बताया जाचुका है कि दक्षिण भारतका इतिहास दो भागोंमें विभक्त है । विंध्याचलके निकटवर्ती दक्षिण पथका ऐतिहासिक वर्णन है और दूसरा सुदूर दक्षिण देशोंका इतिहास है। चालुक्य और राष्ट्रकूट राजाओंका सम्बन्ध दक्षिणपथसे रहा है । उनके समयवर्ती राजा सुदूर दक्षिणमें पल्लव और चोलवंशके थे । इस खण्डमें इन्हींका ऐतिहासिक परिचय करानेको प्रयत्न किया गया है। इन राजवंशोंका राजत्वकाल निम्न प्रकार विभक्त है —

१—प्रारंभिक चालुक्यकाल (इस्वी ५ वींसे ७ वीं शताब्दि)
२—राष्ट्रकूटकाल (ई० ७वींसे १३ वीं शताब्दि तक)
३—अंतिम चालुक्यकाल (ई० १० वींसे १४ वीं श० तक).

दक्षिणपथके राजनैतिक कालका मुख्य विभाजन यही होसक्ता है। चालुक्य और राष्ट्रकूट राजवंश प्रबल थे, इस कारण उन्हींके नामोंकी अपेक्षा कालविभाग किये गये हैं। वैसे इस अंतराल कालमें अन्य राजवंश भी उल्लेखनीय हुये हैं, जिनका वर्णन भी यथावसर लिखा जाना उपयुक्त है। जैसे राष्ट्रकूटकालमें मैसूरका गंगवंश और

चालुक्यकालमें होयसल वंशके राजाओंके शासनकाल दक्षिणभारतके इतिहासमें अपना खास स्थान रखते हैं। गंगसाम्राज्यका इतिहास द्वितीय खंडमें लिखा जाचुका है। होयसल वंशका इतिहास लिखा जाना शेष है, जो अगले खंडमें लिखा जायगा। इसी कालमें कलचूरिवंशके राजाओंका अल्पकालवर्ती शासन भी उल्लेखनीय है। इसी प्रकार सुदूर दक्षिणमें पल्लव और चोलवंशोंके राजाओंने इसी कालमें अर्थात् ५वीं शताब्दिसे १४ वीं शताब्दि तक राज्य किया था। पहले ही पाठकगण चालुक्य राज्यकालका इतिहास पढ़िये।

(१)

प्रारंभिक—

चालुक्य-काल।

(पूर्वीय चालुक्योंके उल्लेख सहित

चालुक्य-राजवंश ।

(प्रारंभिक और पूर्वीय चालुक्य)

चालुक्योंकी उत्पत्ति। चालुक्य राजवंश दक्षिण भारतका एक प्रबल प्राचीन राजकुल था। कहते हैं कि इस राजवंशके पूर्वज उत्तर भारतसे दक्षिणमें जाकर शासनाधिकारी हुये थे। प्राचीनतम शिलालेखोंमें इस वंशका उल्लेख चल्क्य, चलिक्य और चलुक्य इत्यादि नामोंसे हुआ है, किन्तु इनकी प्रसिद्धि 'चालुक्य' नामसे ही विशेष रही है[1]। विल्हणके 'विक्रमाङ्कचरित्र' में चालुक्योंकी उत्पत्ति ब्रह्माके चुलुक (जलपात्र) से हुई बताई गई है; किन्तु शिलालेखोंमें उनके प्राचीन नाम चल्क्य, चलिक्य आदि विल्हणके विवरणको कल्पित ठहराते हैं। चालुक्योंके किसी भी प्राचीन शिलालेखमें ब्रह्माके चुलुकसे चालुक्य वंशोत्पत्तिकी कथा नहीं लिखी है। पूर्वीय चालुक्योंके शिलालेखोंमें लिखा है[2]—कि चालुक्य राजगण चन्द्रवंशी क्षत्रिय थे और उनकी साठ पीढ़ियोंने अयोध्यामें राज्य किया था। चालुक्यवंशके पहले राजाका नाम बुद्ध था। उनके पश्चात् क्रमशः पुरूरवस, आयु, नहुष, ययाति, पुरु, जन्मेजय, प्राचीश, सैन्ययाति हयपति, सार्वभौम, जयसेन, महाभौम, ऐशानक, क्रोधानन, देवकि, ऋभुक, ऋक्षक, मतिवर, कात्यायन, नील, दुष्यन्त, भरत, भूमन्यु, हस्तिन् , विरोचन, अजमील्ह, संवरण, सुधन्वन् , परीक्षित. भीमसेन, प्रीदुपन, सन्तनु, विचित्रवीर्य, पाण्डुराज, पाण्डव, अभिमन्यु,

---

१ हिविको० ७। ३१४। २ इंहिका० ८। २१-२२

परीक्षित, जन्मेजय, क्षेमुक, नरवाहन, शतानीक और उदयनने राज्य किया। उदयनके पश्चात् अयोध्याके राजसिंहासनपर इस वंशके ५९ अन्य राजाओंने स्थित होकर शासनसूत्र सम्हाला था। पश्चात् इसी वंशके विजयादित्य नामक राजाको अयोध्या छोड़कर दक्षिणापथ जाना पड़ा। विजयादित्यने त्रिलोचन पल्लवके राज्य पर आक्रमण किया। किंतु विजयलक्ष्मी विजयादित्यसे रुष्ट हो चुकी थी। विजय भी उसके वियोगको अधिक सह न सके। इसी युद्धमें वह वीरगतिको प्राप्त हुये। उनकी गर्भवती पट्टरानी असहाय रह गई परन्तु उसने साहस नहीं छोड़ा। वह अपने राजमंत्रियों और कुल पुरोहितके साथ जाकर मुडिवेमुके अग्रहारमें छिप रही थी।

विष्णुभट्ट सोमयाजिन नामक सन्यासी वहां रहता था। उसने इस राजपरिवारकी इस ओर भरसक खूब सहायता की। इसी अग्रहारमें पट्टरानीसे एक प्रतापी पुत्र जन्मा जो उपरान्त विष्णुवर्द्धन नामसे प्रसिद्ध हुआ। विष्णुवर्द्धनमें जन्मसे ही एक महान शासककी क्षमता छुपी हुई थी। युवा होते होते उसने सब ही राजोचित गुण प्राप्त कर लिये और वह एक वीर पराक्रमी योद्धा हुये। विष्णुवर्द्धनने कदम्ब गंग आदि राजाओंको परास्त करके अपने राज्यकी स्थापना दक्षिणापथमें की। यहींसे दक्षिणके चालुक्यवंशका प्रारम्भ हुआ।

इस विवरणसे स्पष्ट है कि चालुक्य राजवंशकी उत्पत्ति उत्तर भारतके चन्द्रवंशी क्षत्रियोंसे हुई थी। और अयोध्यासे आकर वह दक्षिणापथमें राज्याधिकारी हुये थे। संभव है कि मगध साम्राज्यके छिन्न भिन्न होने पर शतानीक और उदयनके वंशज विजयादित्य किसी

अत्याचारी राजाके सम्मुख अपने राजत्वको स्थिर नहीं रख सकनेके कारण राजच्युत होगये * और दक्षिण भारतमें अपने भाग्यकी परीक्षा करने आये; परन्तु वह स्वयं नहीं, उनका पुत्र अपना राज्य स्थापित करनेमें सफल-मनोरथ हुआ।

विष्णुवर्द्धनने चालुक्य नामके पर्वतपर नन्दगिरि, कुमार नारायण और मातृकाओंको परितृप्त करके राजछत्र धारण किया था। उन्होंने श्वेतछत्र, शङ्ख, पञ्चमहाशब्द पालिकेतन, प्रतिठक्का, वराहलाञ्छन, मयूरासन, मकर, तोरण और गङ्गा यमुनादि चिन्होंसे विभूषित होकर अक्षुण्ण भावसे दक्षिण भारतका शासन किया था। हमारा अनुमान है कि चलुक्य पर्वतपर राजत्व प्राप्त करनेके कारण ही अयोध्याका यह क्षत्रिय चंद्रवंश 'चालुक्य' नामसे प्रख्यात् हुआ।

विष्णुवर्द्धनका दूसरा नाम 'रणराग' था[1]। प्रकृतिने ही रणरागको एक महान् नृपके गुणोंसे समलंकृत किया था।

विष्णुवर्द्धन रणराग। उसका पाणिग्रहण पल्लव-राजकुमारीके साथ हुआ था। चालुक्य राज्यके संस्थापकका उत्तराधिकारी उनका पुत्र विजयादित्य हुआ[2]। किंतु चालुक्य राजवंशकी प्रसिद्धि और समृद्धिका विजयादित्यके पुत्र पुलिकेशी वल्लभके भाग्यमें बदा था। उन्होंने शक संवत् ४११ (४८९ ई०) में राजसिंहासनपर आरूढ़ होकर अपना शौर्य प्रकट किया था।

पहिले चालुक्यराजाओंकी राजधानी इन्दुकान्त नगरी थी; परन्तु

---

* संभवतः इन्हींका अपर नाम जयसिंह था। १ हिंविको०, ७-३१५, २ दंहिका०, ८-२३

पुलकेशी प्रथम। पुलिकेशीने पल्लवोंको युद्धमें परास्त करके वातापी नगरी पर अधिकार जमाया था। उसने वातापीको ही अपनी राजधानी नियत किया था[1]। बीजापुर जिलेका बादामी ही प्राचीन वातापीपुर है। यह राजा वैदिक धर्मका उपासक था।

कीर्तिवर्मा। पुलकेशिका पुत्र कीर्तिवर्मा चालुक्यवंशका दूसरा उल्लेखनीय राजा हुआ। सन् ५६२ ई०में उनको राज्याधिकार प्राप्त हुआ था। उन्होंने नलों, मौर्यों और कदम्ब राजाओंको पराजित किया था। उनका विवाह सेन्द्रक कुलके राजा श्रीवल्लभ सेनानन्दकी बहनके साथ हुआ था।

इस रानीसे उनके (१) पुलकेशी द्वितीय, (२) कुब्ज-विष्णुवर्धन और (३) जयसिंहवर्धन नामक तीन पुत्र हुये थे।

मङ्गलीश। किन्तु कीर्तिवर्माकी मृत्युके उत्तराधिकारी उनके पुत्र अल्पवयस्क थे, इस कारणवश उनके उत्तराधिकारी उनके कनिष्ठ भ्राता मङ्गलीश हुये थे। उन्होंने सन् ५०७ से ६०८ ई० तक राज्य किया था। वह एक बलवान शासक थे और उन्होंने कई वैष्णव मंदिर व मूर्तियां निर्मापित कराई थीं। मङ्गलीशकी इच्छा थी कि उनके बाद चालुक्य राज्यका अधिकारी उनका पुत्र हो। किन्तु कीर्तिवर्माके पुत्र पुलकेशीको यह असह्य था। परिणामत गृहयुद्ध छिड गया और मङ्गलीश उसमें काम आया।

---

१ हिंविका०, ७-३११, २ दक्षिवा०, ८-२४।

पुलकेशी द्वितीय।

अब पुलकेशी, जिसका दूसरा नाम जयसिंह सत्याश्रय था, राजा हुआ। निस्सन्देह पुलकेशी सत्याश्रयके समान प्रतापी राजा चालुक्य वंशमें दूसरा नहीं हुआ। ज्यों ही वह राज्यसिंहासनारूढ़ हुआ कि उसे एक दूसरी आपदाको शमन करनेके लिये अपना शौर्य प्रगट करना पड़ा। बात यह हुई कि चालुक्य गृहयुद्धसे लाभ उठाकर अप्पायिक और गोविन्द नामक राजाओंने चालुक्य राज्यपर धावा बोल दिया था। पुलकेशी इस आक्रमणसे विचलित नहीं हुये। उन्होंने चालुक्य सेनाका नेतृत्व ग्रहण किया और शत्रुको अपनी पीठ दिखानेके लिये बाध्य किया! पुलकेशीने वनवासी और पुरीका घेरा डाला था। उन्होंने कौशल, मालव, गुजरात, महाराष्ट्र, लाट, कोङ्कण, काञ्ची, कलिङ्ग, आदि देशोंको विजय करके चालुक्य राज्यका विस्तार बढ़ाया था। उन्होंने अपने छोटे भाई विष्णुवर्द्धनको युवराजपद प्रदान करके उन्हें एक प्रांतका शासक नियत किया था। जिन्होंने ऐहोलेके पल्लवोंको पराजित करके वेङ्गीनगरपर अधिकार जमाया था। यही उनकी राजधानी थी।

शिलालेखमें लिखा है कि “ जिन राजाधिराज हर्षके पादपद्मोंमें सैकड़ों राजा नमते थे, उन महाप्रतापी हर्षराजको भी पुलकेशीने परास्त किया था। जब इन राजा पुलकेशी सत्याश्रयने अपने उत्साह, प्रभुत्व व मंत्रशक्तिसे सर्व निकटके देशोंको जीत लिया और परास्त राजाओंको विसर्जन कर दिया तथा देव और ब्राह्मणोंको आराधित किया एवं अपनी वातापी नगरीमें प्रवेश किया, तब उसने सर्व-जगतको

"ऐसे नगरके समान शासित किया जिसके चारों तरफ नृत्य करते हुये समुद्रके जलसे पूरित नील-खाई बह रही हो[1]।" इससे स्पष्ट है कि सत्याश्रयने सारे पश्चिमी और दक्षिणी भारतवर्षपर अधिकार प्राप्त कर लिया था। यह राजा वीर पराक्रमी होनेके साथ ही विद्यारसिक और विद्वानोंका आश्रयदाता था। वैसे तो कई जैन विद्वानोंने उनसे सम्मान प्राप्त किया था परन्तु कालिदास और भारविके समान कीर्ति प्राप्त दिगम्बर जैन पंडित रविकीर्ति उनके विशेष अनुग्रहपात्र थे। चीनी परिव्राजक हुएनसांगने उनकी राज्यसमृद्धि और रीतिनीतिका खूब अच्छा वर्णन लिखा था। कहते हैं कि फारसके बादशाह खुसरू (दूसरे) के साथ उनका आदान-प्रदानका व्यवहार था। तरह तरहकी भेंट लेकर दूत आते और जाते थे[2]। जिस तरह यह राजा सोमवंश मान्य लोकके रत्न और अनुपम वीर थे। 'समस्तभुवनाश्रय,' श्री पृथिवीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर-परम भट्टारक सत्याश्रय कुल तिलक चालुक्याभरणादि उनकी उपाधियां थीं।

आदित्यवर्मा, चंद्रादित्य और विक्रमादित्य।

सत्याश्रयके पश्चात् चालुक्य राज्यके अधिकारी आदित्यवर्मा हुये परन्तु पल्लवराजसे वह अपनी रक्षा नहीं कर सके। वह अपना सारा राज्य खो बैठे। केवल कोङ्कण प्रदेशपर शासन करनेके लिये बाध्य हुये[3]। उनके उत्तराधिकारी चन्द्रादित्य थे जिनकी महादेवीका नाम विजयमहादेवी था। चन्द्रादित्यने अपने पूर्वजोंके राज्यको पुनः प्राप्त करनेका असफल

---

१ बप्राजैस्मा०, पृष्ठ १००। २ हिविको ७।३२६। ३ पूर्व।

उद्योग किया था[1]। किन्तु उनके भाई विक्रमादित्य प्रथम उनकी इच्छाको पूर्ण करनेमें सफल हुये थे, उन्होंने पल्लवोंकी राजधानी काञ्चीपुर पर आक्रमण करके बदला लिया था—पल्लवराजका मस्तक अपने पगोंमें नमवाया था। देवशक्ति आदि सेन्द्रकवंशी राजाओंने उसके साथ युद्धमें भाग लिया था। वह उनके महासामन्त थे। पल्लवोंके अतिरिक्त पाण्ड्य, चोल, केरल, कलभ्रादि दक्षिणी राजवंशोंको भी उन्होंने परास्त किया था। यह राजा अपने शौर्य और भुजविक्रमके लिये प्रसिद्ध था। इनकी विशेष उपाधि 'रणरसिक' थी[2]।

विनयादित्य ।

विक्रमादित्यके पुत्रका नाम युद्धमल्ल अथवा विनयादित्य था। उनके पश्चात् वही राजा हुये। पल्लवोंको परास्त करनेके लिये उन्होंने काञ्चीपर आक्रमण किया था। और पल्लवपतिको वह कैदी बना लाये थे। निस्सन्देह विनयादित्य एक महापराक्रमी राजा थे। उन्होंने चोल, पाण्ड्य, चेरादि राजाओंको हराकर समस्त दक्षिण भारत पर अपना आधिपत्य जमाया था। उनकी वीर गाथाको सुनकर कवेर, पारसिक, सिंहल आदि राजाओंने उनकी आन मानी थी और उनकी सेनामें भेंटें भेजीं थीं। कहते हैं कि उत्तर भारतके राजाओंको भी निःशेष करके उन्होंने उनसे 'पालिध्वज' प्राप्त किया था।[3]

विजयादित्य ।

विनयादित्यके उत्तराधिकारी उनके पुत्र विजयादित्य हुये थे। उन्होंने दक्षिणभारतमें चालुक्योंके अवशेष शत्रुओंको परास्त किया था। साथ ही उत्तर भारतके राजाओंसे भी उन्होंने मोरचा लिया

१–मैकु० पृष्ठ ६३। २ हिंविको ७।३१६ व मैकु ६३। ३ मैकु० पृष्ठ ६३।

था। उनकी वीरताके सामने किसी भी राजाकी दाल नहीं गली थी। उन्हें उन्हें अपने प्राण बचानेके लाले पड़े थे। पालिध्वजके अतिरिक्त गंगा-यमुनाके चिह्न उन्होंने उनसे प्राप्त किये थे। वत्सराज अपने प्राणोंसे ही हाथ धो बैठे थे।

विक्रमादित्य द्वितीय। इनके पुत्र विक्रमादित्य द्वितीय उपरान्त चालुक्य राजसिंहासनके अधिकारी हुये। वह भी अपने पिताके समान प्रतापी राजा थे। उन्होंने तीन दफा पल्लवोंकी राजधानी काञ्चीपर आक्रमण करके नन्दिपोतवर्मका विनाश किया था। वह छत्र-ध्वजादि राजचिह्नोंका मोह छोड़कर अपने प्राण लेकर भाग गया था। विजयी विक्रमादित्यने काञ्चिपुरमें प्रवेश किया और नगरमें दीन दुखियोंको सुखी बनाया। नरसिंहपोतवर्माके बनाये हुये 'राजसिंहेश्वर' आदि मंदिरोंको स्वर्ण दान दिया था। पश्चात् पाण्डय, चोल, कलभ्र आदि राजाओंको भी नष्ट किया था। और दक्षिण समुद्रतटपर अपनी दिग्विजयका कीर्तिस्तंभ स्थापित किया था।

कीर्तिवर्म्मा द्वितीय। विक्रमादित्यके पश्चात् उनके पुत्र कीर्तिवर्म्मा द्वितीय राजगद्दीपर बैठे थे। उन्होंने भी चालुक्योंके चिर शत्रु पल्लवराजपर आक्रमण किया और सार्वभौमकी उपाधि प्राप्त की थी। यद्यपि दक्षिणमें यह विजयी हुये, परन्तु उत्तर पश्चिममें राष्ट्रकूट वंशके राजाओंने उन्हें हराया और विस्तृत चालुक्य राज्यपर अधिकार जमाया था। राष्ट्रकूट

१ मैकु० ६३-६४।

राजाओंने लगातार दोसौ वर्षों तक राज्य किया । इसके पश्चात् चालुक्य राज पुनः अभ्युदयको प्राप्त हुये ।[1]

किन्तु इस अन्तरालकालमें वेङ्गिके पूर्वीय चालुक्यगण अपना राज्यशासन करते रहनेमें सफल हुये थे । हर्ष

पूर्वीय चालुक्य । विजेता पुलकेशी सत्याश्रयके छोटे भाई कुब्ज विष्णुवर्द्धन ही प्राच्य चालुक्य वंशके आदि पुरुष थे । पहले वह अपने बड़े भाईकी आधीनतामें चालुक्य साम्राज्यके पूर्व भागका शासन करते थे; किंतु अन्तमें स्वाधीनरूपमें राज्य करने लगे थे । इस राज्य वंशमें अनेक प्रतापी राजा हुये, जो ११ वीं शताब्दि तक इस वंशकी कीर्तिको जीवित रख सके थे ।[2]

चालुक्य वंशके उन प्रारंभिक और पूर्वीय राजाओंमें यद्यपि अधिकांश राजा वैदिक धर्मानुयायी थे, परन्तु

चालुक्य नरेश और जैनधर्म । उन्होंने आर्य-मर्यादाके अनुकूल राजत्वको खूब निवाहा था—वे अन्य धर्मोंके प्रति भी समुदार थे[3] । अनेक चालुक्य राजाओंने जैन धर्मको आश्रय दिया था । बादामीके प्रारम्भिक चालुक्य राजाओंके समयमें तो जैन धर्मका विशेष उत्कर्ष हुआ था । श्रवणबेलगोलके एक

---

१ मैकु० पृ० ६४ । २ हिंविको० ।

3-" We get many glimpses of the Jain religion in inscriptions relating to the Chalukyas, which distinctly reveal their patronage of that faith. "

—Vaidya Medieaval Hindu India, I. 273-4.

4-" Jainism came into prominence under the Early Chalukyas of Badami. " —Early History of Deccan. I 59.

शिलालेखमें श्री गुणभद्राचार्यके विषयमें निम्नलिखित उल्लेख मिलता है –[1]

मलधारिमुनीन्द्रोऽसौ गुणचन्द्राभिधानकः ।
बलिपुरे मल्लिकामोदशांतीशचरणार्चकः ॥ २० ॥

इसमें उन्हें बलिपुरमें मल्लिकामोद शांतीशका चरणार्चक कहा गया है । चालुक्य नरेश जयसिंह प्रथमकी एक उपाधि मल्लिकामोद है । इसी कारण विद्वानोंका यह अनुमान है कि उपर्युक्त श्लोकमें जयसिंह प्रथमका उल्लेख है[2] । उनके द्वारा गुणचन्द्राचार्यका आदर होना संभव है ।

बलिपुरके शांतीश्वर भगवानकी प्रतिमासे उनका सम्बन्ध था । यही कारण है कि उस प्रतिमाको 'मल्लिकामोद शांतीश' कहा है । संभव है, शांतीश्वरका वह मन्दिर नृप जयसिंहके आश्रयमें बना हो । जयसिंहके पुत्र रणराग और पौत्र पुलकेशी भी जैनोंके आश्रयदाता थे । रणरागके समय दुर्गशक्तिने पुलिगेरे (लक्ष्मेश्वर)के जिनालयको दान दिया था । दुर्गशक्ति नागवंशकी शाखा सेन्द्रकवुलमें हुये प्रसिद्ध राजा विजयशक्तिका पौत्र और कुन्दशक्तिका पुत्र था । सेन्द्रकवंशके राजा चालुक्यके सहायक सामन्त और जिनेन्द्रभगवानके भक्त थे[3] । रणराग देवसम प्रभावशाली और पृथ्वीके अकेले स्वामी थे[4] । उन्होंने अपने सामन्तके इस दानको सराहा था । चालुक्य नरेश पुलकेशीने स्वयं जैनोंके आलक्तनगरमें स्थित जिनालयको दान दिया था[5] । उनका यह दान जैन धर्मके प्रति उनकी हार्दिक भक्तिका द्योतक है । जैन

---

१ जैशिसं०, पृष्ठ ११८, २ जैमाइ०, पृ० ६१, ३ बम्राजैस्मा०, पृ० १२४, ४ 'दिव्यानुभावो जगदेकनाथ'। ५ जैसा इ०, पृ० ६१,

पंडित रविकीर्तिने उन्हें धर्म अर्थ और कामवर्गकी साधनामें अद्वितीय बताया है[1]। इनके उत्तराधिकारी **कीर्तिवर्म्मा** भी जैनोंपर सदय हुये थे और उन्होंने जैन मुनियोंको दान दिया था[2]। यह पूरली विरक्त महा योद्धा थे[3]। कीर्तिवर्माके पुत्र **पुलकेशी द्वितीय** भी जैन गुरुओंके भक्त थे। उनके अध्यात्म गुरु जैन निर्वद्य पंडित थे। जिनका अपरनाम उदयदेव था। पुलकेशिने इन जैन पंडितको दान भी दिया था। उदयदेव मूलसंघ, देवगणके गुरु पूज्यपादके श्रावक शिष्य थे[4]। पुलकेशिके राज्यमें आर्यपुर (आय्यवले=एहोले) नामका एक प्रधान नगर था। उस नगरमें पुलकेशिके विशेष कृपापात्र जैन पंडित रविकीर्तिने एक सुंदर जिनमन्दिर निर्माण कराया था, जो अब 'मेघूतीका मंदिर' कहलाता है। इस मंदिरकी प्रशस्तिके लेखक स्वयं रविकीर्ति हैं, जिसमें लिखा है कि उस रविकीर्तिने सत्याश्रयके महान प्रसादको प्राप्त किया था और अपनी कवितासे कालिदास और भैरविके यशको प्राप्त किया था। यह रविकीर्ति पूर्ण विवेकी और जैन धर्मके परम भक्त थे। शक सं० ५०६ में उन्होंने उपर्युक्त मंदिर बनवाकर तैयार किया था। इसकी गुफामें भ० महावीरकी पर्ल्यंकासन प्रतिमा पूज्यनीय है। साथमें और भी प्रतिमायें हैं[5]। गर्ज यह कि पुलकेशिके राजत्वमें जैनोंका सन्मान विशेष हुआ था।

चालुक्यनरेश विजयादित्यके पुत्र **विक्रमादित्यके** हृदयमें भी

१ यत्त्रिवर्गपदवीमल क्षितौ नानुगन्तुमधुनापि राजकम्'।
२ जैसाइं०, पृ० ६१। (Dharwar Inscriptiion)
३ 'परदारनिवृत्तचित्तवृत्तेरपि धीर्यस्य रिपुश्रियानुकृष्टा'।
४ जैसाइ०, पृ० ६२-६३। ५ बंप्राजस्मा०, पृ० ८९-९५।

जैनधर्मके प्रति अनुराग था । उनकी दानशीलतासे जैनायतन अछूते न बचे थे । उन्होंने एक जीर्ण शीर्ण जिनमंदिरका जीर्णोद्धार कराया था । भक्तवत्सल जैनी उनके महान व्यक्तित्वमे धर्मकी प्रतिभाका आभास पाते थे और उसकी प्रेरणासे वह उनके पास धर्मोद्योतकी बातायें लिये चले आते थे । नरेश विक्रमादित्य उन्हें निराश नहीं करते थे । बाहु-बलि श्रेष्ठीने आकर उनसे निवेदन किया कि पुलिकेरेका "सखतीर्थ जिनालय और श्वेत जिनालयकी अवस्था सोचनीय है । इस बातको सुनते ही उन नरेशने आज्ञा दी कि दोनों मदिरोंका जीर्णोद्धार कराया जाय और उनका जीर्णोद्धार कराया भी गया[1] । इस अवसर पर श्री रामचद्राचार्यके गृहस्थ शिष्य विजयदेव पंडिताचार्यको तथा देवगणके सिद्धात पारगामी श्री देवेन्द्र भट्टारकके प्रशिष्य जयदेव पंडितको दान दिया गया । इस प्रकार प्रारम्भिक चालुक्य नरेशोंका आश्रय पाकर जैन धर्म समृद्धिशाली रहा । ऐसा मालूम होता है कि इस समय जैन संघमे कोई परिवर्तन हुआ था, जिसके अनुसार दिगम्बर आचार्योंके स्थान पर गृहस्थ पंडिताचार्य नियुक्त हुये थे, जो मदिरोंके लिये दान ग्रहण करते थे । संभव है कि मुनिजनोंमे शिथिलाचार अथवा आड-म्बरकी आशंकाको लक्ष्य करके तत्कालीन चालुक्य राज्यस्थ दिगम्बर जैन संघने यह नियम बनाया हो कि दिगम्बराचार्य मदिरोंके लिये भूमि आदिका दान न स्वयं ग्रहण करें और न उसके प्रबंधादिमें अपने अमूल्य समयको बरबाद करें, बल्कि यह काम उनके गृहस्थ शिष्योंके आधीन रहे—वही दान लें और उसकी व्यवस्था भी रखें ।

---

१ जैमा इ०, पृ० ६३ ।

पूर्वीय चालुक्य और जैनधर्म।

चालुक्योंकी पूर्वीय शाखाके राजा कंठिकविजयादित्यको राष्ट्रकूटोंने परास्त करके अपना कैदी बना लिया था। भाग्यवशात् विजयादित्य राष्ट्रकूट कारावाससे भाग निकला। वह पुलिगेरे (लक्ष्मेश्वर)[1] नामक स्थानपर पहुंचा, जहां चालुक्य वंशके ही राजा शासनाधिकारी थे। उस समय वड्डिगका पुत्र चालुक्य अरिकेसरी द्वितीय राजसिंहासनारूढ़ थे। यद्यपि अरिकेसरी राष्ट्रकूट राजाओंके सामन्त थे, परन्तु इस बातकी परवाह न करके उन्होंने विजयादित्यको शरणमें लिया। 'शरणागतकी रक्षा करना राजत्वको निभाना है', यह बात वह खूब जानते थे। इसीलिये उन्होंने राष्ट्रकूट राजा गोविन्द चतुर्थके रोपको मोल लेकर इस आदर्शको निभाया। यह वीर नरेश अपने पूर्वजोंके समान जैनधर्मका भक्त था। उनके सेनापति और राजमंत्री प्रसिद्ध जैनकवि पम्प थे, जिन्होंने सन् ९४१ ई० में 'पम्प-रामायण' रची थी।[3] पम्पने लिखा है कि 'अरिकेसरी शरणागतकी रक्षाके लिये शक्तिके आगार थे। उन्होंने विजयादित्यको अभय बनाया था।' कवि पम्पका जन्म सन् ९०२ ई० में वेङ्गि नगरके एक पुरोहितके घर हुआ था। वह पुरोहित जैनधर्ममें दीक्षित हुये थे। कवि पम्पने 'आदिपुराण' और 'भारत' नामक ग्रन्थ भी रचे थे। कन्नड़ साहित्यमें यह रचनायें अद्वितीय हैं[4]। अरिकेसरीके

---

१ लक्ष्मेश्वर बम्बई प्रांतकी मिरज रियासतमें है। २ ईहिक्वा०, भा० ११ पृ० ३४। ३ जैसाइं पृ० ६४। ४ एइं०, १३।-३२९ हिकलि० पृ० ३०।

आश्रयमें रहकर कवि पम्प सरस्वतीदेवीकी सरस आराधना करनेमें सफल हुये थे। उनकी गणना कन्नड़-साहित्यके तीन प्रमुख कवियोंमें है।

निमलादित्य।

चालुक्योंकी इस शाखामें यशोवर्मका पुत्र विमलादित्य नामक राजा भी जैन धर्मका भक्त था। गंगवंशी राजकुमार चाकिराजके उपदेशसे उन्होंने शनीश्चर ग्रहका दोप निवारण करनेके लिये एक जिनालयके लिये दान दिया था[1]।

राजाओंका जैन धर्म-प्रेम।

पूर्वीय चालुक्यवंशी अवशेप राजाओंपर भी जैन धर्मका महत्व अपना प्रभाव रखता था, यद्यपि उनमें प्राय सब पूर्वीय चालुक्योंके अन्य ही राजा वैदिक धर्मानुयायी थे। विष्णुवर्द्धन तृतीयने शक सं० ६८४में जैन गुरु श्री कलिभद्राचार्यको भूमिदान दिया था[2]। यह एक उल्लेख ही उनकी समुदाय वृत्तिका द्योतक है। उनके पश्चात् चालुक्य नरेश अम्म द्वितीयने भी जैनियोंको अपनाया था और जैन मंदिरोंको दान दिया था[3]। इन राजाओंके अनेक राज्याधिकारी भी जैनी थे। दुर्गराज नामक एक जैनी राज्याधिकारीने आकर नृप अम्मसे निवेदन किया कि वह धर्मपुरीके निकट अवस्थित जिन मंदिरके लिये भूमिदान देवें। नृप अम्मने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार की और उस जिन मंदिरके निर्वाहके लिये उन्होंने मडिय-

१ जमाइ०, पृ० ६४ 2 Ibid. P 67. 3 Ibid.

पण्डि नामक ग्राम दान कर दिया[1]! इसीप्रकार विजयवाटिका (बेजवाड़ा) में अवस्थित जिनमंदिरोंके लिये भी उन्होंने दान दिया था। उनके दरबारमें पट्टवर्द्धिनी कुलकी चामेक नामक एक नृत्यकारिणी प्रसिद्ध कलाविद् थी। सौभाग्यवश उसे जैनधर्मकी निकटता प्राप्त हुई थी और उसने जैनधर्मकी दीक्षा लेकर श्रावकके व्रत ग्रहण किये थे। नृप अम्मको वह अत्यन्त प्रिय थी। उसका सौन्दर्य अपूर्व था। वह जैनधर्मरूपी सागरके पूर्ण विकासके लिये कारणभूत थी। वह दया, दान आदि गुणोंकी आगार थी और विद्वज्जनकी संगतिमें उसे रस आता था। उसने जैनधर्मोद्योतके लिये 'सर्व लोकाश्रय-जिनभवन' नामका एक अतीव सुन्दर मंदिर बनवाया और उसके निर्वाहके लिये जैनाचार्य श्री अर्हनन्दिको उसने भूमिदान दिया। चामेक इस सुवर्ण अवसरपर नृप अम्मके पास पहुंची और उनसे बोली कि वह भी अपना आश्रय उस जिनभवनको प्रदान करें। नृप अम्मने उसकी प्रार्थना सहर्ष स्वीकारी और अपनी उपाधि 'सर्वलोका-श्रय' को मंदिरके नामके साथ जोडकर अटूट भक्तिका परिचय दिया। श्रावकी चामेकने उस जिनालयके साथ एक आहार दानशाला भी स्थापित की, जिससे उसकी प्रसिद्धि विशेष हुई। वह जैन संघके अद्दकलिगच्छ बलहरिगणसे सम्बन्धित अर्हनन्दिकी परम उपासिका थी[2]।

चामेक और अम्म द्वि०।

नृप अम्म द्वितीय एक महान् शासक थे। आठ वर्षकी नन्हीं

---

१ इंहिक्वा०, भा० ११ पृ० ४०। २ जैसाइं०, पृ० ६८ व हिका०, भा० ११ पृ० ४०।

उम्रमें ही उन्हें युवराज पद नसीब हुआ था।

अम्म द्वितीय। सन् ९४५ ई०में जब वह बारह वर्षके हुये, तब वह चालुक्य राजसिंहासन पर विराजमान हुये। उनका राज्याभिषेक हुआ। वह वेङ्गि और कलिङ्गके शासक कहलाये। शान्तिपूर्वक वह राज्य शासन करने लगे। किन्तु सन् ९५६ ई०में राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीयके साथ बाडपने चालुक्य राज्यपर आक्रमण कर दिया। अम्म इस समय कलिङ्ग पर थे। वह राष्ट्रकूट आक्रमणके सामने अपने पैर जमाये न रहे! बाडपने वेङ्गिके राजसिंहासनको हथिया लिया। अम्मके लिये यह घटना असह्य थी। वह क्रोधावेशमें बदला चुकानेकी नीयतसे कृष्णका मुकाबिला करनेके लिये आगे बढ़े, परन्तु वह उसमें असफल रहे। हठात कलिङ्गमें ही रहकर उन्होंने धर्मनीतिके अनुसार चौदह वर्षों तक शासन किया। जैनधर्मकी प्रभावनाके लिये उन्होंने अनेक उल्लेखनीय कार्य किये थे, जिनका वर्णन पहले लिखा जा चुका है[1]।

जैन वीर दुर्गराज। इन्हीं अम्म नरेशके सेनापति जैनधर्मके अनुयायी वीरवर दुर्गराज थे। वह उस समयके प्रख्यात् योद्धा वीर पाण्डुरंगके कुलको सुशोभित करते थे। उनके पिताका नाम विजयादित्य था और निरवद्य धवल उनके बाबा थे। निस्सन्देह उनका वंश वीरोंकी कीर्तिगरिमाका आगार था। इन नरपुंगवोंका आश्रय पाकर जैनधर्मकी पताका ऊँची फहरा रही थी। दुर्गराजके विषयमें कहा गया है कि

---

१ इण्डिका०, भा० ११ पृ० ३८ ४३।

धार्मिक उदारता और उसका प्रभाव। सुखसमृद्धि और सखाभाव भी स्वयं सिरज-जाते हैं। निस्सन्देह चालुक्य राजत्वकालमें अनेक जैनी जिनमंदिरों और दानशालाओंमें रुपया खर्च करते हुये मिलते हैं। यह घटना देशके सुखसमृद्धिशाली होनेके प्रमाण हैं। धार्मिक उदारता राजा और प्रजा दोनोंके हृदयोंमें घर किये हुये मिलते हैं। धर्म और सम्प्रदाय भेदकी ओर ध्यान न देकर उस समय हरकोई एक दूसरेका सहायक होता था। श्रावकी चामेकम्माने एक आहारदानशाला स्थापित की थी। उस दानशालामें मुनि—आर्यिका आदि सत्पात्रोंको दान देनेकी व्यवस्था होनेके साथ ही जैनेतर सब ही लोगोंको करुणादान दिया जाता था। जैनधर्मकी आराधना प्रत्येक मानव कर सकता था। जहां एक ब्राह्मण जैनधर्मकी दीक्षा ग्रहण करते हुये दिखाई पड़ता है, वहीं एक नृत्यकारिणी भी श्रावकके व्रत ग्रहण करती हुई मिलती है। जैनसंघमें इन नवदीक्षित जैनियोंको गौरवशाली पद प्राप्त होता था, यह बात कवि पम्पके उदाहरणसे स्पष्ट है । जैन धर्मकी इस उदार वृत्तिका प्रभाव संभवतः तत्कालीन वैदिक धर्मपर भी पड़ा था। यही कारण है कि एक तुरक-यवन जातिका राजमंत्री तब 'पुरोहित नारायण' के नामसे उल्लेखित हुआ मिलता हैं। जैनधर्मकी सार्वभौमिकता इन उल्लेखोंसे स्पष्ट है।

प्रारंभिक चालुक्योंका वंशवृक्ष।

जयसिंह
- राजसिंह रणराग
  - १. पुलिकेशी प्रथम सत्याश्रय (५५० ई०)
    - . कीर्तिवर्मा प्रथम (५६६–५९७)
      - ४. पुलकेशी द्वि० सत्याश्रय (६०९–६४२)
        - आदित्यवर्मा
        - चन्द्रादित्य
        - ५ विक्रमादित्य प्रथम (६५५–६८०)
          - ६. विनयादित्य राजाश्रय (६८०–६९६)
            - ७ विजयादित्य (६९६–७३३)
              - ८ विक्रमादित्य द्वि० (७३३–७४६)
                - ९ कीर्तिवर्मा द्वि० (७४६–७५७)
      - कुब्ज–विष्णुवर्द्धन (पूर्वी शाखा स्थापी)
    - ३. मंगलीश (५९७–६०८)
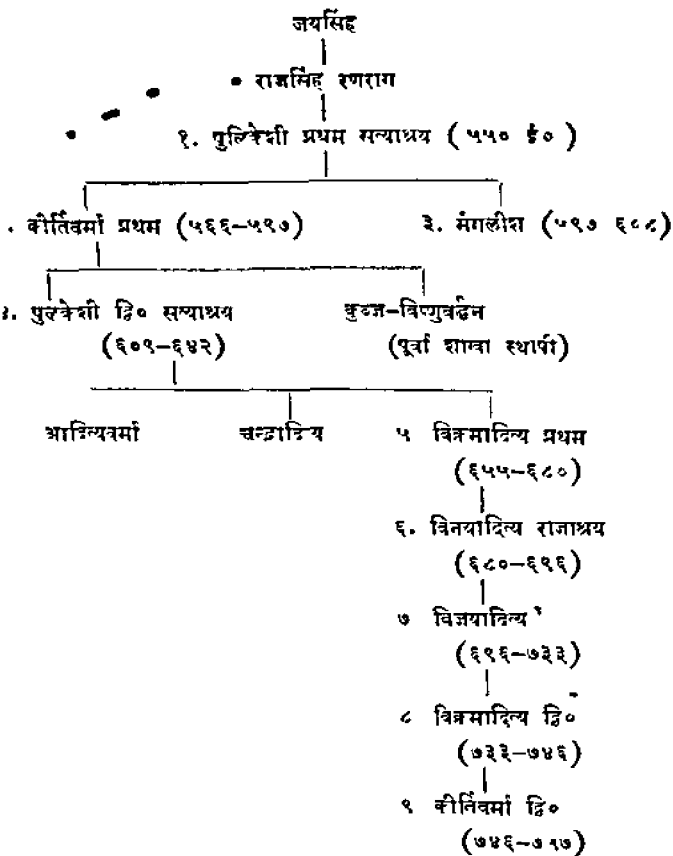
दक्षिण भारतका मध्यकालीन इतिहास।

(२)

राष्ट्रकूट-काल।

(ई० ७वीं से १३ वी शताब्दि)

राष्ट्रकूट राजवंश ।

राष्ट्रकूट कुल।

दक्षिणापथ प्रदेशपर राज्य करनेवाले राजाओंमें राष्ट्रकूटवंशके राजा विशेष उल्लेखनीय हैं। उनका राज्य एक समय उत्तर भारतमें कन्नौज तक और दक्षिण भारतमें मैसूर तक फैला हुआ था। राष्ट्रकूट वंशके शिलालेखोंमें उसे एक उत्तम और संसारसे प्रसिद्ध राजकुल कहा है[1]। राष्ट्रकूट कुलका उल्लेख रट्ट, राष्ट्रवर्य और राष्ट्रोर (=राठोर) नामोंसे भी शिलालेखादिमें हुआ मिलता है[2]। मौर्य सम्राट् अशोकके कई लेखोंमें राष्ट्रिक अथवा रष्ट्रिक जातिके राजाओंका उल्लेख हुआ है। यह लोग मध्य भारतमें महाराष्ट्र और बहाड प्रदेशपर राज्याधिकारी

---

१. दन्ति दुर्गके शक सं० ६७५ के सामनगढ़वाले शिलालेखमें लिखा है कि 'उत्तम राष्ट्रकूट वंशमें सुमेरुके समान इन्द्रराज नामका राजा हुआ।' (सद्राष्ट्रकूटकनकाद्रिरिवेन्द्रराज !) इसी राजाके इलोरावाले दशावतार गुफालेखमें राष्ट्रकूट कुलको पृथ्वीपर प्रसिद्ध लिखा है। (न वेत्ति खलु कः क्षितौ प्रकट राष्ट्रकूटान्वयं।)-भाप्रारा० ३।१।

२. अमोघवर्ष प्रथमके लेखमें, जो सिरूरसे मिला है, उसे 'रट्टवंशोद्भव' लिखा है। (IA., XII, २२०) नवसारी व देवलीके ताम्रपत्रोंमें भी इस वंशका नाम 'रट्ट' लिखा है। J B B R A S XVIII, 219-266) मेवाडके धोसुंडी गांवके लेखमें इस वंशका नाम 'राष्ट्रवर्य' लिखा है। (भाप्रारा०, ३।३).

नाडोलके ताम्रपत्रमें इसको 'राष्ट्रोर' वंशके नामसे लिखा है। (Ibid)

राष्ट्रकूटोंका वंशवृक्ष ।

दन्तिवर्मा (६५०-६७० ई०)
|
इन्द्रराज प्रथम (६७०-६९०)
|
गोविंदराज प्रथम (६९०-७१०)
|
कर्कराज प्रथम (७१०-७३०)
|
इन्द्रराज द्वि० (७३०-७४५)
|
दन्तिदुर्ग द्वि० (७४५-७५६)
|
कृष्णराज प्रथम (७५६-७७५)
|
गोविन्दराज द्वि० (७७०-७७२)
|
ध्रुवराज (७८० ई०)
|
गोविंदराज तृतीय
|
अमोघवर्ष प्रथम (८२१ ई०)
|
कृष्णराज द्वि० (९०० ई०)
|
इन्द्रराज तृ० (९१५ ई०)

अमोघवर्ष द्वि० | गोविंद चतुर्थ
|
अमोघवर्ष तृ०
|
कृष्णराज तृ० (९४०)
|
अमोघवर्ष चतुर्थ (९६८ ई०
|

थे। जब इन रठिक (रट्ट) राजाओंने श्रेष्ठता प्राप्त करली तब ही यह राष्ट्रकूट नामसे प्रसिद्ध हो गये।

कारणतः अनुमान किया जाता है कि अशोकके समयमें जो रठिक (राष्ट्रिक) क्षत्रिय सामन्तरूपमें मध्यभारतमें किन्हीं प्रदेशों पर शासनाधिकारी थे, उन्हींके उत्तराधिकारी उपरान्त मलखेड़के राष्ट्रकूट हैं।

उत्पत्ति।

राष्ट्रकूटोंकी खानदानी उपाधि 'लट्टलूराधीश्वर' इसही बातकी द्योतक है। मूलमें यह रट्ट अथवा रठिक क्षत्रिय लट्टलूरमें ही राज्याधिकारी थे। वहांसे इनके पूर्वज एलिचपुरमें आकर शासनाधिकारी हुये प्रतीत होते हैं। इलिचपुरके राष्ट्रिक राजा नन्नराजसे मलखेडके शाही राष्ट्रकूट राजा दन्तिदुर्गका सम्बन्ध होना संभव है[2]। उपरान्तके लेखोंमें राष्ट्रकूटोंको यद्यपि यदुवंशी लिखा है, परन्तु यह ठीक नहीं है[3]। उनका

---

1 The Rashtrakutas and Their Times, by A S Altekar — (=शीरा०) pp 19-25

2 "In my opinion the various Ratta or Rashtrakuta families of our period were the descendants of some of the Ratnika families that were ruling over small places in the feudatory capacity since the time of Asoka"

—Altekar शीरा० पृ० १९

लट्टलूर मध्यप्रदेशके बिलासपुर जिलेका रतनपुर अनुमान किया गया था, परन्तु मलखेडके राष्ट्रकूटोंकी मातृभाषा कनडी होनेके कारण उपरान्त वह हैदराबाद स्टेटमें बीदर जिलेका लातूर ग्राम अनुमान किया गया है। नन्नराजकी राजधानी इलिचपुर उसके नजदीक बताई जाती है।

३ शीरा० पृ० १९ व माप्रारा० ३५।

मूल अर्थात् वंशका नाम 'रट्ट' ही था। 'राष्ट्रकूट' उनका प्रतिष्ठित और संस्कृत नाम है[1]।

अतः यह स्पष्ट है कि राष्ट्रकूटवंश एक अति प्राचीन और प्रतिष्ठित राजकुल है, जिसका उल्लेख अशोकके धर्मलेखोंमें भी मिलता है।

मुल्ताई और तिवरखेड़की प्रशस्तियोंसे प्रगट है कि इलिचपुरमें जिन राष्ट्रकूट राजाओंने शासन किया था, उनकी नामावली निम्नप्रकार है –

प्रमुख पूर्वज।

(१) दुर्गराज, सन् ५७०–५९० ई०, (२) गोविंदराज, सन् ५९०–६१० ई०, (३) स्वामिकराज, सन् ६१०–६२० ई०, और (४) नन्नराज, सन् ६३१। मान्यखेटके राष्ट्रकूटवंशमें प्रमुख और प्रथम दंतिदुर्ग अथवा दंतिवर्मन मिलते हैं। दंतिदुर्गका नन्नराजके साथ कैसा सम्बन्ध था, यह अज्ञात है। दंतिदुर्गके पिता इन्द्र थे, जिन्होंने एक चालुक्य राजकुमारीसे राक्षस विवाह किया था। वह एलिचपुर अथवा अचलपुरमें शासन करते थे[2]।

दंतिवर्मा।

मान्यखेट (मलखेड)के प्रसिद्ध राष्ट्रकूट राजाओंका प्रारम्भ दंतिवर्मासे होता है। इन्होंने सन् ६५० से ६७० ई० तक शासन किया था। दंतिवर्माने चालुक्यनरेश कीर्तिवर्मासे राष्ट्रकूटोंके उस दक्षिणी राज्यका बहुभाग वापिस छीन लिया था जिसे सोलंकी जय-

---

1-"......While Rashtrakūta was the formal appellation, which it was customary to apply to the Kings of Malkhed in ornate language,—the real practical form of the family name was Ratta."—Fleet. EI. VIII, pp. 220-88. २ [illegible] पृष्ठ ८-९।

सिंहने जीत लिया था। इस विजयोपलक्षमें ही राष्ट्रकूटोंने 'वल्लभराज' उपाधि धारण की थी[1]। मुसलमान लेखकोंने इसी कारण राष्ट्रकूट राजाओंका उल्लेख 'बल्हरा' (वल्लभराय) नामसे किया है[2]।

इन्द्रराज प्रथम। इन्द्रराज प्रथम दंतिवर्माका पुत्र और उत्तराधिकारी था। इसका अपरनाम पृच्छकराज था और इसने सन् ६७० से ६९० ई० तक शासन किया था। इन्द्रका पुत्र गोविंदराज (प्रथम) था। वही उसके बाद राज्यका स्वामी हुआ था।

गोविंदराज व कर्कराज। इसका राज्यकाल सन् ६९० से ७१० ई० है[3]। चालुक्योंमें पुल्केशी (द्वितीय)के राज्यारोहणके समय गड़बड़ देखकर अन्य राजाओंके साथ गोविंदराजने भी उन पर आक्रमण किया था, परन्तु उनकी आपसमें मित्रता होगई थी। गोविंदका उत्तराधिकारी उसका पुत्र कर्क (प्रथम) वैदिक मतानुयायी था। इसके दो पुत्र इन्द्रराज और कृष्णराज थे[4]।

इन्द्रराज द्वि० व दंतिवर्मा द्वि०। कर्कराजका बड़ा पुत्र इन्द्रराज उसके बाद राष्ट्रकूट राजसिंहासन पर बैठा था और उसने सन् ७२०–७४५ ई० तक राज्य किया था। इसकी रानी चालुक्यवंशकी राजकुमारी थी। दन्तिवर्मा (दन्तिदुर्ग द्वितीय) इन्द्रराजका पुत्र था और

१–भाप्राग० भा० २ पृ० ३२ २–सुलेमान 'सिल्सिलातुत्तवारीख' व इब्न खुर्दाद 'किताबुल ममालिक वउल ममालिक' देखो। ३–भाप्रारा० २–१५, ३–दीं०, पृ० १०, ४ भाप्रारा० २ पृ० १०[illegible]

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६॥	अरौल	प्राथमिक स्कूल	×
६॥	सराय मीरा कन्नौज स्टेशन,	स्कूल का बरामदा	
४॥	जलालपुर पडवारा	मनिलाल ब्राह्मण का बगीचा	
६॥	गुरसहाय गंज	रामचन्द्रजी का मन्दिर	
४॥	सराय प्रयाग	माध्यमिक विद्यालय	दि० १
१०	छिपरामऊ	धर्मशाला	
५	प्रेमपुर	स्कूल	
८	बेवर	धर्मशाला	
६	परतापुर	स्कूल	
६॥	ललुपुरा	चक्कीवालों के बरामदे में	
५॥	मैनपुरी	दयालबाग	दि० १००
८॥	बेथराई	भूपसिंह ठाकुर के मकान पर	×
६॥	घिरोर	जैन दिगम्बर मन्दिर	दि० १२
६	आजमाबाद	जैन दिगम्बर मन्दिर	दि० १०
८	शिकोवाबाद	सोनी की धर्मशाला	दि० ५०
७	मक्खनपुर	ग्राम पंचायत का मकान	×
६	फिरोजाबाद	धर्मशाला	दि० १००
१२	एक ग्राम	धर्मशाला	×
६	गोबर चौकी	धर्मशाला	
११	आगरा	मानपाड़ा स्थानक	३५
१॥	लोहा मण्डी	जैन स्थानक	५०

आगरा से ३२ मील भरतपुर

८	अंगुठी	नेमचन्दजी के मकान पर	२
८	अछनेरा	बम्बई वालों की धर्मशाला	२

..ोल	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैनों
४	रामोसर	एक भाई के मकान पर	७
५	देशनोक	जैन उपाश्रय	२२५
६	प्याऊ	प्याऊ	
५	उदेरामसर	स्कूल	५०
७	बीकानेर	सेठिया का मकान	३००

बीकानेर से १७१ मील जोधपुर

३	भिनासर	सेठ मूलचन्दजी हीरालालजी लूणिया के उपाश्रय में	२००
३	उदेरामसर	एक भाई के मकान पर	५०
६	सुजासर	प्याऊ	
३	प्याऊ	प्याऊ	
१	देशनोक	जवाहिर मण्डल	२२५
४	रासीसर	केसरीमलजी चोरड़िया के मकान पर	७
५	भामतसर	प्याऊ	
७	नोखा	सरकारी नोहरा	२०
३	नोखा मण्डी	उपाश्रय	४०
४	क्वाटर	क्वाटर	
६	बडारोडा	चम्पालालजी बाँठिया के मकान पर	४
६	ढाणी	पेड़ के नीचे	×
६	गोगोलाव	जैन उपाश्रय	५०
६	नागोर	लोढाजी का उपाश्रय	१५०
४	स्टेशन	मन्दिर	
९	सुडेरा	महेश्वरी के मकान पर	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	फुलेरा जँक्शन	धर्मशाला	+
५	सांभर	श्वे० जैन मन्दिर	१०
५	गुढ़ा	धर्मशाला	
१०	कुचामण स्टेशन	धर्मशाला	दि० १४
५	मीठड़ी	नोहरे में ठहरे	
४	नारायणपुरा स्टेशन	धर्मशाला	१
७	कुचामण सिटी	रियां वाले सेठ तेजराजजी मुणोत का मकान	श्वे० ७ दि० अनेक
११	रमीदपुरा	धर्मशाला	+
१४	डिडवाना	मेसरी भवन	३० मा० १०० तें.
७	कोलिया	प्याऊ	२ तें.
७	केराव	ठाकुर मन्दिर	
७	कटोती	रामदेवजी का मन्दिर	
६	जायल	मेसरियों की बगीची	श्वे. ३०० मेसरी
१०॥	फरड़ोद	जैन स्थानक	११
१०	रोल	प्याऊ	
१२	नागोर	उपाश्रय	३५०

नागोर से ७३ मील बीकानेर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	गोगोलाव	जैन उपाश्रय	५०
७।	अलाय	पचायती नोहरा	४०
८॥	चीली	स्टेशन पर क्वाटर	
८	नोखामण्डी	जैन उपाश्रय	४०
४	नोखा	पंचायती नोहरा	२०
६	पारवो	धर्मशाला	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	सतलाना	महेश्वरी के मकान पर	८ महेश्वरी
७	भाचुन्डा	उपाश्रय	५
५	दुदाडा	पचायती नोहरा	१२५
८	अजीत	खिमराज हुसाजी की धर्मशाला	४०
२	भलरो को वाडो	एक भाई के मकान पर	१५
२	कोटडी	जैन स्थानक	१५
६	सेवाली	सेठ रतनलालजी चुन्नीलालजी के मकान पर	१
५	खडप	जैन स्थानक	१०
५	राखी	सेठ आईदानजी लूकड़ के मकान पर	२०
६	करमावास	जैन उपाश्रय	८०
३	समदडी	जैन उपाश्रय	१६०
६	जेठुन्तरी	एक भाई के मकान पर	८
३	पारलु	बादरमलजी के मकान पर	२०
५॥	जातिया	सावन्तसिंहजी ठाकुर के मकान पर	
६॥	बालोतरा	अन्याव का उपाश्रय २०१३ चौमासा	५००

बालोतरा से १२२ मील घाणेराव सादडी

६	मेवानगर नाकोडा	जैन धर्मशाला	
४	जसोल	तपागच्छ का उपाश्रय	ते १०० १ स्था
६	आसोतरा	दुलीचन्दजी के मकान पर	१५
६	कुसीप	एक भाई के मकान पर	५
४	गढसिवाना	ढुंढिया का उपाश्रय	१५०
८	मोकलसर	उपाश्रय	४०
६	वालवाडा	जैन धर्मशाला	५०

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	प्याऊ	प्याऊ	
६	कुचेरा	उपाश्रय	१००
४	प्याऊ	प्याऊ	
५	खजवाना	उपाश्रय	१५
६	रूण	भेरुजी के स्थान पर	३०
६	नोखा	उपाश्रय	४०
६	हर सोलाव	उपाश्रय	४५
६	रजलाणी	उपाश्रय	२५
४	नारसर	मंदिर पर ठहरे	२
४	भोपालगढ़	श्री जैन रत्न विद्यालय	४०
६	हीरा देसर	मंदिर पर ठहरे	४
५	विराणी	मंदिर पर ठहरे	२
६	सेवकी	मंदिर पर ठहरे	३
६	दईकडो	चपालालजी टाटिया के मकान पर	६
६	जाजिया	मंदिर पर ठहरे	२
३	बनाडा	स्टेशन	
६	जोधपुर	सिंहपोल	११००

जोधपुर से ६८ मील बालोतरा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
३	महामंदिर	जैन उपाश्रय	४०
३	सरदारपुरा	कांकरिया बिल्डिंग	५०
४	वासनी स्टेशन	नीम के पेड़ के नीचे	
६	सालावास	नोहरे में ठहरे	४०
८	लूणी	जैन धर्मशाला	१२

उदयपुर से ७६॥ मील चितोड़गढ़

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१	आयड	सेठ केशुलालजी ताकड़िया के मकान पर	
४॥	देवारी	एक भाई के मकान पर	
५	डबोली	जीतमलजी सिंघवी के मकान पर	
५	उबोक	एक भाई के मकान पर	
५	भटेवर	मंदिर पर ठहरे	
६	मेनार	स्कूल पर ठहरे	
३	थानो	मंदिर पर ठहरे	
१०	मंगलवाड़	पचायती नोहरे की दुकाने	
६॥	भादसोड़ा	पचायती नोहरे में ठहरे	
१२	नाहरगढ़	एक भाई की दुकान पर	
१०॥	सेती	सेठ फतेलालजी भडकत्या के मकान पर	
४	चितोड़गढ़	श्री जैन चतुर्थ वृद्धाश्रम	

चितोड़गढ़ से १८६ मील बड़ी सादड़ी होकर रतलाम

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१॥	तलेटी	उपाश्रय
६	घरथावली	गणेशमलजी गांग की दुकान पर
३	गरूंड	जैन मंदिर
८	मांगरोल	पटवारी जी की दुकान पर
६	निंबाहेड़ा	उपाश्रय
८	मल्ला	वैष्णव मंदिर
३	बिनोता	उपाश्रय
६॥	निकुम	उपाश्रय
६	पिलाखो	रावजी के चौतरे पर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	बिसनगढ़	जैन धर्मशाला	१००
८	जालोरगढ़	उपाश्रय	२०० श्वे.
८	गोदन	एक भाई के मकान पर	२५ श्वे.
५	आहोर	जैन धर्मशाला	२५० श्वे.
१०	उमेदपुरा	जैन धर्मशाला	१०० श्वे.
६	तखतगढ़	जैन धर्मशाला	२०० श्वे.
३	बलाणा	जैन धर्मशाला	४० श्वे.
८	सांडेराव	जैन धर्मशाला	५०
७	फालना	श्वे. जैन धर्मशाला	२ स्था.
१२	मुंडारा	उपाश्रय	२००
५	सादड़ी	लोंकाशाह गुरुकुल	३००

सादड़ी से ६५ मील उदयपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	राणकपुर	जैन धर्मशाला
८	मघा	जैन धर्मशाला
६	सायरा	उपाश्रय में ठहरे
६	कम्बोल	जैन मंदिर
१	पदराड़ा	नाथुलालजी के मकान पर
७	त्रिपाल	एक भाई की दुकान पर
३	जशवंतगढ़	एक भाई के मकान पर
६	गोगुन्दा	श्वे. जैन धर्मशाला
६	भादवीगुडा	इच्छादेवी का मंदिर
८	थूर	रतनलालजी कोठारी
५	विद्याभवन	विद्याभवन
२	उदयपर	पौषधशाला

रतलाम से १२० मील उज्जैन देवास से इन्दौर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१	स्टेशन	बासवाड़ा वालों का मकान
६	बागरोद	अस्पताल
५	रुनखेड़ा	एक भाई का बरामदा
२	बडोदा	मन्दिर पर
५	खाचरोद	उपाश्रय
४	बुढावन	मन्दिर पर
६	नागदा	धर्मशाला उपाश्रय
४	रुपेटा	जैन मन्दिर
४	बोर खेडा	एक भाई के मकान पर
३	मु डला	एक भाई के मकान पर
५	महिदपुर	उपाश्रय
४॥	मह्ठ	एक के मकान पर
७	कालुहेडा	एक भाई के मकान पर
४	पान बिहार	सरकारी केन्द्र
८	भेरूगढ़	जैन मन्दिर
२	नयापुरा उज्जैन	उपाश्रय
१॥	नमक मण्डी	उपाश्रय
२	फ्रीगंज	सेठ पाचुलालजी का बंगला
५॥	चन्देसरा	एक भाई के मकान पर
५॥	नरवर	मन्दिर पर
३	पान खन्धा	स्कूल
९	देवास	उपाश्रय
७	चिमा	अहिल्या सराय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	वर जैन
४	डुंगला	पंचायती नोहरा	
६	कानोड़	पंचायती नोहरा	
६	बोयड़ा	उपाश्रय की दुकान	
६	बड़ीसादड़ी	पंचायती नोहरा	
७	मानपुरा	एक भाई के बरामदे में	
७	छोटीसादड़ी	पचायती नोहरा	
८	केसुन्दा	ग्राम पंचायती तहसील	
५	नीमच छावनी	उपाश्रय	
१॥	नीमच सिटी	उपाश्रय	
४	नमूनियाकलां	जैन मंदिर	
११	मल्हारगढ़	सेठ छगनलालजी दुगड़ के मकान पर	
६	पीपल्या	उपाश्रय	
४	बोतलगज	उपाश्रय	
७	मन्दसोर	ननकूपुरा	
॥	शहर	महावीर भवन	
६	दलोदा स्टेशन	धर्मशाला	
८	कचनारा	उपाश्रय	
५	ढोढर	उपाश्रय	
७	अरणीया	बंगले के बरामदे में	
३	जावरा	उपाश्रय	
८	हसनपाल्या	जैनमन्दिर	
५	नामली	उपाश्रय	
६	सेजावता	एक का बरामदा	
४	रतलाम	नीम चौक उपाश्रय	

खाचरोद से ५७ मील जावरा मन्दसौर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	बरखेड़ा	प्राथमिक पाठशाला
४	बड़ावदा	उपाश्रय
५	हरखेडयो	राजपूत के मकान पर
५	जावरा	उपाश्रय
६	रीछा चाँदा	स्कूल
८	कचनारा	उपाश्रय
३	नगरी	उपाश्रय
६	घुघडका	पन्नालालजी के दरी खाने में
२	फतेहगढ़	राम मन्दिर
५	खलचीपुरा	उपाश्रय
३	जनकूपुरा	उपाश्रय
१	शहर मन्दसौर	महावीर भवन
१	खानपुरा	कस्तुरचन्द उपाश्रय

मन्दसौर से १०१ मील प्रतापगढ सैलाना रतलाम

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	खूणी	वैष्णव मन्दिर
७	धावडा	राम मन्दिर
७	प्रतापगढ़	उपाश्रय
६	वेरोट	शान्तिलाल नरसिंघपुरा के मकान प
६	अरणोद	उपाश्रय
७	भावगढ	उपाश्रय
४	करजु	पचायती नोहरा
३	नन्दावता	जैन मन्दिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	मागल्या	त्रिलोकचन्दजी की दुकान पर
३॥	बंगला	सुरेन्द्रसिंह का पेड़ के नीचे
३॥	पलासिया	जौहरी सूरजमलजी का बंगला
२	इन्दौर	महावीर भवन

इन्दौर से ७८ मील खाचरोद

१	राजमोहल्ला	धर्मदास मित्र मण्डल
४	गांधी नगर	नये मकान पर
५॥	हातोद	उपाश्रय पर
६	बीजो	मन्दिर
२।	आगरा	मन्दिर पर
७	देपालपुर	उपाश्रय
४	बगीची	बाबा राघवदासजी
६	गौतमपुरा	उपाश्रय
५	परिजलार	चौतरे पर
७	बडनगर	उपाश्रय
१	स्टेशन	मूलचन्दजी के मकान पर
११	रुनिजा	उपाश्रय
७	पचलाणा	उपाश्रय
२	कमेण	मन्दिर पर
५	मडावदो	उपाश्रय
२॥	दफड़ावदो	मन्दिर पर
२	खाचरोद	उपाश्रय २०१४ चौमासा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	नागदा	उपाश्रय
८॥	अनारद्	राम मन्दिर
९॥	धार	वनिया वाड़ी का उपाश्रय
५	पिपल खेड़ा	आनन्द अनाथालय
३	गुनावद	राम मन्दिर
७	घाटा बिल्लोद	एक ब्राह्मण के घर
६॥	बेटमा	सेठ बसन्तीलालजी के मकान पर
८	फलारिया	उपाश्रय
६	राज मोहल्ला	धर्मदास मित्र मण्डल
१	इन्दौर	महावीर भवन

इन्दौर से १८४ मील जलगांव

५	कस्तुरबा ग्राम	स्कूल
८	सिमरोल	धर्मशाला
६	बाई	जमना बाई का मकान
८	बलवाड़ा	धर्मशाला
५	उमरिया चौकी	पुनाजी ब्राह्मण का मकान
५	वडवाह	जैन धर्मशाला उपाश्रय
३	मोरटक्का	दिगम्बर जैन धर्मशाला
४	सनावद	गोपी कृष्ण वाहती धर्मशाला
७	धनगांव	लक्ष्मीनारायण का मंदिर
५	रोशिया	एक भाई के मकान पर
७	मोजाखेड़ी	मंदिर पर ठहरे
३	देगाम-मलन	सेठ छज्जुराम के मकान पर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
३	आकोदड़ा	स्कूल
४	निम्बोद	उपाश्रय
५	पिंगरारो	चुन्नीलालजी का मकान
५	कालु खेड़ा	उपाश्रय
७	सुखेड़ा	उपाश्रय
५	पिपलोदा	उपाश्रय
५	शेरपुर	मन्दिर के पास उपाश्रय
६	सैलाना	उपाश्रय
४	धामणोद	उपाश्रय
४	पलसोड़ा	एक भाई की दुकान
६	रतलाम	नीमचौक उपाश्रय

रतलाम से १०६॥ मील धार इन्दौर

७	धराड़	उपाश्रय
४	भारी वड़ावदा	रगलालजी का मकान
४	पिपल खूटा	रुपचन्दजी का मकान
४	बरमावर	उपाश्रय
३	तलगारा	वृद्धिचन्दजी का मकान
४	मुलथान	सेठ हीरालालजी के मकान पर
४	बदनावर	उपाश्रय
४	वखतगढ़	उपाश्रय
५	कोद	उपाश्रय
२	विडवाल	उपाश्रय
५	कानवन	उपाश्रय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	नागदा	उपाश्रय
८॥	अनारद	राम मन्दिर
९॥	धार	बनिया वाड़ी का उपाश्रय
५	पिपल खेड़ा	आनन्द अनाथालय
३	गुनावद	राम मन्दिर
७	घाटा बिल्लोद	एक ब्राह्मण के घर
६॥	बेटमा	सेठ बसन्तीलालजी के मकान पर
८	कलारिया	उपाश्रय
६	राज मोहल्ला	धर्मदास मित्र मण्डल
१	इन्दौर	महावीर भवन

इन्दौर से १८४ मील जलगांव

५	कस्तुरबा ग्राम	स्कूल
८	सिमरोल	धर्मशाला
६	बाई	जमना बाई का मकान
८	बलवाड़ा	धर्मशाला
५	उमरिया चौकी	पुन्नाजी ब्राह्मण का मकान
५	बड़वाह	जैन धर्मशाला उपाश्रय
३	मोरटक्का	दिगम्बर जैन धर्मशाला
४	सनावद	गोपी कृष्णा बाहती धर्मशाला
७	धनगाँव	लक्ष्मीनारायण का मंदिर
५	रोशिया	एक भाई के मकान पर
७	भोजाखेड़ी	मंदिर पर ठहरे
३	छेगाव-मखन	सेठ छज्जुराम के मकान पर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	खंडवा	श्वे० जैन मंदिर
६	दूलहार	स्कूल का बरामदा
३	मंधाना	स्कूल
६	बोरगांव	सेठ मोतीलालजी मांगीलालजी के मकान पर
६॥	देनाला	जैन धर्मशाला
५॥	आशीरगढ़	जैन धर्मशाला
७॥	निम्बोला	धर्मशाला
४॥	बुरहानपुर	सागर मन्शन में स्टेशन के निकट
३	बुरहानपुर शहर	एक भाई के घर
७	साहापुर	स्कूल
७	इच्छापुर	हनुमानजी का मंदिर
११	रातलाबाद	जैन उपाश्रय
४	हरताला	उपाश्रय
७	वरणगाव	देवकी भवन
६	भुसावल	सेठ स्वरूपचन्दजी बंब के मकान पर ठहरे
३	साकेगाव	ग्राम पचायत का मकान
७	नसिराबाद	पंचायती नोहरा
६	जलगाव	सागर भवन

जलगांव से १०१ मील जालना

५	कसुंबे	स्कूल
६	नीरी	राम मंदिर
१०	पहूर	भन्नोबाई के मकान पर
६	वाकोद	स्कूल
३॥	फर्दापुर	मील में ठहरे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
३॥	लेणी अजन्ता	गलीच रूम
७	अजंठा	राम मन्दिर
७॥	गोलेगांव	जीन प्रेस में ठहरे
११॥	सिल्लोड़	स्कूल के बरामदे में

यहां से औरंगाबाद का रास्ता जाता है

८	भोकरदन	बालाजी का मंदिर
८॥	केदार खेड़ा	हनुमानजी का मंदिर
३॥	चापाई पडाव	झाड़ के नीचे
८	पागरी	मंदिर पर ठहरे
४	पिपलगांव	मल्हारराबजी की चक्की
६	जालना	उपाश्रय

जालना से रेल्वे रास्ते ३०९ मील हैदराबाद

५	सारवाड़ी	हनुमान मंदिर
७	वटी	हनुमान मंदिर
८	राजणी	बालाजी का मंदिर
१॥	चोकी	झाड़ के नीचे
७	परतुड	कन्छी के जीन में
२	रायपुर	हनुमान मंदिर
६	सातोना	समाधि स्थल
६	सेलु	रामवाड़ा
६	पिपलगांव की चोकी	झाड़ के नीचे
४	कोला	हनुमान मंदिर
६	पेडगांव स्टेशन	नीम के झाड़ के नीचे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८	परभणी	उपाश्रम आईल मील
७	पींगली	केसरीमलजी रतनलालजी सोनी के मकान
४	मिरखेल	स्टेशन का बरामदा
८	पूरण	उपाश्रय. गुजराती का मकान
६	चुटावा	स्टेशन का बरामदा
१२	नांदेड़	उपाश्रय
२	चोकी	चौकी पर
७	मुकट	हनुमान मंदिर
६	मुदखेड़	स्टेशन पर
१०	गोरठ	साईनाथ का मंदिर
२	उमरी	विनोदीराम बालचन्द के कॉटन मील पर
१०	करखेली	स्टेशन पर
८	धर्माबाद	हनुमान मंदिर
६	बासर	स्टेशन पर
६	नवीपेठ	राम मंदिर
६	निजामाबाद	गोपालदासजी का दाल का कारखाना पर
८	डिचपल्ली	लकड़ी का कारखाना पर
७	गन्नाराम	वंकटराव के मकान पर
४	सिरनापल्ली	स्टेशन
६	उपलवाई	स्टेशन
७	कामारेड्डी	जैन स्कूल
७	जंगमपल्ली	कुमटी के घर पर
४	बीकपुर	स्कूल
६	रामायमपेठ	गरणी में ठहरे
६	नारसीगी	धर्मशाला आम के पेड़ के नीचे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
११	मासाई पेठ	हनुमान मंदिर
४	तुपरान	गरणी के बरामदे में
५	मनोहराबाद	एक भाई के यहां
४	कालाकल	हनुमान मंदिर
६	मेरचल	क्लब में
६	बोलारम्	उपाश्रय
३	तिरमलगिरी	सरकारी पोलीस बंगला
४	सिकन्दराबाद	उपाश्रय
४	काचिगुडा	गांधी पूनमचन्दजी की जैन धर्मशाला
२	हैदराबाद	उचिरपुरा उपाश्रय
३	समशेरगंज	राजस्थानी पुस्तकालय
२	चारकमान	पुनमचन्दजी गांधी के मकान पर
७	बेगमपेठ	पुनमचन्दजी की कोठी
३	कारखाना	मोतीलालजी कोठारी का मकान पर
४	पिकट	हनुमान मंदिर
३	सिकन्दराबाद	उपाश्रय में चातुर्मास किया २०१५ का

सिकन्दराबाद से १४५ मील रायचूर

२॥	बेगमपेठ	सेठ पुनमचन्दजी गांधी की कोठी
६॥	बेगम बाजार	रामद्वारा
२	सुलतान बाजार	गुजराती स्कूल
२	चार कमान	रुई बाजार, अमयाल भवन
१	उबीरपुर	उपाश्रय
२	समशेरगंज	राजस्थानी पुस्तकालय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	शमशाबाद	कृष्ण मंदिर
८	पालयाकुलि	एक दुकान पर
३	कुतुर	स्कूल
८	सनतनगर	मारुती मंदिर
८	बालानगर	गुडपल्लि श्रीराम के मकान पर
६	राजापुरा	रेड्डिचन्द्र के मकान पर
६	जडतल्ला	रमणलाल छोटेलाल कच्छी की दुकान
१०	महबुब नगर	शिवमंदिर हिन्दी प्रचार सभा
१०	कोहटा कदरा	मंदिर पर
४	देव कदरा	समाधि पर
८	मरकल	शिव मंदिर
६	जक्लेर	स्कूल का बरामदा
८	मकतल	खीमजी नेणजी कच्छी की गरणी
७	मांगनूर	स्कूल पर
४	गुवडे वेतुर	मंदिर पर
६	चीकसूगुर	मंदिर पर
७	रायचूर	उपाश्रय
१	राजेन्द्रगंज	एक भाई के मकान पर
१	रायचूर	उपाश्रय
१	रायचूर स्टेशन	डाह्या भाई के मकान पर

रायचूर से २६६ मील बेंगलोर

७	उडगल खानापुर	मंदिर
५	कुडुति पल्लि	स्कूल
७	तुंगभद्रा	धर्मशाला

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८	कोमगी	आईल मील
६	पेद्दुवड	मंदिर
५	हनुमान मंदिर	मंदिर दर्शनीय स्थान
७	आशोनी	श्वे. धर्मशाला
६	नानापुर	मंदिर
११	आंलुर	हिन्दी प्रेमी तालुका स्कूल
६	नामक्कल	मंदिर
४॥	सीपगिरी	मंदिर
६॥	गुटकल	राजकोट वाले के मकान पर
४	कोनकोनला	शिव मंदिर
६	वज्रापुर	हाई स्कूल
४	रागलपाडु	समाधि पर
८	उरला कोन्डा	जीन प्रेस पर
३	मुरदुर	स्कूल
६	जल्लापल्लि	धर्मशाला
४	मुदनापुर	नीम के झाड़ के नीचे
३	कुडेल	स्कूल
६	रामनपल्लि	मंदिर. स्टेशन पर नीम के नीचे
४	अनंतपुर	एक भाई के मकान पर
५॥	राताड़	पंचायती बोर्ड का आफिस
६॥	मरूर	डाक बंगला
३	मामिलापल्लि	सरकारी मकान
६॥	दयामाविपल्लि	स्कूल
२॥	सरॅपल्लि	स्टेशन पर
६	गुदुर	महादेव का मंदिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
४।	हनुमान मंदिर	मंदिर
४	पेंनकुंदा	पहाड़ी रास्ता पर
६	सोमंदे पल्लि	मंदिर
६॥	तालाब की पाल	झाड़ के नीचे
६॥	हिन्दुपुर	डाक बंगले पर
४।	वसंतपल्लि	मंदिर
१२	गोरी बिदनूर	डाक बंगला
८	होडेंभावि	डाक बंगला
५	एकग्राम	नीम पिपल के झाड़ के नीचे
११	दोंड बालापुर	एक भाई के नये मकान पर
५॥	मारसदरा	ज्ञानाचार्यजी के वहां
६	यलहंका	धर्मशाला
४	हुब्बाल	खेती वाड़ी वाला स्कूल
४	मलेश्वर	सेठ गुलाबचन्दजी के मकान पर
४	चिकपेठ	उपाश्रय

बैंगलोर के बाजारों में ४४ मील का विहार

३	शूला बाजार	उपाश्रय
२	अलसुर	उपाश्रय
३॥	विमानपुर	जैन मंदिर
६	काली तुरक	उपाश्रय
॥	मोरचरी	उपाश्रय
२	गन्तरूप	स्कूल
३	विलाक पल्लि	उपाश्रय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१॥	ग्रापेट पालिया	स्कूल उपाश्रय
	फरजन टाउन	
४	मलेश्वर	सेठ गुलाबचन्दजी का मकान
१	श्रीरामपुर	स्कूल
१	मागडीरोड़	स्कूल
३	पेलेस गुट हाल्लि	स्कूल
२॥	गुडरेडी पालियम्	स्कूल
४	गांधीनगर	गुजराती स्कूल
१	दोहन्ना हॉल	हॉल में
१॥	बसत गुडी	अन्नछत्र मे
२	मामूल पेठ	स्कूल
॥	बालापेठ रोड़	गुजराती स्कूल
२	साम्राज पेठ	राम मंदिर

बेंगलोर से श्रवण वेल गोला होकर १६३ मील मैसूर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	कगेरी	छत्रम् में
४	डाक बंगला	बगला में
७	बिरदी	स्कूल
५	मलयाहल्लि	स्कूल
५	रामनगर	मंदिर के पीछे
७	चिन्पटन	एक भाई के मकान पर
४	सटेली	मंदिर स्कूल
६	मद्दूर	मंदिर
४	गजलगेटो	स्कूल
८	मंडिया	राम मंदिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	कालेल ह्ल्लि	स्कूल
१०॥	पांडुपुरा	राम मदिर
७॥	चिरकुरली	स्कूल
१२	कृष्णराजपेठ	छत्रम्
८	ककेरी	मंदिर
६	श्रवण वेलगोला	धर्मशाला
६	ककेरी	स्कूल
६	कृष्ण राजपेठ	नंदी मंदिर
४	तुर्कहल्लि	स्कूल
८	चिरकुरली	डाक वंगला
८	पाण्डुपुरा स्टेशन	टी. बी. बंगला
४	श्रीरंगपट्टनम्	टी. बी. बंगला
७	क्रिश्चियन कालेज	कालेज
२	मैसूर	उपाश्रय जैन धर्मशाला

मैसूर से कन्नवाडी कट्टा होकर ८६ मील बेंगलोर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१२	वृदावन	जी. टी. वगला
११	पाण्डुपुरा	मंदिर
५॥	वेडरह्ल्लि	मंदिर
५॥	हुनकेरे	कारखाना के बरामदे में
५	मद्दूर	मंदिर
४॥	निरगुट्टा	स्कूल
८॥	चिन्पटनं	मंदिर
१०	रामनगर	छत्रम

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	मलया हल्लि	स्कूल
४	बिरदो	स्कूल
७	डाक बगला	बगला
५	वगेरी	छत्रम्
६	साम्राजपेठ	पारसमलजी के मकान पर
५	शूले	साकसा का मकान
१॥	बगला	सेठ कुंदन मलजी लूंकड का
३॥	मेरचरी	शिराजी छत्रम् २०१६ चौमासा किया

बेंगलोर के बाजारा का विहार २८मील

५	शूले बाजार	उपाश्रय
६	यशवंतपुर	मोहनलालजी छाजेड़ का मकान
२	मलेश्वर	गुलाबचंदजी का मकान
१	नागाप्पा ब्लाक	मंदिर
२	गांधीनगर	बणकर छात्रालय
२	मामडारोड	नई बिल्डिंग
२	चिकपेठ	उपाश्रय
२	ब्लाक पल्लि	उपाश्रय
१॥	प्रांपेट पालिया	स्कूल
१॥	कालीतुक	उपाश्रय
१॥	अलसुर	बोरदिया के मकान पर
५	सिगायन पालिया	प्रेमबाग

बेंगलोर से २६२॥ मील मद्रास

५	व्हाईट फील्ड	बगले
७	हास कोटा	राम मंदिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७॥	मुकबाल	मंदिर
३	तावरीकेरा	स्कूल
५॥	नरसीपुरा	बंगला
२॥	कनहट्टी	स्कूल
७	कोलार	छत्रम्
११	बंगार पेठ	छत्रम्
८	रावर्टशन पेठ	उपाश्रय
१॥	अन्डरशन पेठ	उपाश्रय
१॥	रावर्टशन पेठ	उपाश्रय
५	वेत मंगलम्	डाक बंगला
५	सुन्दर पालयम्	पुलिस चौकी
६	वीकोटा	डाक बंगला
६	नायकनेर	डाक बंगला
६	पेरना पेठ	मोहनलालजी के मकान पर
६	मोरासाहल्ली	स्कूल
५	गुडियातम	स्कूल
६	पसीकुंडा	एक भाई के मकान पर
६	विरिंचीपुरार	छत्रम्
८	वेल्लुर	उपाश्रय
८	पुट्टुताक	स्कूल
७	अरकाट	गांधी आश्रम
२	रानी पेठ	लेबर युनियन
४	आमूर	स्कूल
५॥	पेगटापुरम	सरकारी मकान पर
५॥	शोलिंगर्	छत्रम्
६	पारांची	पंचायती बोर्ड

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	आरकोणम्	कन्हैयालालजी गादिया के मकान पर
६	पेरल्लुर	स्कूल
६	विगकांचीवरम	मैत्री श्री नायक वेल के मकान पर
१॥	छोटी कांजीवरम्	चपालालजी सचती के मकान पर
४॥	अयम पेठ	हाई स्कूल
४	बालाजाबाद	अमोलकचन्दजी भाछा के मकान पर
५	तिनेरी	स्कूल
६	सुगाछत्रम्	संयोगम मुदिलियार के मकान पर
६	श्री पेरमतूर	अग्रवाल छत्रम्
६	श्री रामपालियम	राम मंदिर
५	तिवल्लूर स्टेशन	छत्रम्
२	मिवल्लूर	उपाश्रय
५	सेवा पेठ	स्टेशन का मुसाफिर खाना
७	पट्टाभिराम	रंगलालजी भंडारी का मकान
६	तिरमसी	केवलचन्दजी सुराना का मकान
३	बडी पुन्नमल्ली	छत्रम्
१	छोटी पुन्नमल्ली	गोविन्द स्वामी के मकान
४॥	मदुराई वाईल	मिट्ठालाल बाफना का मकान
४	अमजी खेडा	जुगराजजी दुगड का मकान
१॥	बापालाल भाई	सूरजमल भाई का वगला
३	साहूकार पेठ, मद्रास	उपाश्रय

मद्रास के बाजारों का ६१ मील विहार

२	पुरिपपाकम्	देवराज का नया मकान
३	अयनावरम	सोहनलाल भामद का मकान

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
२	पदालय शूलै	नेमीचन्दजी सेठिया का मकान
२॥	पेरम्बूर	उदयराजजी कोठारी उपाश्रय
२	पदालय शूलै	नेमीचन्दजी सेठिया का मकान
२	साहूकार पेठ	उपाश्रय
२	चिंतोधरी पेठ	प्रार्थना जैन भवन
॥	पोदु पेठ	चपालालजी के नये मकान पर
२	नकशा बाजार	उपाश्रय
४	सैदापेठ	ताराचन्दजी गेलड़ा का मकान
२	परम कुंडा	विजयराजजी मूथा का मकान
१॥	पलवनतगल	स्कूल
॥	मीनापाकम्	अगरचन्द मानमल जैन कालेज
२।	पल्लावरम्	घीसूलालजी मरलेचा के मकान पर
४	ताम्बरम्	देवीचन्दजी के मकान पर
३	कुर्मपेठ	स्कूल
१॥	पल्लावरम्	घीसूलालजी का मकान
४	परमकुंडा	विजयराजजी मूथा का मकान
४	महावलम्	श्वे० स्था० जैन बोर्डिङ्ग
३।	राम पेठ	डाक्टरनी के मकान पर
२	मेलापुर	उपाश्रय
५	ढेडी बाजार (नेहरूबाजार)	उपाश्रय
१॥	रायपुरम्	वृद्धिचन्दजी लालचन्दजी मरलेचा का मकान
१॥	तञ्जार पेठ	मोतीलालजी का मकान
२॥	वोधी पेठ	ग्रामीणी के मकान पर
२	साहूकार पेठ	उपाश्रय २०१७ का चौमासा किया।

मद्रास से १७६ मील पांडीचेरी विहार

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	मेलापुर	उपाश्रय
३	नकशा बाज़ार	उपाश्रय
२	महा वल्लम्	श्वे० स्था० जैन बोर्डिङ्ग
८	परम्बूर	उपाश्रय
८	तुंगलाङ्कत्रम्	डागाजी का मकान
२	चेसर वाड़ी	उपाश्रय
६	अयनावरम्	एक भाई का मकान
६	महावल्लम्	श्वे० स्था० जैन बोर्डिङ्ग
२	शेशापेठ	उपाश्रय
२	शलन्दूर	विजयराजजी मूथा का मकान
४॥	पल्लावटम्	घीसुलालजी का मकान
४॥	ताम्बरम्	नया उपाश्रय
७	गुड़वाचेरी	नया मकान
७	सिंग पेरूमाल कोइल	छत्रम्
६	चगलपेठ	कुन्दनमलजी का मकान
४	तिमेली	स्कूल
५	तिरकलीकुन्डम	छत्रम्
१०	महाबली पुरम्	”
१०	तिरकली कुडम्	”
७	पल्लीवरम्	स्कूल
७	कारणगुडी	मन्दिर
२	मधुरान्तकम्	श्री अहोबिल मठ कला शाला
६	सोत पाकम्	स्कूल
६	अचरापाकम्	एक भाई की दुकान

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	ओगुरु	स्कूल
६	सारम्	स्कूल
५	तिंडीवनम्	जैन धर्मशाला
६	ओमेदूर	मन्दिर
६	काटरो मफाकम्	के. आर. युथ रंगम रेड्डिमार का मकान
५	स्कूल	स्कूल
७	पांडीचेरी	शांतिभाई का मकान

पांडीचेरी से ३१३ मील बेंगलोर सिटी

६	विल्लीनूर	मन्दिर
४॥	शूगर मिल्स	मिल का मकान
७॥	वेल वानू	सरकारी गोदाम
६	विल्लूपुरम्	सुभद्रा प्रार्थना भवन
१	पांडी बाजार	नथमलजी डुगड़ का मकान
५॥	पडागम	एक भाई के मकान पर
८॥	तिरुवेन्तनलूर	मन्दिर
८	सित्तलिंगम	मन्दिर
५॥	तिरुक्कोलूर	भंवरलालजी के मकान पर
२॥	तपोवनम्	स्वामी के मकान पर
६	वीरीयनूर	स्कूल
११	तिरुवणमलै	छत्रम्
७	मालाधड़ी	एक भाई के मकान पर
८	पिलूर	एक दिगम्बर भाई के मकान पर
८	पोलूर	नई बड़ी बिल्डिङ्ग

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८॥	कसत मवाड़ी	स्कूल
८	आरनी	एक भाई के मकान पर
८॥	मोसूर	स्कूल
६॥	आरकाट	गांधी आश्रम
७।	पुरतनाक	स्कूल
८।	वेल्लूर	उपाश्रय
६	वीरचोपुरम्	छत्रम्
६	पलिकुण्डा	एक भाई के मकान पर
६॥	गुडियातम	स्कूल
१०॥	पेरनापेठ	सोहनलालजी के मकान पर
५॥	कोतूर	स्कूल
६॥	आसूर	नये छत्रम् में
११॥	पेरनापेठ	सोहनलालजी कांकरिया
६	नायक नेर	डाक बंगला
९॥	बौंकोदा	डाक बंगला
६	सुन्दरपालयम्	स्कूल
५	वेद मंगलम्	डाक बंगला
५	रावर्टशन पेठ	उपाश्रय
२	अन्दरसन पेठ	स्कूल
२	रावर्टशन पेठ	उपाश्रय
८	बंगार पेठ	छत्रम्
११	कोलार	छत्रम्
६	नरसापुर	टाउन हॉल
६	युग बाल	मन्दिर स्कूल
७॥	होस कोटा	सांई मन्दिर

मील	ग्राम	घर
५	पांडवपुर	ब्राह्मण
६	चीनकुली	"
५	दण्ड खेरे	"
७	सीतगट्टा	"
६	श्रवण वेल गोला	दिगम्बर
६	जिन तार	ब्राह्मण
२	चन्दराय पटनम्	"
८॥	कस केरे	"
५	नुग लेही	"
८	लारे हल्ली	"
८	रनमन्दा हल्ली	लिंगायत
४	तीपटुर	१३ जैन घर
८	काने हल्ली	×
८	अलसी केरे	अनेक जैन घर
६	वरुड केरे	×
३	वानावारा	६ घर जैन
८	मडीकट्टा	×
८	कदूर	६ गुजराती
४	वीरूर	६ ओसवाल
७॥	चटन हल्ली	लिंगायत
६॥	तरीकेरे	७ घर ओसवाल
६	कारे हल्ली	×
५	भद्रावती	२० घर जैन
८	कुण्डली केर	लिंगायत
७	जोलताल	ब्राह्मण

मील	ग्राम	घर
६	चनगिरी	४ जैन घर
७	हसनगट्टा	×
५	शान्तिसागर	२ जैन घर
७	डोड्डिगट्टा	लिंगायत
२	कावेगे	ब्राह्मण
८	उकड़ा	×
४	ह्यादड़ो	×
४	दामनगेरे	८५ घर जैन

दामनगिरी से २२० मील कोल्हापुर

मील	ग्राम	घर
६	हरिहर	डाक्टर का मकान
७	चलगेरे	स्कूल
७	राणीबिंदनूर	जैन धर्मशाला
८	ककोला	स्कूल
५	मोटीबिंदनूर	बस स्टेन्ड
७	हवेरी	एसोसियेशन
८	कुणीहल्ली	स्कूल
६	धकापुर	पंचायती बोर्ड
६	सिगाव	विट्ठल मन्दिर
४	गुदगुडी	हनुमान मन्दिर
८	जिगलूर	शिव मन्दिर
११	आदरगुची	स्कूल
६	हुबली	कच्छी ओसवाल का उपाश्रय
४	भाईरीदे वर कोप	मन्दिर
८॥	धारवाड़	श्री श्वे० धर्मशाला

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	वेट फील्ड	पुखराजजी के बंगले पर
५	सिगल पालिया	प्रेम बाग
४	बगीचा	मोहनलालजी बोहरा का
१	अलसूर	नया उपाश्रय
१	शूला	उपाश्रय
१॥	काली तूर्क	उपाश्रय
१	शिवाजी नगर	उपाश्रय
१	सपिंगसरोड़	उपाश्रय
३	गांधी नगर	एक भाई के नये मकान पर
१	चीक पेठ (बैंगलोर सीटी)	उपाश्रय २०१८ का चौमासा किया

बैंगलोर के बाजारों के नाम २१॥ मील

२	शीवाजी नगर	उपाश्रय
२	प्रापट पालिया	कोरपरेशन का नया मकान
१	सिपिंग्स रोड	उपाश्रय
३	गाँधी नगर	एक भाई के नये मकान पर
२	मलेश्वर	गुलाबचन्दजी के मकान पर
४	शूले	उपाश्रय
२	कुन्दन बंगला	कुन्दनमलजी पुखराजजी लूंकड का
४	अलसूर	जवरीलालजी मूथा का उपाश्रय
१	शूले	उपाश्रय
३	चीक पेठ	उपाश्रय
२॥	मागड़ी रोड़	बापूजी विद्यार्थी तिलय
५	यशवन्तपुर	एक भाई के मकान पर

बंगलोर से १४६॥ मील दावन गेरे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
३	जालहल्ली	भारत मीटल इन्डस्ट्रीज
६	नेलमंगल	हनुमान मन्दिर
५	वेगुर	स्कूल
३	कुरणाहल्ली	स्कूल
५	दाउस पेठ	डाक बंगला
६	हीर हल्ली	पचायती बोर्ड के मकान पर
७	तुमकूर	श्वे० मन्दिर के पीछे उपाश्रय
७	कोरा	स्कूल
८	सीबा	स्कूल
८	शीरा	कुटामा छत्रम
७	तावर केरे	मन्दिर
५	जोगनहल्ली	स्कूल
८	आदि पल्ले	मन्दिर
४	हिरियूर	जैन धर्म शाला
१२	आई मगला	पचायती बोर्ड का मकान
१३	चित्र दुर्ग	उपाश्रय
११	बीजापुर	पंचायती बोर्ड का मकान
८॥	मल्लसागर	सरकारी नये बंगले
१०	आनगुड	पंचायती बोर्ड का मकान
१०	दावन गेरे	शिव मंदिर के पास विगांवत गुडो

मैसुर से २१३। मील दामन गेरे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
४	सीदलीगपुर	+
६	श्री रंगपटनम्	ब्राह्मण

मील	ग्राम	घर
४	पांडवपुर	ब्राह्मण
६	चीनकुली	"
५	दण्ड खेरे	"
७	सीतगट्टा	"
६	श्रवण वेल गोला	दिगम्बर
६	जिन तार	ब्राह्मण
२	चन्दराय पटनम्	"
८॥	कस केरे	"
५	नुग लेहो	"
८	लारे हल्ली	"
८	रनमन्दा हल्ली	लिंगायत
४	तीपटुर	१३ जैन घर
८	काने हल्ली	×
८	अलसी केरे	अनेक जैन घर
६	वण्ड केरे	×
३	वानावारा	६ घर जैन
८	मडीकट्टा	×
८	कदूर	६ गुजराती
४	वीरूर	६ ओसवाल
७॥	चटन हल्ली	लिंगायत
६॥	तरीकेरे	७ घर ओसवाल
६	कारे हल्ली	×
५	भद्रावती	३० घर जैन
८	कुण्डली केर	लिंगायत
७	जोलताल	ब्राह्मण

मील	ग्राम	घर
६	चनगिरी	४ जैन घर
७	हसनगट्टा	×
५	शान्तिसागर	२ जैन घर
७	डोडिगट्टा	लिंगायत
?	कावेगे	ब्राह्मण
८	उकडा	×
४	हादडो	×
४	दामनगेरे	८५ घर जैन

दामनगिरी से २२० मील कोल्हापुर

६	हरिहर	दफ्तर का मकान
७	चलगेरे	स्कूल
७	राणीबिदनूर	जैन धर्मशाला
८	ककोला	स्कूल
५	मोटीबिंदनूर	बस स्टेन्ड
७	हवेरी	एसोसियेशन
८	कुणोहल्ली	स्कूल
६	बकापुर	पचायती बोर्ड
६	सिगाव	विठ्ठल मन्दिर
४	गुडगुडी	हनुमान मन्दिर
८	जिगलूर	शिव मन्दिर
११	आदरगुची	स्कूल
६	हुबली	कच्छी ओसवाल का उपाश्रय
४	भाईरीदे वर कोप	मन्दिर
८॥	धारवाड	श्री श्वे० धर्मशाला

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१	वेलूर	मठ.
६	क्त्तिूर	लिंगायत
१॥	वस स्टेन्ड	वस स्टेन्ड
१०॥	एस० के० हुबली	डाक बंगला
५	बागेवाडी	स्कूल
३	कोलीकोप	बंगला
३	हलगा	दिगम्बर भाई का स्थान
४॥	वेलगांव	हरिलाल केशवजी का स्थान
७	होनगा	मन्दिर
६।	सुतपट्टी	डाक बंगला
७	खानापुर	एक भाई के यहां
७	शंखेश्वर	वस स्टेन्ड के पास
६	कणगल	एक भाई के यहां
८	निपाणी	दीपचन्द भाई के यहां
५॥	सोडलगा	स्कूल
७॥	कागल	लीला बहन के यहां
६	गोकुल शेरगाव	स्कूल
६	कोल्हापुर	उपाश्रय

कोल्हापुर से २१० मील पुना

मील	गांव	ठहरने का स्थान	जैन वर
६॥	हालोंडी	स्कूल	सारा गांव दिगम्बर है
३	चौकाग	दि० मन्दिर	दिगम्बर है
१०	इचलकरंजी	शांतिलालजी मुथा नेहरू रोड	१४ घर स्था० है

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१०	जेसिंगपुर	उपाश्रय	१५ स्था० ८ दे०
३	अकली	सडक के किनारे	दिगम्बर भाई के यहां
६	मीरज	कच्छी धर्मशाला	अनेक घर
६	सागली	उपाश्रय	४० स्था०
२॥	माधव नगर	उपाश्रय	१५ स्था०
३	कवलापुर	श्वे० मन्दिर	१ जैन
८	ताम्र गाव	दुगड के मकान पर	१५ स्था०
४	निमणी	स्कूल	
१०	पलूस	सेठ माधवरावजी ब्राह्मण के यहा	
७	ताकारी	गुजराती भाई	६ गु० जैन
३	भवानीपुर	गुजराती भाई	५ जैन घर
४	शेणोली	पाडुरंग मन्दिर	४ गुजराती घर है
१	शेणोली स्टेशन	स्कूल	१ गुजराती है
९	कराड स्टेशन	एक चाली में	८ कच्छी जैन है
३	कराड	हाजी अहमद हॉल	१० स्था०
१०॥	उम्रज	गु० चाणस्यावाला	५ गु० मा० है
		सड़क के पास तेल की मशीन	
९	अतीत	मन्दिर	१ गुजराती है
३	नागठाणे	हाई स्कूल	०
१०	सातारा	पेट्रोल पम्प	२ गु० है
१	सातारा	उपाश्रय	१५ जैन का है
१	सातारा	पैट्रोल पम्प	२ गु० का है
६	वडूथ	आईल मिल	१ गु० का है
६	शीवथर	स्कूल	२ गु० के है
२॥	देऊर	एक भाई के घर	१० गु० के है
३	वाठर	रमणीकलाल शाह	२ गु० के है

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
५॥	मलपे	स्कूल	०
६॥	लोणन्द	उपाश्रय	७ स्था० १२ दे० है
५	निरा	युगल स्टोर्स	४ जैन के है
७	वाल्हे	नाथ मन्दिर	३ जैन के है
७	जेजोरी	चावड़ी	०
५	शीवरी	मेमाई मन्दिर	१ जैन है
४	सासवड़	माली समाज गृह	७ स्था०
८	वडकी	स्कूल	१ गु० का है
६	हडपसर	विट्ठल मन्दिर	४ जैन है
५	पुना	नाना पेठ उपाश्रय	अनेक घर

पूना से ७३॥ मील पनवेल

५	खिड़की	जैन धर्मशाला	६स्था ४ते. ४० दे है
८	पिंपवड़	नये उपाश्रय में	३५ स्था.
५	देहुरोड	मन्दिर	६ स्था. २ ते. २ दे. है
७	वडगाव	उपाश्रय	१५ स्था.
६	कामशेट	उपाश्रय	१३ स्था.
५॥	कार्ले	उपाश्रय	५ जैन.
५	लोणावला	उपाश्रय	३० स्था.
८	खापोली	जैन धर्मशाला	१ स्था ३०.दे है
५	खालापुर	जैन धर्मशाला	१ महेश्वरी भक्ति वाला है
६	चौक	जैन मन्दिर	१५दे. के है
४॥	बारबई	उपाश्रय	०
	पनवेल		२० स्था. २० दे. के है

पनवेल से ३० मील बम्बई

ल	ग्राम	ठहरने की जगह
	शांति सदन	रतनचन्दजी का बंगला
	वलुजा	एक भाई का मकान
	बंगला	सेठ कस्तुर भाई लालभाई
	मुब्रा	मोरारजी का ऊपर का बंगला
	थाना	उपाश्रय
	भांडुप	उपाश्रय
	घाटकोपर	उपाश्रय

बम्बई के बाजारों में ठहरने की जगह

विलेपारला	उपाश्रय
खार	उपाश्रय
माटुंगा	उपाश्रय
शीव	उपाश्रय
दादर	उपाश्रय
चींचपोकली	उपाश्रय
कांदावाडी	उपाश्रय
कोट	उपाश्रय
कांदावली	उपाश्रय
बोरीवली	उपाश्रय
मलाड	उपाश्रय
अंधेरी	उपाश्रय

पता:-

१ ब्रजलालजी शाह एण्ड कंपनी मु. जय सिंगपुर जिला. कोल्हापुर एस. रेल्वे

२ सेठ ख्यालीरामजी इन्द्रचन्दजी वरडिया
मु. जयसिंगपुर जिला-कोल्हापुर

३ सेठ नरोत्तमदासजी नेमीचन्द शाह ठी. वरवार भाग मु. सांगली

४ रमणीकलालजी हरजीवनदासजी शाह C/o अरुण स्टोर्स
डी. मेनरोड मु. सांगली

५ सेठ रतीलालजी विट्ठलदासजी गोसलिया
मु. माधवनगर जिला. कोल्हापुर

६ दगडुमलजी धनराजजी बोथरा ठी. गुरुवार पेठ
मु. तासगांव जिला-सांगली

७ सेठ कालीदासजी भाईचन्दजी पेट्रोल पंप ठी पोईनाका मु. सातारा

८ मेसर्स मोखमदासजी हजारीमलजी मुथा बैंकर्समरचेन्ट
भवानी पेठ मु सातारा

९ सेठ नेमीचन्दजी नरसिंहदासजी लुणावत ठी. भवानी पेठ मु. सातारा

१० शाह जेसिंगभाईजी नागरदासजी जैन मु. लोणंद जिला-सातारा

११ सेठ बालचन्दजी जसराजजी पुनमिया १२३४ रवीवार पेठ
मु पूना २.

१२ सेठ मिश्रीमलजी सोभागमलजी लोढ़ा मु. खिड़की जिला-पूना

१३ सेठ भूमरमलजी जुगराजजी लुणावत मु. चिंचवड जिला-पूना

१४ सेठ मुलतानमलजी बोरीदासजी सचेती मु चिंचवड़ जिला-पूना

१५ सेठ अन्नराजजी लालचन्दजी बलदोटा देहुरोड़ जिला- पूना

१६ सेठ माणिकचन्दजी राजमलजी बाफना मु वडगाव जिला पूना

१७ सेठ बादरमलजी माणकचन्दजी मु. कामसेट जिला-पूना

१८ सेठ शांतिलालजी हंसराजजी लुणावत मु. लोणावला जिला-पूना

१९ सेठ रतनचन्दजी भीखमदासजी बांठिया
मु. पनवेल, जिला कुलावा

• • •

मुनि विहार....

तपस्वी मुनि श्री लाभचन्दजी म०

लीलुआ

ता० ३-१२-५५ :

आज हम लोग ७ मुनि* चातुर्मास समाप्त करके कलकत्ता से विहार कर रहे हैं। मुनियों को चातुर्मास का समय किसी एक-ही शहर में व्यतीत करना पड़ता है। प्राय जैन मुनि राजस्थान मध्यप्रदेश, पजाब, गुजरात, सौराष्ट्र आदि ऐसे प्रान्तों में ही विचरण करते हैं, जहा धर्मानुयायियों की सख्या काफी है। उन प्रान्तों को छोड़कर कलकत्ता तथा इसी तरह के अन्य सुदूर प्रान्तों में साधु साध्वियों का आगमन पहले तो करीब करीब नहीं ही था। अब भी बहुत कम है। परन्तु हम ७ मुनियों ने इतना लम्बा रास्ता पार करके यहा आने का साहस किया। यहाँ सन् १९५२ का चातुर्मास बहुत सफलतापूर्वक सपन्न हुआ। ऐसा अनुभव होता है कि यदि हम जैन मुनि कुछ व्यापक दृष्टि से काम करें, तो यह बगाल, बिहार, उडीसा, आदि का क्षेत्र हमारे लिए बहुत सुन्दर कार्य क्षेत्र सिद्ध होगा।

आज प्रात काल कलकत्ता से जब हम रवाना हुए, तो हमें विदा करने के लिए हजारों व्यक्ति एकत्रित हो गये थे। यह स्वाभाविक भी था। कलकत्ता भारत की व्यापारिक राजधानी है। इसलिए भिन्न-भिन्न प्रान्तों से हजारों की सख्या में जैन धर्मानुयायी लोग यहा

** १. मुनि श्री प्रतापमलजी, २ मुनि श्री हीरालालजी ३. मुनि श्री दीपचन्दजी, ४ मुनि श्री बसन्तलालजी, ५. मुनि श्री राजेन्द्र मुनिजी ६. रमेशमुनिजी; ७ स्वयं लेखक।*

व्यापार के निमित्त आये हुए हैं। खास तौर से गुजरात तथा राजस्थान के जैन-भाई बहुत बड़ी सख्या में यहां हैं। सभी ने मुनियों को भरे हुए मन से विदा किया।

कलकत्ता शहर से चलकर हम लोग चार माइल पर स्थित कलकत्ता के ही उपनगर लीलुआ में आकर रामपुरिया गार्डन में रुके हैं। चारों ओर कलकत्ता का श्रावक-समाज घिरा है। सब की आंखों में वियोग का यदि कष्ट है तो पुनरागमन की आशा भी है।

बर्दवान

ता० ११-१२-५५ :

हम बंगाल की शस्य-श्यामल भूमि को पार करते हुए निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। कभी ८ मील कभी १० मील। कभी इससे भी ज्यादा। किसी भी प्रदेश या स्थान का पूरा अध्ययन करना हो तो पाद-विहार से ज्यादा अच्छा और कोई माध्यम नहीं हो सकता। छोटे-छोटे गांवों में जाना, नदी, नाले, पर्वत पहाड़, सबको पार करते हुए ग्राम-जीवन का दर्शन करना, पद-यात्रा में ही संभव है। हम देखते हैं कि किस प्रकार किसान सवेरे से शाम तक कड़ी मेहनत करके देश के लिए अन्न पैदा करते हैं, पर वे स्वय गरीब तथा असहाय के असहाय बने रहते हैं। उनके पास हरे-भरे मन-मोहक खेत हैं, पर उनके बाल-बच्चों का भविष्य तो सूखा-का-सूखा है। स्वयं उनकी किस्मत भी हरी-भरी नहीं।

खास तौर से यह बंगाल देश तो बहुत ही गरीब है। यहां के किसानों तथा खेतीहर मजदूरों के चहरे पर न तेज है, न उत्साह है और न स्वतत्रता की अनुभूति है। जिस बंगाल में रवीन्द्रनाथ जैसे महान् लेखक हुए, बंकिमचन्द्र तथा शरद्चन्द्र जैसे महान् उपन्यासकार

हुए, जगदीशचन्द्र बसु जैसे महान वैज्ञानिक हुए, सुभाषचन्द्र बोस जैसे महान् देश सेवक हुए, चैतन्य महाप्रभु, रामकृष्ण परमहंस और अरविन्द घोष जैसे महान् आध्यात्मिक पुरुष हुए उस बङ्गाल की आम जनता का जीवन कितना शोषित, पीड़ित और बेसहारा है, यह पाद विहार करते हुए अच्छी तरह से अनुभव हो जाता है।

कलकत्ता से चलने के बाद श्री रामपुर, सेवड़ाफुली, चन्द्रनगर मगरा, पडुआ, मेमारी, शक्तिगढ़ आदि गांवों में रुकते हुए बंगाल के सुप्रसिद्ध नगर बर्दवान पहुँचे हैं। पहले बिहार, बङ्गाल, उड़ीसा क्षेत्र जैन धर्म के केन्द्र रहे हैं। इस शहर का नाम श्रमण भगवान वर्धमान के नाम से पड़ा है।

हम सातों मुनि यहाँ से तीन भागों में बंटकर तीन दिशाओं में रवाना होने वाले हैं। मुनि श्री हीरालालजी म० झरिया की ओर मुनि श्री प्रतापमलजी म० सैंथिया की ओर तथा हमने रानीगंज की ओर विहार किया।

दुर्गापुर

ता० १८-१२-५५ :

आज हम हिन्दुस्तान के नये तीर्थ दुर्गापुर में हैं। सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ भारत अब आजाद है और स्वतन्त्रतापूर्वक अपना नव निर्माण कर रहा है। जगह जगह नये नये उद्योग खड़े हो रहे हैं। नये नये कारखाने खुल रहे हैं। बिजली का उत्पादन हो रहा है। बांध बन रहे हैं। नहरें निकल रही हैं। इस प्रकार देश अपनी तरक्की के लिए संघर्ष कर रहा है। इस

प्रकार के नव-निर्माण के स्थानों को भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दुस्तान के "नये तीर्थ" बताया है। दुर्गापुर भी ऐसा ही एक तीर्थ है। यहां पर एक बहुत बड़ा बांध बनाया गया है। इस बांध के निर्माण पर ७ करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। अपने आप खुलने तथा बन्द होने वाले ३४ द्वार इस बांध की अपनी विशेषता है। अपार जलराशि देखकर शास्त्रों में वर्णित पद्मद्रह का विवरण आंखों के सामने आ जाता है। उत्ताल प्रवाह से बहने वाली दो नहरें उत्तर एवं दक्षिण की तरफ जाती हैं। उत्तर की तरफ प्रवहमान नहर भारत की पवित्र सलिला गंगा नदी में जाकर मिल जाती है। इससे इस नहर की उपयोगिता न केवल सिंचाई के लिए है बल्कि जलयान के आवागमन के लिए भी हो जाती है।

दोनों किनारों पर बने हुए भव्य उपवन इस स्थान की शोभा में चार चांद लगा देते हैं। इस तरह के अनेक बांध भारत में बन रहे हैं। आर्थिक तथा भौतिक विकास की ओर तो पूरा ध्यान दिया जा रहा है पर आध्यात्मिक क्षेत्र आजादी के बाद भी उपेक्षित-सा ही पड़ा है। जब तक समाज का आध्यात्मिक स्तर उन्नत नहीं होगा, तबतक ये भौतिक उन्नतियां भी व्यर्थ ही साबित होंगी। वास्तव में स्वतन्त्रता तभी चिरस्थाई होगी जब हमारे समाज में मानवीय सद्गुणों का उत्तरोत्तर विकास हुगा। यह बहुत दर्दनाक बात है कि आजादी के बाद दुर्गापुर जैसे नये तीर्थों के रूप में भौतिक उन्नति ज्यों ज्यों हो रही है त्यों त्यों ही देश में स्वार्थ-लिप्सा, भोग-लिप्सा, राज्य-लिप्सा तथा भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

बर्द्धवान से दुर्गापुर के बीच हमारे पांच पड़ाव हुए। फगुपुरा, गलसी, बुद बुद, पानागढ़ तथा खरासोल। सभी गांवों में गरीबी का गहरा साम्राज्य है। फिर भी सभी जगह साधुओं के प्रति असीम आदर दीख पड़ता है। भारत आध्यात्मिक देश है, इसलिए हर

परिस्थिति में यहां के लोग आध्यात्मिक मार्ग के प्रति तथा उस मार्ग पर चलने वालों के प्रति पूरी श्रद्धा रखते हैं।

आसन सोल

ता० २६-१२-५५ :

हमारा मुनि-जीवन वास्तव में एक तपो भूमि है और नित-नवीन अनुभवों को प्राप्त करने का अद्भुत साधन भी है। कहीं एक जगह नहीं रहना। नित्य चलते जाना। यह कितना सुन्दर है। जैसे नदी का प्रवाह नहीं रुकता उसी तरह मुनियों की यात्रा नहीं रुकती। चरैवेति! चरैवेति!! नित्य नया रास्ता, नित्य नया गाव, नित्य नया मकान, नित्य नये लोग, नित्य नया पानी। यह भी कितने आनन्द का विषय है। इन सब परिवर्तनों में भी मुनि को समता-वृत्ति रखनी होती है। कभी अनुकूलता हो, तब भी आसक्त न होना और कभी प्रतिकूलता हो तब भी दुखी न होना, यही मुनि जीवन की परमोत्कट साधना है। इस साधना के बल पर ही मुनि अपने जीवन के चरमोत्कर्ष तक पहुँच सकता है।

लाभा लाभे सुहे दुखे, जीविए मरणे तहा ।
समो निन्दा पसंसासु, तहा माणाव माणवो ॥

सूत्र ४० १६-६१ गाथा

कभी अधिक सम्मान मिलता है, कभी अपमान का जहर भी पीना पड़ता है। लेकिन मानापमान की उभय परिस्थितियों में समता रखना ही हमारा व्रत है। हम आसन सोल पहुँचे, तो हमारा भव्य स्वागत हुआ। कुछ सज्जन कलकत्ता से भी आये। कुछ दूसरे स्थानों के भी आये। स्थानीय लोग भी काफी संख्या में थे।

यहां प्रवचन में मैंने लोगों को जीवन में अध्यात्मवाद को प्रश्रय देने की प्रेरणा देते हुए कहा कि "आज विज्ञान का युग है। विज्ञान ने मनुष्य के लिए अत्यन्त सुख-सुविधा के साधन जुटा दिये हैं। रेल, मोटर, हवाई जहाज आदि के आविष्कार से यातायात की सुविधाएं खूब बढ़ गई हैं। रहने के लिए एयर कण्डीसन्ड भवन उपलब्ध हैं। खाने के लिए वैज्ञानिक साधनों से बिना हाथ के स्पर्श के तैयार किया हुआ और रैफ्रीजेटर में सुरक्षित भोजन मिलता है। तार, टेलीफोन और टेलीविजन के माध्यम से सारा संसार बहुत निकट आ गया है। और भी बहुत प्रकार के आविष्कार हुए हैं। परन्तु इन सब आविष्कारों, तथा भौतिक सुख-सुविधाओं की चकाचौंध में आध्यात्मिक जीवन को खोखला नहीं बनने देना है। आज विज्ञान में अध्यात्म की पुट नहीं है इसीलिए अणु-शक्ति के आविष्कार से सारा संसार भयभीत हो उठा है। ऐसे बमों का आविष्कार हो चुका है, जिनके विस्फोट से क्षण भर में यह संसार, उसका इतिहास, साहित्य, संस्कृति और कला का विनाश हो सकता है इसीलिए मेरी यह निश्चित मान्यता है कि विज्ञान की इस बढ़ती हुई भौतिक प्रवृत्ति पर अध्यात्मवाद का अंकुश होना चाहिए। अन्यथा जैसे बिना अंकुश के मदोन्मत्त हाथी खतरनाक साबित होता है, बिना लगाम के घोड़ा खतरनाक हो जाता है, वैसे ही यह विज्ञान भी समाज के लिए अभिशाप स्वरूप ही सिद्ध होगा।"

फरीदपुर, मोहनपुर, करजोड़ा, रानीगंज और सादग्राम इस तरह दुर्गापुर से आसन सोल के बीच में हमारे पांच पड़ाव हुए। हम यहां २४-१२-५५ को ही पहुँच गये थे।

आज यहां पर बंगाल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन हो रहा था। सम्मेलन के आयोजकों का आग्रह भरा

निवेदन था कि हम भी इस सम्मेलन में उपस्थित रहें और अपने विचार प्रगट करें। इसलिए मैंने सम्मेलन के मंच से अपने विचार जनता के सामने रखे। "मारवाड़ी जाति ने देश की व्यापारिक उन्नति में अपना उल्लेखनीय योग दान दिया है। परन्तु दुर्भाग्य से आज मारवाड़ी समाज में अनेक सामाजिक रूढ़ियों तथा कुप्रथाओं ने अपना डेरा जमा लिया है। इसलिए अब बदले हुए जमाने की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन कुप्रथाओं को समाप्त करके नये ढग से अपना विकास करने की आवश्यकता है। जब मारवाड़ी समाज युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेगा तभी यह एक प्रगतिशील समाज बन सकता है। अन्यथा युग आगे बढ़ जाएगा और यह जाति पिछड़ी की पिछड़ी रह जायगी।" मेरे कहने का यही सार था क्योंकि गोरक्षा का प्रश्न उस समय विचारार्थ सामने था और गोरक्षा के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी उपस्थित था इसलिए मैंने कहा कि—

"भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहां की कृषि बैलों पर आधारित है, इसलिए अर्थ-शास्त्र की दृष्टि से भी गोरक्षा का प्रश्न बहुत महत्त्व का है। वैसे गाय भारतीय इतिहास में अपना सांस्कृतिक तथा भावनात्मक वैशिष्ट्य तो रखती ही है। जैन-शास्त्रों में जिन विशिष्ट श्रावकों का वर्णन आता है, वे गाय का पालन करते थे, यह भी शास्त्रों में अनेक स्थानों पर वर्णित है। इसलिए भारतीय जन-मानस की उपेक्षा नहीं की जा सकती और गो-रक्षा के सवाल को टाला नहीं जा सकता।"

न्यामतपुर

ता० १-१-५६ :

आज वर्ष का प्रथम दिन है। १६५५ का साल समाप्त हुआ और नूतन वर्ष हमारा अभिनंदन कर रहा है। यह काल-चक्र निरंतर चलता ही रहता है। कभी भी रुकता नहीं। दिन बीतते हैं, रातें बीतती हैं, सप्ताह पक्ष और मास बीतते हैं उसी तरह वर्ष और युग बीत जाते हैं। जो काल बीत जाता है, वह वापस लौट कर नहीं आता।

जाजा वच्चई रयणी न सा पडि निअत्तई।
अहम्मं कुण माणस्स, अफला जंति राइओ॥

उ.अ १४-गाथा २५

जाजा वच्चई रयणी न सा पडिनिअत्तई।
धम्मंच कुण माणस्स सफला जंति राइओ॥

उ.अ १४-गाथा २५

अर्थात : जो रात्रि बीत जाती है, वह पुनः लौटकर नहीं आती। इसलिए जिसकी रात्रि अधर्म में गुजरती है, उसकी जिन्दगी असफल हो जाती है, और जिसकी रात्रि धर्म की उपासना करते हुए गुजरती है, उसकी रात्रि सफल होती है। किन्तु मानव कभी भी इस बात पर विचार नहीं करता। खेल कूद में वह अपना बचपन व्यतीत कर देता है, भोग-विलास में अपना यौवन समाप्त कर देता है, और बुढ़ापे में उस समय पछताता है, जब इन्द्रियां क्षीण हो जाती हैं। धर्म करने का सामर्थ्य नहीं रहता। इसलिए यह नव-वर्ष का प्रथम दिन हमें इस बात की याद दिलाता है कि समय बीतता जारहा है। उसे हम पकड़ नहीं सकते पर उसका सदुपयोग करना तो मानव के हाथ में है।

आसन सोल से चलने के बाद हम मीरजा रोड में रुके और वर्द्धनपुर में रुके। वर्द्धनपुर में श्री धनजीभाई मुख्य श्रावक हैं, जिनकी धार्मिक श्रद्धा से मन पर सात्विक प्रभाव पड़ता है। वर्द्धनपुर से हम श्यामनपुर आगये। यह एक छोटी जगह है,पर मन में वैचारिक प्रेरणा उत्पन्न करने वाला स्थान है।

चितरंजन

ता० ३-१-५६ :

श्यामनपुर से १० मील चलकर हम यहां आये हैं। यहां रेल इंजिन का एक बड़ा कारखाना है।

यातायात के साधन दिन प्रतिदिन विकसित होते जारहे हैं। विज्ञान ने तेज रफ्तार वाले अनेक साधनों का आविष्कार करके सारी दुनिया को निकट ला दिया है। खासतौर से योरप, अमेरिका, रूस आदि देशों ने इस प्रतियोगिता में विशिष्ट योगदान दिया है। सारी दुनिया को ये देश, रेल का, मोटर का, विमान का, साइकिल का तथा अन्य यातायात के साधनों का सामान भेजते हैं। पर अब धीरे धीरे एशिया और अफ्रीका के देश भी आजाद हो रहे हैं और अपने देश में ही इन साधनों का विकास कर रहे हैं। भारत में भी अब रेल्वे के इंजिन तथा डिब्बे बनने लगे हैं। चितरंजन भारतीय रेलों के विकास में अपना महत्व का योग दे रहा है। ८० प्रतिशत मशीनें और इंजिन की बोडी का निर्माण यहां होता है। इस प्रकार यह कारखाना देश में अपना ढंग का अकेला है।

पर हम तो पदयात्री ठहरे! लोग अवश्य ही मन में ऐसा विचार करते होंगे कि एयरजहाज और राकेट के इस युग में प्रकृति

मानव स्पुतनिक में बैठकर चन्द्रमा की यात्रा करने का सपना देख रहा है, ये साधु लोग पैदल क्यों चलते हैं ? इतना समय नष्ट क्यों करते हैं। पर उन्हें इस पाद-विहार का आनंद तथा उपयोगिता का भान नहीं है। पाद-विहार के समय प्रकृति के साथ सीधा संपर्क आता है। खुली हवा, खुला प्रकाश, खुली धूप, और खुली जल-वायु के सान्निध्य में हम ऐसा ही अनुभव करते हैं, मानो हम सृष्टि की गोद में हैं। इसके अलावा कोटि कोटि ग्रामीण जनता से संपर्क करने का भी यह श्रेष्ठतम साधन है। इसलिए इस राकेट युग में जितना महत्व हवाई-यात्रा का है, उससे कहीं अधिक महत्व पद-यात्रा का है। चितरंजन में रेल्वे इंजिन का कारखाना देखते समय हमारे साथ करीब ३० व्यक्ति थे। उनके साथ इस प्रकार का विचार-विमर्श चलता रहा।

यहां पर एक और महत्वपूर्ण कारखाना देखा। अंडर-ग्राउंड में बिछाने के लिए टेलीफोन का तार यहां पर तैयार किया जाता है। तार पर इतना मजबूत कपड़ा चढ़ाया जाता है कि वह न तो सड़े न पानी से खराब हो और न जमीन में लंबे समय तक रहने पर भी क्षतिग्रस्त हो। टेलीफोन का आविष्कार सचमुच एक ऐसा आविष्कार है जो मानवीय वैज्ञानिकता का अनोखा परिचय देता है। अब तो टेलिविजन का भी अवतरण हो चुका है। तार के अन्दर मानवीय वाणी और मानव का चित्र समाहित हो जाय और यह जड़ तार दूसरी ओर ठीक तरह प्रतिबिम्बित होता रहे, यह वास्तव में आश्चर्य की बात है। अब तो यह चीज बहुत साधारण हो गई है, पर जब इसका आविष्कार हुआ होगा, तब तो यह चमत्कार ही रहा होगा।

मैथून

ता० ४-१-५६ :

चितरंजन से ६ मील पर यह एक और भव्य स्थान है। यहां पर भी २८ करोड़ रुपये लगकर एक बहुत बड़ा बांध बना है। इस यात्रा में सबसे पहले तो दुर्गापुर का बांध आया था और अब दूसरा मैथून-बांध है। यहां पर भू-गर्भ में एक पावर हाउस संसार में अपने ढंग का अकेला होगा।

झरिया

ता० ६-१-५६ :

मैथून से बराकर, बरवा, गोविंदपुर तथा धनबाद होते हुए आज हम झरिया पहुँचे। झरिया तथा आसपास का यह सारा क्षेत्र कोलियारी-क्षेत्र है। यहां से लाखों टन कोयला सारे देश को जाता है। यह काला कोयला जहां भी जाता है, पीछे सोने को घसीट कर लाता है। आज औद्योगिक-युग में कोयले का कितना महत्व बढ़ गया है। गांवों का यह देश अब शहरों की ओर प्रयाण कर रहा है और इस केन्द्रीकरण का यह परिणाम है कि शहरों के लोग लकड़ी से भोजन नहीं पका सकते। इस तरह कुछ विशिष्ट स्थानों पर, जहां कोयला पैदा होता है, सारे देश को निर्भर रहना पड़ता है। औद्योगिक कारखानों के लिए तथा घरेलू उपयोग के लिए जब किसी कारणवश देश के एक कोने से दूसरे कोने तक कोयला नहीं पहुँच पाता, तब सब जगह कोयला महंगा हो जाता है और हाहाकार होने लगता है। पुराने छोटे छोटे घरेलू उद्योग-धंधे विकेन्द्रित ढंग से चलते थे, इसलिए उन उद्योगों पर कोई संकट नहीं आता था।

इसी प्रकार जंगल की सर्व-सुलभ लकड़ी से भोजन पकता था, इसलिए उसकी भी कोई समस्या नहीं थी।

खैर यह झरिया-धनबाद-कतरास-क्षेत्र, कोयले का खजाना है और व्यापार के निमित्त राजस्थान तथा विशेष रूप से गुजरात के व्यापारी यहां पर बसे हुए हैं। इनमें जैन-श्रावक भी काफी संख्या में हैं।

झरिया में पूज्य मुनिश्री प्रतापमलजी म० और राजेन्द्र मुनि जी महाराज से भेंट हुई। झरिया हमारे लिए दिशा-निर्णय का स्थान है। आगे किस ओर प्रस्थाब किया जाय? इसका निर्णय यहां पर करना है। काफी विचार-विमर्श हुआ। श्री संघ तो स्वाभाविक रूप से यह चाहता ही था कि हम एक वर्ष इसी क्षेत्र में विचरण करे, साथ ही मुनिश्री प्रतापमलजी म० ने भी यह परामर्श दिया कि हम सातों मुनि यकायक यह पूर्व-भारत का क्षेत्र छोड़कर चले जांय, यह ठीक नहीं होगा, इसलिए इस वर्ष इधर ही रहना श्रेयस्कर है। साथ ही हमारे साथी मुनि श्री बसतीलालजी म० का स्वास्थ्य भी बहुत लंबे प्रवास के लिए अनुकूल नहीं था। इसलिए सर्व-सम्मति से इसी निर्णय पर पहुँचे कि इस वर्ष इसी क्षेत्र में विहरण करना है।

अब हम लंबा प्रवास चालू न करके यहीं आस पास के गांवों में घूमने के लिए प्रयाण करेंगे। इस ओर जो जैन-समुदाय है, उसे साधुओं का संपर्क कचित् ही उपलब्ध होता है, इसलिए यहां घूमना आवश्यक भी हो गया है।

कतरास गढ़

ता० ३-३-५६ :

हम इस बीच भागा बलिहारी कोलियरी, करकेन, खरकरी कोलियरी आदि स्थानों में भ्रमण करते रहे। इन क्षेत्रों में कलकत्ता अहमदाबाद, राजस्थान आदि से भी दर्शनार्थी बराबर आते रहे। जगह-जगह हमें नित नया आनन्द और उल्लास का वातावरण मिलता था। प्राय सर्वत्र रात्रि-प्रवचन, सत्संग, विचार-विमर्श और छोटी-बड़ी सभाओं का आयोजन होता था। कुसंस्कारवश गरीबों, ग्रामीणों और छोटी जाति के लोगों में भी बहुत से दुर्गुण घर कर गए हैं। जैसे कि शराब तो प्राय हर गांव में अपना अड्डा जमाये हुए है। हालांकि हम मुनि अपनी आत्म साधना के पथ पर ही अग्रसर होते हैं, फिर भी जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज की क्या दशा है, इसका विचार करना भी हमारा कर्तव्य है। शराब एक नशीली, उत्तेजक और मादक चीज है। यह ज्ञान देहात की आम जनता तक पहुँचाना हमारे पाद विहार का खास मिशन है। हम जहां भी जाते हैं, वहां लोगों को यह समझाते हैं कि शराब से समाज में सात्विकता का विनाश होता है। और तामसिक वृत्तियां बढ़ती हैं। फलस्वरूप मुनियों के उपदेश से लोग प्रभावित होते हैं और शराब का परित्याग करते हैं। इसी प्रकार दूसरे दुर्गुणों तथा कुसंस्कारों के लिए हम, लोगों को समझाते हैं। सामाजिक जीवन की सात्विक प्रतिष्ठा के लिए यह आवश्यक है कि समाज में अधिक से अधिक सद्गुणों का विकास हो और दुर्गुणों का निरसन हो।

हम अपने पाद-विहार के दौरान में ता० १८-२-५६ को भी यहां पहुँचे थे और तब १२-१३ दिन यहां रहकर गये थे। अभी फिर

२ दिन के लिए यहां आये हैं। यह एक छोटा ही, पर सुन्दर नगर है। श्रावक-समुदाय में भी बहुत उत्साह है एक जैन शाला चलती है जिसमें काफी विद्यार्थी ज्ञानार्जन करते हैं। पिछली बार जब हम आये थे, तब यहां के छात्रों के सामने २, ३ बार व्याख्यान दिया। आज छात्र जीवन उच्छृंखलता की ओर बढ़ा जा रहा है। यह संपूर्ण देश के लिए बहुत दुर्भाग्य की बात है। आज के विद्यार्थी ही कलके राष्ट्र-नायक बनने वाले हैं। कल का व्यापार, शासन, व्यवस्था इत्यादि सब संभालने के लिए हमें अपने विद्यार्थियों का समुचित पोषण तथा विकास करना होगा। विद्यार्थियों की जो हीन अवस्था है, उसके लिए ज्यादा तो आज की शिक्षा-पद्धति जिम्मेदार है। आजादी प्राप्त कर लेने के बाद भी शिक्षा-पद्धति गुलाम भारत की ही चल रही है, तब भला विद्यार्थियों में स्वातंत्र्य-शक्ति का तथा चेतना का उदय कहां से हो? यदि विद्यार्थियों के भविष्य को सुरक्षित करना है तो तुरंत शिक्षा पद्धति में सुधार करना चाहिए और आध्यात्मिक-स्तर को बुनियाद में रखकर शिक्षा पद्धति का निर्माण करना चाहिए।

लाल बाजार

ता० १६-३-५६ :

इस क्षेत्र में एक जाति है—'सराक'। यह शब्द 'श्रावक' से बना है। इस जाति के रीति रिवाज देखने से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि किसी युग में ये लोग जैन श्रावक थे। पर साधु-संपर्क के अभाव में धीरे धीरे इनके संस्कार बदल गये और आज इन्हें इस बात का भान भी नहीं है कि ये जैन धर्म को मानने वाले 'श्रावक' हैं। इस जाति में काम करने की जरूरत है। भूले भटके पथिकों को सन्मार्ग पर लाना कितना बड़ा काम है, इसका अनुमान सहज

ही लगाया जा सकता है। गांव गांव में घूमना, किस गांव में कितने 'सराक' हैं, इसका पता लगाना और फिर उनका ठीक तरह से संगठन करके उनमें जैनत्व का संस्कार भरना बहुत आवश्यक है। यदि ऐसा करने में कुछ साधुओं को अपना काफी समय लगाना पड़े, तो भी लगाना चाहिए। यदि इस जाति का ठीक प्रकार से संगठन हो जाय और इनमें भली भांति काम किया जा सके, तो निश्चय ही हमें हजारों घर मिलेंगे। इन हजारों घरों के जैन बन जाने से जिस बिहार में आज जैन धर्म को मानने वाले मूल निवासी नगण्य संख्या में ही हैं उस बिहार में तथा बंगाल में भी हजारों जैन धर्मावलम्बी हो जायेंगे। इस प्रकार इस क्षेत्र में फिर से धर्मोदय हो सकेगा।

करकेन, धनबाद, गोविन्दपुर, बरवा, श्यामा कोलियारी, बराकर, आदि गांवों में हम इन दिनों में घूमे। आज लाल बाजार में हैं। यहां 'सराक' जाति के १२ घर हैं। कई अच्छे कार्यकर्ता भी हैं। यहां से हम कुछ प्रचार कार्य आरंभ करने जा रहे हैं। 'सराक' जाति में विशेष रूप से कुछ काम हो सके, यह उद्देश्य है। कुछ विशिष्ट प्रकार की पुस्तकें भी तैयार की गई हैं। अच्छा परिणाम आयेगा ऐसी उम्मीद है।

जे. के. नगर

ता० २१-२-५६ :

यह औद्योगिक क्रांति का युग है। सारा संसार औद्योगिक विकास की ओर भागा जा रहा है। जो देश औद्योगिक क्षेत्र में आगे बढ़ जाता है वह सारे संसार में अपना वर्चस्व जमा लेता है। आज योरोप तथा अमेरिका जैसे पश्चिमी देश इसीलिए इतने प्रगति

शील माने जाते हैं, क्योंकि वहां औद्योगिक-क्रांति चरितार्थ हो चुकी है। एशिया और अफ्रीका के देश अभी तक इसीलिए पिछड़े हुए माने जाते हैं, क्योंकि यहां पर विकसित और बड़े उद्योगों का अभाव है। ये पिछड़े देश पश्चिम की राह पर आगे बढने के लिए उतावले हैं और हर प्रकार से उनकी नकल करते हैं। खान-पान वेष-भूषा रहन-सहन सब में आज पश्चिम की नकल की जारही है। सच पूछा जाय तो एशिया और अफ्रीका के लोगों के लिए पश्चिम के लोग देवता बन गये हैं। इसीलिए आज भारत भी पश्चिम की नकल करने में ही अपने को धन्य भाग्य समझ रहा है। जहां भी देखिए. वह अपनी प्राचीन भारतीय संस्कृति की परम्पराओं को तोड़-मरोड़ कर नई भौतिक-सभ्यता को प्रश्रय दे रहा है। नई दिल्ली जैसे शहरों में तो ऐसा लगता ही नहीं कि हम भारत में हैं। वहां की फैशन और औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप आई हुई सभ्यता को देखकर ऐसा ही लगता है कि यह कोई पश्चिमी देश का बड़ा शहर है।

पर आज वे देश, जहां औद्योगिक-क्रांति हो चुकी है और जहां फैशनावतार हो चुका है, बहुत चिन्तित हैं। क्योंकि विज्ञान के सहारे पर उन्होंने बड़े बड़े कारखाने तो खड़े कर लिये, सामान का उत्पादन भी खूब करते हैं, पर उस सामान को खपाने के लिए बाजार नहीं मिल रहा है। जिन दिनों में चंद देशों के पास ही बड़े बड़े कारखाने थे, उन दिनों में वे देश बाहर के देशों से कच्चा माल मंगाते थे, और पक्का माल खूब ऊंचे दामों पर दूसरे देशों को बेच देते थे। इस तरह छोटे और अविकसित देश इन बड़े देशों का माल खपाने के लिए अपनी मंडियां और अपना बाजार उपलब्ध करते थे। पर आज इन छोटे देशों में भी कारखाने खुलने लगे हैं। ये छोटे देश अब स्वयं अपने यहां माल बनाकर बाहर भेजना चाहते हैं। विदेशी मुद्रा की आवश्यकता आज प्रत्येक देश

को है। इसलिए कच्चा माल बाहर न भेजकर बड़े कारखानों में उसे पक्का बनाना तथा अन्य देशों को वह माल भेजकर विदेशी मुद्रा कमाना आज सभी देशों का लक्ष्य है। यह विषम स्थिति बड़े उद्योगों के कारण आई है। साथ ही इन बड़े उद्योगों ने बेकारी को भी प्रश्रय दिया है। जो काम १०० आदमी मिलकर करेंगे वह काम मिल में १० आदमी कर सकते हैं। इस तरह उत्पादन बढ़ेगा, उत्पादन की आमदनी एक आदमी के पास जाएगी और अधिक लोग बेकार होंगे। एक ही साथ अनेक दोष हैं। पर कहने का अर्थ यह नहीं है कि बड़े उद्योग हों ही नहीं। केवल उनपर नियन्त्रण रखने की आवश्यकता है। कुछ बड़े उद्योगों के अभाव में तो देश की अर्थ व्यवस्था में और संसार की अर्थ व्यवस्था में संतुलन ही नहीं रह जाएगा।

जे के नगर एक औद्योगिक-नगर है। एल्युमिनियम का कारखाना है। बहुत अच्छी जगह है। आबोहवा भी स्वास्थ्यप्रद है।

कतरास

ता० २१-४-६१ :

पिछले महीने हम कतरास आये थे। एक माह १८ दिन में हमने जो प्रवास किया, वह मुख्य रूप से 'सराक' जाति में काम करने की दृष्टि से ही था। गांव, गांव में हमें खूब उत्साह मिला। सर्वत्र अत्यंत स्वागत हुआ। यहां सातत्य योग से काम करने की आवश्यकता महसूस हुई। क्योंकि एक बार जब मुनियों से संपर्क आता है तब तो लोगों को प्रेरणा मिलती है और जब वह संपर्क पुराना पड़ जाता है, तब फिर से संस्कार मिटने लगते हैं। इसलिए इस जाति में सतत काम चलता रहे, इसकी योजना बननी चाहिए

और काम को एक मिशन का रूप देकर उसे व्यवस्थित बनाना चाहिए।

कतरास में मुनि श्री जगजीवनजी म० तथा मुनि श्री जयंती लालजी म० का समागम हुआ। ये दोनों मुनि सांसारिक पक्ष में पिता-पुत्र हैं और बड़े अध्यवसाय के साथ पूर्व भारत में विचरण कर रहे हैं। जयंती मुनि के व्याख्यान बड़े हृदय स्पर्शी और बड़े सरल-सुबोध होते हैं। उनके व्याख्यान तथा उपदेश सुनकर आम जनता न केवल प्रसन्न और संतुष्ट ही होती है, बल्कि प्रभावित होकर सत्याचरण की प्रेरणा भी ग्रहण करती है।

कतरास में जैन उपाश्रय का अभाव था। पर यहां के लोगों के उत्साह ने और विशेष रूप से देवचन्द भाई जैसे प्राणवान लोगों के प्रयत्न ने उस अभाव को पूरा कर दिया है। एक भव्य-भवन का निर्माण हो चुका है।

ता० २२–४–६१ :

जैन उपाश्रय का उद्घाटन-समारोह टाटा के सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री नरभेराम भाई के हाथों से संपन्न हुआ। आस-पास के लोग काफी संख्या में उपस्थित थे।

ता० २३–४–६१ :

महावीर जयंती!

भगवान महावीर इस युग के एक क्रांतिकारी महापुरुष हुए हैं। यदि हम अहिंसा, सत्य, अध्यात्म और आत्मोन्नति का प्रशस्त-पथ दिखाने वालों का स्मरण करेंगे तो उनमें भ० महावीर का नाम

जाज्वल्यमान सूर्य की तरह चमकता हुआ दिखाई देगा। जिस युग में चारों ओर हिंसा, राज्य मत्ता और धार्मिक अंध विश्वासों का अंधेरा छाया हुआ था उस युग में भगवान महावीर ने शांति, प्रेम, करुणा, वैराग्य, अपरिग्रह, अहिंसा आदि सिद्धांतों का प्रचार करके कुमार्ग में भटकती हुई जनता को सद्बुद्धि देकर सन्मार्ग दिखाया।

यह महावीर जयंती हर वर्ष आती है। हर वर्ष इस पावन-पुनीत अवसर पर बडी बड़ी सभाओं का आयोजन होता है। पर सोचने की मुख्य बात यह है कि क्या हम महावीर के अनुयाई उनके बताये हुए मार्ग पर चलते है ? यदि महावीर-जयंती मनाने वाले महावीर के आदर्शां पर नहीं चलते, तो जयती मनाने का कोई सार नही।

कुछ लोग बाहर से ऐसे दीखते हैं मानो वे सचमुच महावीर के पद चिन्हों पर चलने वाले बारह व्रतधारी श्रावक है। शास्त्र की किसी भी उलझी हुई गुत्थी को वे सुलझा सकते हैं। सब जगह उनकी तारीफ भी होती है। वे निरन्तर ज्ञान ध्यान में व्यस्त दीख पड़ते हैं। उनका घर आगम ग्रन्थों, भाष्यों, टीकाओं आदि से भरा रहता है। सर्वत्र उनकी पूछ होती है। महावीर-जयंती जैसे अवसरों पर व्याख्यान देने के लिए उनको आमन्त्रित किया जाता है। सर्वत्र स्वागत होता है। मालाए पहनाई जाती हैं। उनका व्याख्यान सुनकर श्रोतागण मन्त्र-मुग्ध हो जाते हैं। तालियों की गड़गड़ाहट होती है।

पर यदि वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो उनके जीवन में सत्याचरण का प्रायः अभाव ही रहता है। सम्यग्ज्ञान, सम्यग् दर्शन तथा सम्यग् चरित्र रूपी रत्नत्रय या उनमे कहीं दर्शन नहीं

होता। यह सारा केवल वाक्-प्रपंच ही रहता है। देव, गुरु और धर्म की वास्तविक पहचान से रहित उनका यह पाण्डित्य खोखला ही होता है।

इसलिए महावीर जयन्ती आत्म चिन्तन का दिन है। इस दिन यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हम ऊपर के दिखावे में न उलझकर सचमुच महावीर के आदर्शों पर चलेंगे।

यहां पर महावीर-जयन्ती का खूब अच्छा आयोजन हुआ। हमने लोगों को उपरोक्त विचार समझाने का प्रयत्न किया। सायंकाल थोड़ी दूर पर स्थित खरखरी कोल्यारी पर महावीर-जयन्ती समारोह में भाग लेने के लिए मुनिगण शाम को ही चले गये।

अभी यहां पर जो आस-पास की विभिन्न कोलियारी है उन्हीं में हम विचरण करेंगे। इस क्षेत्र में अपने जैन भाई भी वड़ी सख्या में हैं। सब से सम्पर्क करना भी आवश्यक है।

करकेन्द

१–७–५६ :

समस्त जैन-समाज का यह आग्रह है कि हमें इस वर्ष का वर्षावास बिहार में ही करना चाहिए। यह बिहार-प्रान्त एक ऐतिहासिक प्रान्त है। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध की पावन-भूमि यह बिहार है। एक कवि ने बिहार प्रदेश का वर्णन करते हुए लिखा है—

"महावीर ने जहां दया का, दुनिया को सन्देश दिया।
जिस धरती पर बैठ बुद्ध ने, मानव का कल्याण किया॥

जहां जन्म लेकर अशोक ने, विश्व प्रेम था फैलाया ।
गांधीजी ने सत्याग्रह का, मन्त्र जहां पर बतलाया ॥
जहां विनोबा ने भूखों को, पंथ प्रेम का दिखलाया ।
लाखों एकड़ भूमि-यज्ञ में दान जहां पर मिल पाया ॥
ओ बिहार तुम पुण्य-भूमि हो, गंगा तुम में बहती है।
गण्डक-कोसी की विभीषिका भी तुम में ही रहती है ॥"

ऐसी ऐतिहासिक भूमि में जहां सम्मेद-शिखर, राजगृह, पावा-पुरी, वैशाली आदि स्थान भारत के अतीत की गौरव गाथा सुना रहे हों, रहने का सहज ही मोह होता है। उस पर भी भक्ति भरा आग्रह देख कर तो मन और भी पिघल जाता है।

झरिया, कोलियारी-क्षेत्र का एक प्रमुख केन्द्र है। यहां पर लोगों में भक्ति श्रद्धा भी बहुत है। मुनियों के लिए सभी प्रकार की अनुकूलताएं भी है। झरिया के भाइयों का अत्यन्त आग्रह है। इस लिए हमने इस वर्ष का चातुर्मास-काल झरिया में व्यतीत करने का निर्णय किया।

झरिया

ता० ३—७—५६ :

हम चातुर्मास करने के लिए झरिया पहुँच गये हैं। सभी लोगों में एक प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। इधर जैन मुनियों के चातुर्मास का अवसर ठीक वैसा ही है, मानों महीनों से भूखे किसी व्यक्ति को खीर-पूरी का भोजन मिल गया हो, इसलिए उत्साह स्वाभाविक है।

प्रथम सन्देश में ही हमने यह सन्देश दिया कि "आज जन-समाज में धर्म के प्रति और साधुओं के प्रति अरुचि उत्पन्न हो रही है। पर इस सम्बन्ध में गहराई से सोचने पर सहज ही यह ज्ञात हो जायगा कि इसका कारण चन्द स्वार्थी लोगों द्वारा धर्म का तथा साधु-वेष का दुरुपयोग करना ही है। अतः हम वास्तविक धर्म की जानकारी देकर लोगों की हिली हुई श्रद्धा को दृढ़ बनाना चाहते हैं। इस दिशा में जो भी प्रयत्न हो सकेगा वह हम इस चातुर्मास की अवधि में करेंगे।"

ता० २–८–५६ :

चातुर्मास सानन्द चल रहा है। धर्म प्रभावना अधिकाधिक विकासोन्मुख है। जैन जैनेतर सभी लोगों में वास्तविक धर्म के प्रति आस्था दृढ़ हो रही है। अन्धकार को मिटाने के लिए अन्धकार को न तो मारने की जरुरत है और न झाड़ु से साफ करने की। हजारों वर्षों से व्याप्त अन्धेरे को मिटाने के लिए बस, एक दीपक जला देना ही पर्याप्त है। उसी प्रकार अज्ञानान्धकार को मिटाने के लिए विवेक का दीपक जलाना ही पर्याप्त है। प्रवचनों में विभिन्न विषयों पर सन्तुलित रूप से विश्लेषण होता है। मेरा मुख्य कथन यही रहता है कि अपने विवेक को जागृत करो। यदि विवेक की आंखें खुली हैं तो किसी चीज की चिन्ता नहीं। पाप की जड़ अविवेक ही है।

शिष्य पूछता है :

कहं चरे, कहं चिट्ठे, कहमासे, कह सए ।
कह भुंजंतो भासंतो, पावकम्मं न बन्धई ?

द० अ० ४-७ गाथा

यानी—कैसे चलना, कैसे ठहरना, कैसे बैठना, कैसे सोना, कैसे खाना, कैसे बोलना, हे गुरुवर ! इसका मार्ग बताइये। ताकि पाप कर्म का बन्धन न हो।

गुरु उपदेश करते हैं :

जयं चरे, जयं चिट्ठे जयं मासे, जयं सए !
जयं भुंजतो भासतो, पावकम्मं न बन्धाई ?

द० अ० ४ ८ गाथा

यानी—यतना से अर्थात्—विवेक से चलो, विवेक से ठहरो, विवेक से बैठो, विवेक से सोओ, विवेक से खाओ, विवेक से बोलो, कोई भी काम विवेक और यतना पूर्वक करने से पाप-कर्म का बन्धन नहीं होता।

पर्यूषण पर्व !

ता० १०-९-५६ :

पूरे वर्ष में चातुर्मास एक ऐसा समय है, जिसमें साधु-संगति, व्याख्यान-श्रवण,त्याग-तपस्या आदि का विशेष अवसर मिलता है। चातुर्मास में भी पर्यूषण एक ऐसा समय है जिसमें मनुष्य अपने पापों को धोने एवं आत्मा को विशुद्ध बनाने की ओर सचेष्ट रहता है। पर्यूषण में भी संवत्सरी पर्व एक ऐसा दिन है, जिस दिन प्रत्येक धर्म श्रद्धालु अपनी आत्मा को अत्यन्त विनम्र एवं सरल बनाकर सभी वैर-विरोधों को भूल जाता है और भगवन् चिंतन अथवा आत्म-चिन्तन में लीन हो जाता है।

पर्यूषण पर्व के कारण यहां लोगों में कितना उत्साह है। नये उपाश्रय के प्रांगण में भव्य-पण्डाल बनाया गया। देखिये न, लोग

भाग भाग कर पर्यूषण पर्व की आराधना के लिए तैयारी कर रहे हैं। प्रभात फेरी से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सैंकड़ों व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया। दिन भर ज्ञान चर्चा, प्रवचन, स्वाध्याय प्रतिक्रमण आदि का कार्यक्रम रहा। गृहस्थ-जीवन संघर्षों का जीवन है। आदमी घानी के बैल की तरह गृहस्थी के कामों में व्यस्त रहता है। धर्म-ध्यान के लिए उसे समय ही नहीं मिलता। अतः पर्यूषण पर्व एक ऐसा समय है, जिस अवसर पर ८ दिन के लिए कोई भी गृहस्थ अपने धंधों से मुक्त होकर आत्म-निर्माण का पथ प्रशस्त कर सकता है।

तपस्या का महत्व जैन धर्म में बहुत ही विशिष्ट रूप से बताया गया है। आत्मा पर जो कर्म-बंधन दृढता से अपना साम्राज्य जमाये रहते हैं, उन बंधनों को जड़मूल से विनष्ट करने का एक मात्र साधन तपस्या ही है। इसलिए ये पर्यूषण के दिन आत्म-साधकों के लिए तपस्या के दिन होते हैं। यहां पर भी तपस्या की अच्छी योजना तीन दिन, चार दिन, पांच दिन, आठ दिन, नौ दिन, इस प्रकार की तपस्याएं और उपवास करके लोग पूरी तरह से सांसारिक कामों को छोडकर आत्म-चिन्तन में ही लीन हो जाने के लिए प्रयत्न शील रहे।

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ति में सव्व भूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥

मैं जगत के सभी प्राणियों से क्षमा याचना करता हूँ। साथ ही समस्त प्राणियों को मैं भी क्षमा करता हूँ। इस संसार में सबके साथ मेरा प्रेम है, मेरी मित्रता है, किसी के साथ वैर-विरोध तथा द्वेष नहीं है।

यह शुभ कामना प्रत्येक व्यक्ति सम्वत्सरी के पावन पुनीत प्रसंग पर व्यक्त करता है और अपने अंतरतम को विशुद्ध तथा निर्मल बनाता है।

झरिया एक कोलियारी क्षेत्र है। थोड़ी थोड़ी दूर पर अनेक कोलियारीज हैं और उनमें बहुत से जैन-श्रावक कार्य करते हैं। उन सभी ने पर्यूषण में भाग लिया है। ७ बार स्वामि वात्सल्य का भी आयोजन हुआ। स्वामि वात्सल्य समारोह में भी आस-पास के लोगों ने बड़ी संख्या मे भाग लिया।

ता० १६–११–५६ :

झरिया में चातुर्मास-काल पूरा करके आज यहां से विदा हो रहे हैं। चार महीने में जिनके साथ घनिष्ट संबंध आता है और जो साधु-संपर्क में निमग्न हो जाते हैं, वे इस विदा-काल में वियोगार्द्र हो जाते हैं। पर साधु निर्लिप्त रहते हैं और अपनी मंजिल की ओर प्रयाण करते हैं।

झरिया का चातुर्मास बहुत ही सफल रहा। एक नया क्षेत्र खुला। काम करने की नई दृष्टि मिली। सराक जाति में काम करने की प्रेरणा को बल मिला। चातुर्मास के दौरान में स्थानकवासी कान्फ्रेंस के प्रमुख श्री वनेचन्द भाई, कलकत्ता समाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री कानजी पानाचन्द, श्री गिरधर भाई, श्री त्र्यंबक भाई, श्री सेठ जयचन्दलालजी रामपुरिया आदि सज्जन आए। सभी ने यह महसूस किया कि इस क्षेत्र में जो काम हुआ है, वह महत्त्वपूर्ण है और इस काम को आगे बढाना चाहिए। कुल मिलाकर यह चातुर्मास बहुत सफल रहा और हमारे लिए प्रेरणादायक साबित हुआ।

सिंदरी

ता० २६-११-५६ :

झरिया से विदा होकर, भागा. दिगवाड़ी, होते हुए हम सिंदरी आये हैं। सिंदरी में बहुत बड़े पैमाने पर खाद का निर्माण होता है। खेती के लिए खाद उतनी ही आज आवश्यक मानी जाती है, जितनी आवश्यक मनुष्य के लिए रोटी है। पौधों को खाद में ही खुराक मिलती है। राष्ट्र के नेताओं की मान्यता है कि हिन्दुस्तान में खाद के उपयोग की बात बहुत कम लोग जानते हैं। इसीलिए यहां की जमीन से पर्याप्त उपज नहीं मिलती। यदि हिन्दुस्तान के लोग एक एकड़ में १५ मन धान पैदा करते हैं तो जापान जैसे देश के लोग खाद आदि के सहारे से ५० या ६० मन तक साधारणतः पैदा कर लेते हैं। वहां थोड़ी सी भी खाद व्यर्थ नहीं जाने दी जाती पर भारत में तो गोबर जैसे बहुमूल्य खाद को लोग जला डालते हैं।

सिन्दरी में वैज्ञानिक तरीकों से खाद का निर्माण किया जाता है। इस खाद से जमीन की ताकत घटती है, ऐसा कुछ वैज्ञानिकों का मत है और कुछ अर्थशास्त्री ऐसा भी कहते हैं कि यह खाद हिन्दुस्तान के गरीब किसानों के लिए बहुत महंगी पड़ती है। इसलिए इस खाद की उपयोगिता के बारे में अभी मतभेद है।

सरकार ने बहुत खर्च करके इस कारखाने का निर्माण किया है। यह देखा गया है कि जिन खेतों में यह खाद डाली गई उनमें उत्पादन की मात्रा काफी बढ़ी। हिन्दुस्तान कृषि-प्रधान देश है। इसलिए यहां की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि के विकास को प्राथमिकता दी गई है। यह ठीक भी है। कृषि के विकास पर ही भारत का विकास निर्भर है। यदि कृषि उन्नत ढंग की हो और

भारत के किसानों का जीवन स्तर उठे तो निश्चय ही देश भी, किसी भी देश का मुकाबला कर सकता है। पचवर्षीय योजनाए इस दिशा मे प्रयत्नशील है। देखें, कब मंजिल तक पहुँचते है।

महुदा

ता० ३-१२-५६ :

कल हम ताल गडिया मे थे। वहां एक विचित्र ही दृश्य देखा। 'कल्याणकारी राज्य' अच्छे कर्मचारियों के अभाव में और ईमानदार प्रशासकों के अभाव में न केवल 'अकल्याणकारी' बन जाता है बल्कि अभिशाप ही सिद्ध होता है। रेल्वे विभाग भ्रष्टाचार के लिए बहुत बदनाम है। उसका एक उदाहरण कल देखा। स्टेशन-मास्टर एव रेल गार्ड ने मिलकर जिस तरह से सार्वजनिक संपत्ति का अपहरण किया वह सचमुच इस देश की दयनीय अवस्था का एक नमूना है। जो काम सेवा के लिए और जनता की सुविधा के लिए चलाया जाता है, वही काम इस तरह जनता के लिए भार स्वरूप बन जाता है आजादी के बाद सरकारी कर्मचारियों में भयकर रूप से भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। घूंसखोरी तो मानों एक अधिकार ही बन गया है। कहीं भी जाइये, बिना घूस के कोई काम नही होता। कानून का पालन कराने वाली कचहरी तो घूस खोरी का सबसे बड़ा अड्डा है। यदि इसी प्रकार चलता रहा, तो यह देश कहा जाकर गिरगा, कुछ कहा नहीं जा सकता।

ताल गड़िया से ८ मील चलकर आज हम महुदा पहुचे। प्रातःकाल बड़ा सुहावना था। गुलाबी ठढ पड़ रही थी। सर्दी के दिनों मे प्रकृति भी अपने पूरे उभार पर रहती है। वर्षा समाप्त हो जाती है। खेतों में धान पक जाता है। कहीं कटाई चलती है। तो कहीं

खलिहान बिछे रहते हैं। ईख की फसल भी खूब बढ़ी हुई दीख पड़ती है। यह इतना सुहावना और मनोरम मौसम हमारी पदयात्रा के लिए भी बड़ा अनुकूल होता है। गरमियों में थोड़ी धूप तेज होने के बाद चलना कठिन हो जाता है। लेकिन सर्दियों में धूप भी बड़ी अच्छी लगती है।

यहां श्री प्रभाकरविजयजी म० से भेंट हुई। इसी तरह विहार-काल में जगह जगह विभिन्न संप्रदायों के मुनियों से मुलाकात होती रहती है। यह बड़े दुःख की बात है कि हमारे साधुओं में दूसरी संप्रदाय के साधुओं से संपर्क बढ़ाने की वृत्ति बहुत ही कम है। आज जैन-समाज अनेक छोटे-बड़े टुकड़ों में विभाजित होगया है। इतना ही नहीं ये विभिन्न संप्रदायें एक दूसरे के विरोध में अपनी ताकत खर्च करती हैं। परन्तु हमें सोचना चाहिये कि हम सब एक ही महावीर के अनुयाई हैं। फिर आपस में इतना विरोध क्यों? अलग अलग सम्प्रदायें हैं, तो भले ही रहें। पर आपस में सबको प्रेम रखना चाहिये। जैन धर्म की आधार-शिला प्रेम, अहिंसा और अनेकान्तवाद पर टिकी है। यदि अनेकान्तवाद के प्रतिपादक जैन धर्मावलम्बी खुद आपस में झगड़ते रहेंगे तो कैसे काम चलेगा?

मैं तो बराबर यही सोचता रहता हूँ कि हमें अपने विचारों के भेद को सामने न लाकर तथा विरोध और झगड़े की बातों को प्रोत्साहन न देकर प्रेम का वातावरण बनाना चाहिए। इसी से हमारे समाज का विकास होगा और दुनियां को हम जैनधर्म का रास्ता दिखा सकेंगे। यदि आपस में लड़ने में ही अपनी शक्ति खर्च कर देंगे तो दुनियां को क्या मार्गदर्शन करायेंगे?

बेरमो

ता० ३०–१–५७ :

आज ३० जनवरी है। वह भी ३० जनवरी की शाम थी। जिस प्रार्थना के लिए जाते हुए इस युग के महान अहिंसावादी महात्मा गांधी के सीने पर एक हिन्दू युवक ने संकुचित हिन्दुत्व की रक्षा के नाम पर गोली मार दी थी। अहिंसा और शांति का सारे संसार को मार्ग दिखाने वाला हिन्दुस्तान कभी कभी कैसे हिंसकवृत्ति के मनुष्य पैदा कर देता है। महात्मा गांधी ने देश को अहिंसक रास्ते से आजाद किया। देश की सेवा के लिये अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। उनको गोली से मार देने का दुस्साहस सचमुच कितनी भयंकर घटना थी। उस सारे दृश्य को याद करके हृदय कांप उठता है और रोम रोम प्रकंपित हो जाता है।

रात्रि को महात्मा गांधी की निधन तिथि मनाने के लिये एक सभा हुई मैंने इस प्रसङ्ग पर अपने विचार रखते हुए कहा कि "आज देश का प्रत्येक राजनीतिज्ञ और सामाजिक नेता महात्माजी का नाम लेता है। कांग्रेस सरकार तो कदम कदम पर गांधीजी की दुहाई देती है। दूसरी राजनैतिक पार्टियां भी गांधीजी का नाम रटती हैं। पर उनके सत्य और अहिंसा के आदर्शों पर चलने वाले कौन कौन हैं? यह गम्भीरता से सोचने की बात है।

इस देश के इतिहास को देखने से यह ज्ञात होगा कि यहां व्यक्ति को तो बहुत ऊंचा चढ़ाया गया, उसकी पूजा भी खूब हुई पर उसके आदर्शों का पालन करने में सदा ही उदासी बरती गई। यदि गांधीजी के साथ भी ऐसा ही हुआ,तो उनके साथ न्याय नहीं होगा।

वेरमो में मुनि श्री जयंतीलालजी म० के साथ भेंट हुई। यहां पर एक नवीन जैन स्थानक का भी उद्घाटन हुआ। उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिये आस पास के अनेक गांवों के सज्जन आये। कलकत्ता प्रसिद्ध जैन व्यापारी श्री कानजी पानाचंद ने उद्-घाटन-रस्म अदा की और मणीलाल राघवजी सेठ ने सभा की अध्यक्षता की।

बड़गाँव

ता० ३-२-५७ :

हम अब बिहार के हजारी बाग तथा रांची जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में से गुजर रहे हैं। पहाड़ी क्षेत्र और जंगली क्षेत्र प्राकृतिक रमणीयता में अपना सर्वोत्कृष्ट स्थान रखते हैं। जंगली रास्ते भी बड़े डरावने होते हैं। कहीं पगडंडी तो कहीं गाड़ी का रास्ता। चारों ओर सुनसान। हरी भरी उपत्यकाएं। ऊंचे ऊंचे पेड़, घनी झाड़ियां कांटे, कङ्कर, पत्थर! यह इस रास्ते की सौन्दर्य-सुषमा है।

हमारा देश धर्म-प्रधान देश है। लेकिन दुर्भाग्य वश धर्म, कर्म के साथ कुछ रूढियां भी चल पड़ी। बलि प्रथा भी एक ऐसी ही धार्मिक कुरूढ़ि है। लोग भ्रम-वश ऐसा मानते हैं कि देवी देवता को बलिदान की जरूरत है। वे किसी के बलिदान से प्रसन्न होते हैं। भ० महावीर के युग में तो यह बलि प्रथा बहुत ही प्रचलित थी इसीलिये भगवान ने इसका घोर विरोध किया। आज तो यह प्रथा बहुत कम रह गई है। फिर भी अनेक जातियों में इस प्रथा को अभी भी मान्यता दी जाती है। ऐसा ही बड़गांव में भी होता है। मैंने जनता को बलिप्रथा को बन्द करने के लिये समझाते हुए अपने व्याख्यान में कहा—

"सव्वे जीवावि इच्छंति जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणवहं घोरं निग्गथा वज्जयंतिण ॥
द० अ० ६. ११ गाथा

अर्थात्—सब जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। अत. किसी भी जीव का प्राणापहरण करना पाप है। कोई यदि ऐसा समझते हों कि देवी-देवता किसी जीव के प्राणापहरण से प्रसन्न होते हैं, तो वे निरी भ्रमणा में हैं। आप जब किसी को जिला नहीं सकते तब आपको इसका क्या अधिकार है कि किसी को मारें। यदि देवी को भोग ही देना है तो आप अपना भोग क्यों नहीं देते। बेचारे निरीह पशुओं का, जो बोल नहीं सकते, अपना दुख दर्द प्रगट नहीं कर सकते, भोग चढ़ाकर यदि आप पुण्य कमाना चाहते हैं तो यह सर्वथा निन्दनीय एव अवांछनीय है। इस व्याख्यान को सुनने के बाद अनेक भाइयों ने यह प्रतिज्ञा ली कि वे "अब किसी भी निमित्त से किसी भी मूक प्राणी की हत्या नहीं करेंगे। यदि देवी देवताओं की पूजा का सवाल आयेगा तो वहां भी अहिंसक मार्ग का अनुसरण करेंगे।"

इस प्रकार बड़गांव में यह एक बहुत ही अच्छा काम हो गया।

अरगड़ा

ता० ७–२–५७

रास्ते में विहार करते हुए हमें आज सरकस वालों का एक काफिला मिला। हमने देखा कि मानव अपने तुच्छ मनोरञ्जन के लिए और निकृष्ट स्वार्थ पूर्ति के लिये किस प्रकार पशुओं का शोषण करता है। बलि प्रथा में तो पशु को मार दिया जाता है पर इस

सरकस में तो जिन्दा पशुओं को मारपीट के सहारे इस तरह से वन्दी बनाया जाता है और इस तरह से उन्हें तंग किया जाता है कि स्मरण करते ही हृदय करुणा से भर जाता है। इसी प्रकार अजायबघरों और चिड़ियाघरों में भी मानव मनोरन्जन के लिए पशुओं को वन्दी बनाया जाता है। खुले विचरण करने वाले पशु सीखचों में बन्द होजाने के बाद ऐसा ही महसूस करते हैं, मानों उन्हें गिरफ्तार करके जेल में रख दिया गया है। ऐसी स्थिति में यह मानने को हम बाध्य हो जाते हैं कि मानव अत्यन्त स्वार्थी है। वह अपने निकृष्ट और नगण्य स्वार्थों की पूर्ति के लिए चाहे जैसा जघन्य कर्म करने को तैयार हो जाता है। कई देशों में बैलों को लड़ाया जाता है। भैंसों का खेल किया जाता है। घोड़ों को मनोरंजन के दांव पर लगाया जाता है। गैंडों का और शेरों का शिकार भी बहादुरी के प्रदर्शन का और मनोरंजन का एक साधन मान लिया है जब हम यह कहते हैं कि मांस खाने की प्रवृति पशु के साथ मानव का घोर अत्याचार है, तब मानव समाज की खाद्य समस्या का तर्क उपस्थित कर दिया जाता है पर मात्र मनोरजन के लिये पशुओं पर होने वाले अन्याय को देखकर सहज ही यह भेद खुल जाता है कि मनुष्य केवल अपनी जिव्हा के स्वाद के लिये और अपनी इन्द्रिय शक्ति को बढ़ाने के लिये ही मांस का सेवन करता है।

कुल मिला कर हमें अब यह तय करना होगा कि इस संसार में पशुओं को जीने का हक है या नहीं और मानव के साथ पशुओं का क्या सम्बन्ध रहे। क्योंकि पशु अपने अधिकारों की मांग नहीं कर सकता और वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरोध में आवाज नहीं उठा सकता इसलिये उस पर मानव अपनी मनमानी करता रहे यह मानवता के भाल पर कलंक का टीका है और अहिंसा वादियों के लिये लज्जा की बात है।

इस सम्बन्ध में गहराई से विचार होगा तो आज दवाओं के लिये अथवा वैज्ञानिक प्रयोगों के लिये होने वाला बन्दरों का निर्यात और उनका संहार तथा इसी तरह की अन्य प्रवृत्तियाँ स्वतः बंद हो जाएँगी।

रांची

ता० १४-२-५७ :

अब हम बिहार के एक सिरे पर पहुँच गए हैं। यह बिहार की ग्रीष्म कालीन राजधानी है। जब यहां का राज्य अंग्रेजों के हाथ में था, तब उन्होंने प्राय हर एक प्रान्त में कुछ ऐसे हिल स्टेशन बनाये और गर्मी के दिनों में सारा काम-काज स्थल-भूमि से उठाकर पर्वतीय भूमि में ले जाने का कार्यक्रम बनाया। क्योंकि उन्हें हिन्दुस्तान का धन अपने ऐश-आराम पर खर्च करना था, एवं यहां की गरीब हालत के लिए वे चिन्तित नहीं थे, इसलिए स्वराज्य के पहले यह सब चलता रहा। पर आश्चर्य है कि स्वराज्य के बाद भी जब कि देश के निर्माण के लिए धन की आवश्यकता है, हमारे राज्याधिकारियों एवं शासकों को राजधानी परिवर्तन करने में होने वाला लाखों का खर्च कैसे स्वीकार्य है?

इसके अलावा भी ग्रीष्म काल में अधिकांश सरकारी सभाए ऐसे पर्वतीय स्थानों पर होती हैं। सरकारी अफसरों के लिए दोनों ओर चांदी बनती है। उन्हें हिल स्टेशन पर घूमने का कोई खर्च नहीं करना पड़ता, भत्ता भी मिलता है और सरकार का तथा कथित काम भी पूरा हो जाता है। पर मुझे लगता है कि इस देश के लिए इस तरह की फिजूल खर्च और आराम परस्त प्रवृत्ति खतरनाक एवं घातक है।

रांची जैसे क्षेत्रों में इसाई मिशनरीज का काम भी खूब चलता है। इसाई मिशनरीज के काम को देखने के दो पहलू हैं। एक, उनकी सेवा-भावना और दूसरी उनकी धर्म परिवर्तन कराने की भावना। मिशनरीज के लोग आदिवासी गांवों में जाकर जिस प्रकार सेवा का काम करते हैं. लोगों की देख भाल, चिकित्सा, शिक्षा, सफाई आदि पर ध्यान देते हैं। वह सचमुच उल्लेखनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। पर वे इस सेवा के माध्यम से लोगों को इसाई धर्म में दीक्षित करते हैं, यह किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता।

रांची एक बहुत सुन्दर नगर है। स्वास्थ्य के लिए यहां का जलवायु बहुत अनुकूल है। यहाँ पर मस्तिष्क के रोगियों के लिए भी एक बहुत अच्छा चिकित्सालय है। श्वेताम्बर, दिगम्बर मिलाकर जैन श्रावक भी काफी संख्या में हैं। पहाड़ी सौन्दर्य और प्राकृतिक सुषमा वर्णनातीत है। टेढ़ी मेढ़ी बल खाती सड़कें नागिन सी जान पड़ती हैं। पर आस पास के गांवों में गरीबी बहुत है। आदिवासी महिलाएं पीठ पर बच्चों को बांधे हुए काम करते दीख पड़ती हैं।

विकास विद्यालय

ता० २६–२–५७ :

रांची से हमने राजगृह की ओर प्रयाण करते समय आज यहां पड़ाव डाला। यह विद्यालय राँची की उपत्यकाओं में इतना मनोहारी लगता है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

आजादी के बाद देश का विकास-कार्य करने वाले युवकों की एक बहुत बड़ी सेना चाहिए। इस सेन[illegible] [illegible]कास कार्य का सिद्धान्त पद्धति और कार्यक्रम [illegible]ाकर दर्[illegible]

लिये देश भर में सरकार ने कुछ चुने हुये प्रमुख स्थानों में इस तरह के विकास विद्यालय स्थापित किये हैं। यहां से प्रशिक्षण प्राप्त करके ये विद्यार्थी गांवों में फैल जावेंगे और जन सेवा तथा जन विकास का काम करेंगे।

यहां प्रशिक्षण भी विविध विषयों का दिया जाता है। खेती के उन्नत तरीके, शिक्षा, चिकित्सा आदि का स्वस्थ-विकास, पशु पालन, ग्रामोद्योग आदि का प्रचार तथा इसी तरह की अन्य सामाजिक प्रवृत्तियां गांव गांव में सिखाने की शिक्षा ये विद्यार्थी ग्रहण करते हैं।

हजारी बाग

ता० ४–३–५७ :

रांची पहाड़ पर है और हजारी बाग तलहटी पर। टेढ़ी मेढ़ी सड़क इस तरह से घूमती हुई उतरती है कि देखते ही बनता है। पूरा रास्ता हरा भरा जंगल का है। कहीं कहीं जंगली फूलों की शोभा भी अनिर्वचनीय है। जगह जगह जल स्रोत हैं। झरने बह रहे हैं। तालाब हैं। बीच बीच में छोटे छोटे गांव हैं। चारों ओर घन घोर जंगल फैला हुआ है। ऐसे बीहड़ रास्तों से चलने में भी कितना आनन्द आता है। सरकार ने ऐसे बीहड़ प्रदेश में भी डाक बंगले काफी संख्या में बना रखे हैं। स्कूल भी बीच बीच में मिलते रहते हैं। इसलिए ठहरने की कोई दिक्कत नहीं आती।

हजारी बाग जिले का शहर है। लेकिन सफाई आदि की दृष्टि से यहां की नगर पालिका उदासीन ही है, ऐसा भान हुआ। वैसे हिन्दुस्तान में आम तौर से सफाई की तरफ उपेक्षा ही बरती जाती है। पर यहां तो काफी गन्दगी देखने को मिली। धर्मशाला आदि की

व्यवस्था का भी अभाव ही दिखाई दिया। लेकिन दिगम्बर जैन भाइयों के ७० घर हैं। प्रायः सभी बहुत अच्छे सज्जन और भावना शील हैं।

विहार के कई नगरों में अखिल विश्व जैन मिशन का अच्छा काम है। कई कार्यकर्ता बहुत दिलचस्पी के साथ इस काम में लगे हैं। जैन मिशन ने विदेशों में भी जैन धर्म के प्रचार का अच्छा काम किया है। पद्मा गेट में राज्य रानी श्रीमती ललिता राज्य लक्ष्मी ने उपदेश का लाभ लिया और नारी आदर्श ऊपर प्रवचन सुना। महारानी ने निरामिष भोजी रहने का व्रत स्वीकार किया। क्षत्रिय धर्म के सम्बन्ध में भी काफी विचार विमर्श एक घण्टे तक होता रहा।

कोडरमा बांध

ता० ७-३-५७ :

लगभग २६ मील के विस्तार में फैली हुई अपार जल राशि! उठती हुई लहरें! कल कल करता हुआ पानी। तीनों ओर पहाड़ियां। कितना मोहक है। स्वय प्रकृति ही कितनी सुन्दर है, उस पर यदि मानवीय कला का हाथ लग जाय, तो उसकी सुन्दरता में चार चांद लग जाते हैं। जल और बनस्पति ये दोनों चीजें तो प्राकृतिक समृद्धि के सबसे सुन्दर उपहार हैं। नदी, नाले, झरने, बावड़ी कूप, तालाब और समुद्र के रूप में जल का सौन्दर्य तथा जंगल, उपवन, खेत, बाग-बगीचे आदि के रूप में वनस्पति का सौन्दर्य सर्वत्र संसार में फैला हुआ है। जल और वनस्पति न केवल सौन्दर्य के स्रोत हैं बल्कि मानव जीवन के आधार भी हैं। यदि इस प्रकृति का योगदान मानव को न मिले, तो उसका जीवन ही असम्भव हो जाय।

कोडरमा बांध पर आकर हमने देखा कि जल में कितनी शक्ति है। कहीं कहीं तो यह जल सहारक रूप धारण करके मानव-समाज के लिए अभिशाप भी बन जाता है, पर यदि मानव इस प्रकृति के साथ अन्याय न करे, उसका केवल सदुपयोग मात्र करे तो यह प्रकृति उसके लिए शक्तिशाली मददगार बन जाती है।

इस विज्ञान युग में प्रकृति पर बहुत अन्याय हो रहा है। बड़े बड़े आणविक शस्त्रास्त्रों के प्रयोग से वायुमंडल दूषित किया जारहा है।, इसीलिए वर्षा आदि में अनियमितता आरही है और बाढ़, भूकप आदि का प्रकोप बढ़ता जारहा है। मानव को संयम से काम लेने पर ही प्राकृतिक जीवन का आनंद मिल सकेगा।

झूमरी तिलैया

ता० ८-३-५७ :

यह धरती जिस पर मानव बसता है, कितनी महान है। कितनी सहन शील है। भगवान महावीर ने कहा है—

"पुढ़वि समे मुणी हविज्जा"

अर्थात मुनि का इस पृथ्वी के समान गंभीर, धीर, सहनशील और उदार होना चाहिए। यह भूमि भूमा है। 'भूमा' यानी अनल्प! अल्प नहीं! यह सारी सृष्टि को अपने वक्ष स्थल पर धारण किये हुए है। यह सारे संसार के लिए अपना रस देकर अन्न उत्पन्न करती है। पहाड़ों, जगलों, नदियों और समुद्रों को भी इसी ने धारण किया है। इसको खोदने से पीने का मधुर जल प्राप्त होता है। यह धरती ही करोड़ों टन कोयला पैदा करके औद्योगिक समृद्धि को स्थिर रखती है। यह पृथ्वी यदि पेट्रोल पैदा न करे तो ससार

भर का यातायात और संचार क्षण भर में ठप्प हो जाय। कहीं इसको खोदने से तांबा, मिलता है, तो कहीं सोना और हीरे भी मिलते हैं। यह धरती क्या नहीं देती ?

झूमरी तिलैया को भी इस धरती ने एक विशिष्ट वरदान दिया है। यहां आस-पास के क्षेत्र में 'अभ्रक' नाम का एक मूल्यवान खनिज पदार्थ उपलब्ध होता है। इस खनिज पदार्थ ने लाखों मनुष्यों को आजीविका दी है और साधारण व्यक्ति भी इस 'अभ्रक' के व्यापार से करोड़पति बन गये हैं। ऐसी जगह है झूमरी तिलैया।

यहां एक बहुत सुन्दर दिगंबर जैन मंदिर है। दि० जैनों के करीब १०० घर हैं। बहुत अच्छी जगह है।

गुणावा

ता० ११-३-५७ :

कहते हैं कि भगवान महावीर के प्रधान शिष्य और प्रथम गणधर गोतमस्वामी का निर्वाण इसी स्थान पर हुआ था। जहां जैन धर्म के २४ वें तीर्थङ्कर और इस युग के महान अहिंसोपदेष्टा भगवान महावीर का निर्वाण हुआ, वह स्थान, पावापुरी, माना जाता है। लेकिन इतिहास वेताओं की मान्यता है कि पावापुरी (पंपापुरी) यह नहीं किन्तु गोरखपुर जिले में विद्यमान है। यहां से १२ मील दूर है। गौतम स्वामी को भगवान महावीर ने अंतिम दिन, अपने से दूर भेज दिया था। इस दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक स्थान है ! यहां महावीर प्रभु भी ठहरा करते थे।

पावापुरी

ता० १३-३-५७ :

यहां आते ही सारी स्मृतियां भगवान महावीर के जीवन पर चली जाती हैं। यह वही स्थान है जहां कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के दिन भगवान महावीर निर्वाण पद को प्राप्त हुए थे। जहां भगवान निर्वाण प्राप्त हुए थे, वहां एक जल मन्दिर बना हुआ है। चारों ओर कमल युक्त तालाब और बीच में स्वच्छ स्फटिक की तरह चमकता हुआ संगमरमर का मन्दिर।

यहां श्वेताम्बर और दिगंबर समाज की ओर से अलग अलग मन्दिर तथा यात्रियों के लिए ठहरने का अलग अलग सुन्दर धर्मशाला का प्रबंध है।

इसके अलावा यहां एक नई चीज का निर्माण हुआ है। श्वेताम्बर-मूर्तिपूजक समाज के प्रभाव शाली आचार्य श्री रामचन्द्र सूरि की प्रेरणा से जहां भगवान का समवसरण हुआ था वहां, आरस पत्थर का ७५ फीट ऊंचा एक समवसरण बनाया गया है। अशोक वृक्ष के नीचे भगवान की मूर्ति है और जिधर से भी देखिए उधर से मूर्ति दिखाई देती है। यद्यपि हम मूर्तिपूजा को महत्व नहीं देते, गुण पूजा और भाव पूजा का ही विशिष्ट महत्त्व है, पर स्थापत्य-कला की दृष्टि से यह सुन्दर कृति है।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा, दीपावली के दिन यहां पर जैन समाज के हजारों व्यक्ति तीर्थ यात्रा के निमित्त से आते हैं और भगवान महावीर को अपनी श्रद्धाञ्जलियां अर्पित करते हैं। यह दृश्य देखने लायक होता है।

जिस युग में चारों ओर हिंसा का कलुषित वातावरण छाया हुआ था, और जब मानव का हृदय दया, प्रेम, करुणा और सत्य से विचलित हो रहा था, तब भगवान महावीर ने राज-पाट, घर-द्वार, सब कुछ छोड़कर जन-कल्याण के लिए तथा सत्य और अहिंसा का प्रचार करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया था। उसी तरह आज भी सारा संसार हिंसा के दावानल में झुलसता जा रहा है। इसलिए हम सब लोगों का, जो महावीर के अनुयाई हैं, यह परम कर्त्तव्य है कि उनके उपदेशों को जन जन तक पहुँचाने के लिए अपना जीवन लगादें।

राजगृह

ता० १५–३–५७ :

जैन-शास्त्रों में स्थान स्थान पर राजगृह का उल्लेख मिलता है। भगवान महावीर के युग में राजगृह प्रमुख धर्म केन्द्र था और यहां वे बार बार आया करते थे। राजगृह के परित: पांच ऊंची ऊंची पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों पर जाने के लिए रास्ता भी बना हुआ है। ऊपर श्वेताम्बरों और दिगंबरों के मंदिर हैं। इन मंदिरों की परिक्रमा करना प्रत्येक जैन-तीर्थ-यात्री के लिए आवश्यक माना जाता है, इसलिए जो यात्री पैदल ऊपर तक नहीं जा सकते, वे डोली में बैठकर ऊपर जाते हैं। पांचवें व चौथे पहाड़ के नीचे सुवर्ण मन्दिर है। और उसी के आगे एक मणि मन्दिर भी है, जिसे शालिभद्र का कूआं भी कहा जाता है।

राजा बिंबिसार को बंदी बनाकर जिस बंदीगृह में रखा गया था, वह भी यहां पर ही है। उस युग के अनेक खंडहर अवशेषों के रूप में अब भी इतिहास के स्मृतिचिन्ह बनकर खड़े हैं। जिनको देखने से हमें इस बात का भान होता है कि हमारा अतीत कितना गौरव पूर्ण था।

राजगृह न केवल भगवान महावीर की साधना का मुख्य केन्द्र था,बल्कि महात्मा बुद्ध ने भी इसी स्थान को प्रधानतः अपनी ज्ञान आराधना का केन्द्र बनाया था। गृद्धकूट आज भी उस युग की कथाएं अपने में समेट कर खड़ा है, जहां महात्मा बुद्ध ने आत्म-चिंतन और जीवन शोधन के क्षण व्यतीत किये थे। इसीलिए यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय तीर्थ बन गया है। जापान, बर्मा आदि देशों ने अपने बौद्ध विहार यहां स्थापित किये हैं। सीलोन, थाइलेंड, तिब्बत चीन आदि विभिन्न देशों के यात्री बराबर यहां आते रहते हैं। सरकार ने भी उनके ठहरने का अच्छा प्रबंध किया है।

यहां श्वेताबर एवं दिगम्बर समाज की बड़ी बड़ी धर्मशालाएँ हैं। जहां प्रतिवर्ष हजारों यात्री आते हैं और इन ऐतिहासिक स्थानों की परिक्रमा करते हैं।

राजगृह न केवल जैनों और बौद्धों का तीर्थस्थान है बल्कि यहां वैष्णव-समाज का और मुस्लिम समाज का भी उतना ही मोल वाला है। इस प्रकार राजगृह एक समन्वय भूमि है। जहां जैन, बौद्ध, हिन्दू मुस्लिम, सभी का संगम होता है और सब एक दूसरे के प्रति आदर तथा प्रेम रखते हुए अपने अपने मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक चलते हैं।

राजगृह की प्रसिद्धि का एक कारण और भी है यहां गंधक जल के कई प्रपात हैं। गरम और शीतल जल के ये प्रपात स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभप्रद माने जारहे हैं, इसलिए प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति यहां आते हैं और इन प्रपातों में अवगाहन करके स्वास्थ्यलाभ करते हैं।

नालंदा

ता० २०-३-५७ :

राजगृह से ८ मील चलकर हम नालंदा आये। नालंदा प्राचीन बौद्ध युग में एक अत्युत्तम विश्वविद्यालय था। प्रमुख रूप से

पूर्णतः विकसित एक लघु नगर ही था। आज भी उसके अवशेष को देखने से सहज यह प्रतीत होता है कि उस युग में भी इस देश ने शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति कर ली थी। शिष्यों और गुरुओं के निवास-स्थान भी बहुत अच्छे ढंग के बने हुए हैं।

संस्कृति, कला, स्थापत्य, आदि सब क्षेत्रों में भारत बहुत प्राचीन काल से आगे बढ़ा हुआ है। इस बात के प्रमाण स्वरूप नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों के अवशेष हैं। इसी तरह हड़प्पा की खुदाई के बाद भी बहुत से ऐतिहासिक तथ्य सामने आये हैं। अजन्ता, एलिफेंटा, एलोरा आदि गुफाएं भी भारतीय कला का सच्चा प्रतिनिधित्व करती हैं।

बिहार सरकार ने 'नव-नालंदा-विहार' की यहां पर स्थापना की है। यह एक ऐसा विद्यापीठ है, जहां अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बौद्ध-दर्शन के अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था है। चीन, जापान, बर्मा, सीलोन, श्याम आदि विभिन्न देशों के बौद्ध भिक्षु यहां अध्ययन करते हैं।

हम जिस दिन पहुँचे उस दिन एक प्रतियोगिता का आयोजन था। प्रतियोगिता का विषय था—"बौद्ध धर्म और संस्कृति से आज के युग की समस्याएँ हल हो सकती है।" इस प्रतियोगिता में विभिन्न विश्व विद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। इसमें हम भी शामिल हुए।

दानापुर (पटना)

ता० १--४--५७ :

बिहार शरीफ और बख्तयार पुर होते हुए हम बिहार की राजधानी पटना में २६-३-५७ को पहुँचे तब से बांकीपुर, मीठापुर

आदि मुहल्लों में होते हुए आज दानापुर आये हैं। पटना बिहार की राजधानी है। पाटलिपुत्र के नाम से यह अति प्राचीन काल में विशिष्ट महत्त्व का नगर था। सम्राट् अशोक ने यहां से ही बौद्ध-धर्म के प्रचार का बिगुल बजाया था और करुणा, प्रेम एवं भ्रातृभाव का संदेश फैलाया था। जैन कथा-साहित्य में सेठ सुदर्शन की कथा बहुत प्रचलित है। जिन्होंने ब्रह्मचर्य की इतनी उत्कृष्ट साधना की थी कि उसके प्रभाव से शूली की सजा भी फूलों के सिंहासन के रूप में परिवर्तित हो गई। वे सुदर्शन यहाँ पर ही हुए। उनका यहाँ एक मन्दिर भी है। और भी कई दृष्टियों से पाटलिपुत्र का ऐतिहासिक महत्त्व है।

इस युग में भी पटना एक सुन्दर नगर है और आजादी के संग्राम में पटना एक प्रमुख केन्द्र रहा है। डा० राजेन्द्र बाबू जैसे आजादी-संग्राम के सेनानियों का पटना गढ़ था और सदाकत आश्रम जैसे स्थान आजादी के कार्यक्रमों का चक्रव्यूह रचने के लिए प्रसिद्ध थे।

पटना में खादी ग्रामोद्योग-भवन भी अपने अप्रतिम आकर्षण से विभूषित है। इसी तरह सर्वोदय आंदोलन का भी पटना प्रमुख केन्द्र है। श्री जयप्रकाशनारायण जैसे सर्वोदयी नेता पटना में ही रहते हैं। विद्या, साहित्य, संस्कृति, राजनीति आदि सभी दृष्टियों से पटना का अपना खास महत्त्व है।

आज दानापुर में बिहार प्रांत के वर्तमान राज्यपाल श्री आर० आर० दिवाकर भेंट करने के लिये आए। बातचीत के दौरान में हमने जैन इतिहास, जैनधर्म और जैन संस्कृति के संबंध में विस्तार से चर्चा की। हमने दिवाकरजी से कहा कि "आज यद्यपि भारत में

जैन अनुयाइयों की संख्या अल्प है, पर भारतीय संस्कृति, कला, और दर्शन के विकास में जैन विद्वानों तथा विचारकों का अभूतपूर्व योगदान रहा है।" "इस पर राज्यपाल महोदय ने अपनी स्वीकृति तथा सहमति जताते हुए कहा कि "वास्तव में भ० महावीर ने अहिंसा का जो विचार विश्लेषण किया वह अपने आप में अद्वितीय स्थान रखता है। सरकार ने भी इस ओर अब धीरे धीरे ध्यान देना प्रारम्भ किया है। वैशाली का पुनर्विकास एवं वहां प्राकृत जैन विद्यापीठ की स्थापना करके सरकार ने इस ओर कदम उठाया है।" राज्यपाल महोदय ने अपनी चर्चा के बीच कहा कि "आप जब पटना तक आगये हैं तो अब आपको वैशाली भी पधारना ही चाहिये। वहां जो काम हो रहा है, उसे आप देखें और आगे उस काम को किस ओर मोड़ना चाहिये यह भी सुझाएं।" श्री दिवाकर जी के तथा वैशाली संघ के अत्यन्त आग्रह के कारण हमने पटना से वैशाली की ओर जाने का निर्णय किया।

सोनपुर

ता० ८-४-५७ :

आज हम सोनपुर पहुँचे। सोनपुर गङ्गा के उत्तरीय तट पर है। गङ्गा भारत की प्रसिद्धतम नदियों में से एक है। इस नदी को हिंदू धर्म में बहुत महत्त्व दिया गया है और इस नदी के किनारे बड़े बड़े मुनियों ने तपस्या की है। एक कवि ने लिखा है—

> "गङ्गा जिसकी लहरों में, हुँकार जमाना भरता है।
> लाभों से मानव खुश जिसके, रौद्र रूप से डरता है॥
> गङ्गा जिसने मोह लिया है, भारत का सारा जीवन।
> बुला चुकी जो अपने तट पर, अहिन्दी लोगों को अनगिन

जिसके उद्गम से लेकर के, मिलने तक की सागर में।
परिख्यात है सरस कहानी, पूरे धरती अम्बर में॥
जिसने छूकर हरिद्वार को फिर यू पी सरमब्ज किया।
और इलाहाबाद पहुँच कर यमुना को निज प्यार दिया॥
अगर कानपुर की श्यामा को, गङ्गा ने आधार दिया।
तो काशी में तीर्थ रूप हो, भक्त जनों को प्यार दिया॥
उत्तर औ दक्षिण बिहार को दो भागों में बाट दिया।
पटना से भागलपुर होकर, मार्ग स्वय का छाट लिया॥
गुजरी फिर बगाल भूमि से, खाड़ी का पथ अपनाया।
इतने सघर्षों से लड़कर, नाम हिन्दमहासागर पाया॥

इस प्रकार की पुण्य सलिला गगा के उत्तरीय तट पार करके हम एशिया के प्रसिद्ध सोनपुर नगर में पहुँचे। सोनपुर की प्रसिद्धि का कारण कार्तिक में लगने वाला उसका मेला है इस मेले से प्रभावित होकर ही किसी यात्री कवि ने लिखा होगा—

रेल्वे प्लेटफार्म है जिसका भारत में लम्बा सबसे।
और एशिया भर का गुरुतर, लगता है मेला कबसे॥
ऊँट, बैल जैसे भी चाहें, गाय, भैंस घोड़े, हाथी।
सब कुछ मिलता इस मेले में, मिल जाता खोया साथी॥
पूर्ण एशिया में न कहीं पर, इतना पशुओं का व्यापार।
मानव लाखों जुटते इसमें, होजाती है भीड़ अपार॥

हमें सोनपुर से अब सीधे वैशाली के मार्ग पर ही आगे बढ़ना है। यहा से वैशाली केवल २५ मील है।

वैशाली

ता० १२-४-५७ :

हम दानापुर से जिस लक्ष्य को लेकर चले थे वह आज पूरा हुआ और हम अपनी मंजिल पर कल पहुँच गए! आज महावीर जयन्ती का आयोजन हुआ। स्वयं राज्यपाल महोदय श्री आर. आर. दिवाकर भी इस समारोह में उपस्थित हुए एवं हमारा स्वागत किया।

यह जैन मन्दिर है। मन्दिर के पास के तालाब में मछली पकड़ने का सरकार की ओर से ठेका दिया जाता था। हमने इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करने की बात यहां के जिलाधीश के सामने उठाई कि जिस नगरी से अहिंसा का महान मंत्र निकलना चाहिये, वहां निरीह मछलियों की हिंसा कैसी? सरकार ने इस बात को स्वीकार करके ठेका प्रणाली को बन्द किया।

वैशाली के इतिहास और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए मैंने एक निबन्ध आज यहां तैयार किया।

रात्रि को करीब दो लाख जनता महावीर के जन्म जयन्ति मनाने इकट्ठी हुई। उनके सम्मुख वैशाली के इतिहास और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा—

वैशाली और भगवान महावीर

सर्व नगर शिरोमणी वैशाली। जहां से कि अहिंसा परमोधर्म का सूत्र प्राप्त हुआ। इसी पवित्र नगरी ने भगवान महावीर "वर्धमान" की जन्म भूमि होने का विशेष गौरव प्राप्त किया है।

वैशाली के इतिहास में बड़े बड़े परिवर्तन हुए हैं। इस नगरी ने बड़ी राजनीतिक उथल पुथल देखी। यह वही नगरी है जहां वाल्मिकी रामायण में वर्णित है—"जब राम लक्ष्मण और विश्वामित्र ने यहां पदार्पण किया था तब यहां के राजा सुमति ने विशेष स्वागत किया था"। इस नगरी के पश्चिमी तट पर "गण्डक" नामक नदी बहती है। वैशाली को "शाखानगर" कहते थे।

बुद्ध विष्णु पुराण में विदेह देश की सीमा बताते हुए लिखा है कि—विदेह के पूर्व में कौशिकी (आधुनिक कोशी) पश्चिम में गण्डकी, दक्षिण में गंगा और उत्तर में हिमालय है। पूर्व से पश्चिम की ओर २४ योजन लगभग १८० मील। उत्तर में १६ योजन लगभग १२५ मील है।

भगवान महावीर एव बुद्ध के समय में विदेह की राजधानी वैशाली ही थी। भगवान महावीर के कुल चातुर्मासों में से १६ चातुर्मास विदेह में हुए थे। वाणिज्य ग्राम और वैशाली में १२, मैथिला में ६ और १ अस्थिगाव में।

पुराणों में वैशाली :

पुराणों में इसके विशाल, विशाला तथा वैशाली ये तीन नाम दिये गये हैं। पाटलीपुत्र से भी यह बहुत प्राचीन है। वाल्मिकी रामायण में विशाला के नाम से इसका और इसके सस्थापक तथा उसके वंशजों का वर्णन मिलता है। भगवान रामचन्द्र के समय से लगभग ८-१० पीढ़ी पूर्व विशाला नगरी का निर्माण हो चुका था। यह भगवत्पुराण एवं वाल्मिकी रामायण से साबित है। पाटलीपुत्र का निर्माण अजात शत्रु के समय में हुआ।

वैशाली की चर्चा वाल्मिकी रामायण आदि कांड के ४५ वें ४६ वें तथा ४७ वें सर्गों में की गई है। पैंतालीसवें सर्ग में यह कहा गया है कि इस स्थान पर देवों और दानवों ने समुद्र मंथन की मन्त्रणा की थी। ४६ वें सर्ग में "रानादिति" की उस तपस्या का वर्णन है जो उसने इन्द्रों को मारने वाले पुत्र की उत्पत्ति के लिये की थी। उसी सर्ग के अन्त में तथा ४७ वें सर्ग के आरम्भ में इन्द्र के प्रयत्न से "राजा दिति" की तपस्या का विफल होना वर्णित है। इसके पश्चात् ४७ वें सर्ग के अन्त में वैशाली नगरी के निर्माण का इतिहास दिया गया है।

इस प्रकार केवल चार पुराणों में वैशाली की चर्चा पाई जाती है। वे ये हैं (१) वाराह पुराण (२) नारदीय पुराण (३) मार्कण्डेय पुराण और (४) श्री मद्भागवत। वाराह पुराण के सातवें अध्याय में विशाल राजा का (द्वारा) गया में पिंडदान करने से उनके पित्तरों की मुक्ति कही गई है। उसी पुराण के ४८ वें अध्याय में भी एक विशाल राजा का उल्लेख है। पर ये काशी नरेश थे वैशाली नरेश नहीं।

नारदीय पुराण के उत्तर कांड के ४४ वें अध्याय में भी विशाला नरेश विशाल की चर्चा की गई है और यह कहा गया है कि वे त्रेतायुग में थे। पुत्र हीन होने से पुत्र प्राप्ति के लिए उन्होंने पुरोहितों की राय से गया में पिंडदान किया। और अपने पिता, पितामह तथा प्रपितामह का नरक से उद्धार कराया, किन्तु वहां विशाल के पिता का नाम "सत" बतलाया है। संभव है इसका दूसरा नाम "सित" रहा है।

वैशाली की व्यवस्था प्रणाली :

ब्राह्मण युग में मैथीला और वैशाली दोनों राजतंत्र थे। लछवी

शासन में ७७०७ पुरुष थे। वे "राजुनम्" कहलाते थे। वैशाली गण की स्थापना श्रीमद्भागवत के उल्लेखानुसार 'राम और महाभारत" युद्ध के बीच हुई। वैशाली में बहुत से छोटे बड़े न्यायालय थे। विभिन्न प्रकार के राजपुरुष इनके सभापति होते थे। उस समय के न्याय प्रणाली का विशेषता यह थी कि अभियुक्त (अपराधी) को तभी दंड मिलता था; जब कि वह क्रमश सात न्यायालयों (सनिवियों) द्वारा एक स्वर से अपराधी घोषित कर दिया जाता। इनमें से किसी एक के द्वारा वह (अपराधी) मुक्त भी कर दिया जा सकता था। इस प्रकार मानव स्वतन्त्रता की रक्षा की जाती थी। जिसकी उपमा सभवत. विश्व के इतिहास में नहीं है।

लिच्छविगण का एक बड़ा बल था। वज्जिय सघ के अन्य सदस्यों से सयुक्त रहना। जैसा कि भीष्म ने कहा था "गणों को यदि जीवित रहना है तो उन्हें सर्वदा सघ प्रणाली का अवलम्बन करना चाहिये। कौटिल्य ने भी इसी प्रकार अपने अर्थशास्त्र में भी उल्लेख किया है।

गणतंत्र राज्य में एक कौंसिल थी। उसमें नव मल्ल और नव लिच्छवि के सदस्य थे।। गणतन्त्र करीब आठ सौ वर्ष चला।

वैशाली में लिच्छवियों के ७७०७ कुटुम्ब थे। हरेक कुटुम्ब का प्रमुख व्यक्ति गण सभा का सभासद होता था और वह गण राज्य कहलाता था। लेकिन गण सभा की एक कार्य वाहक सभा होती थी। जिसे अष्टकुलक कहते थे। आठ प्रमुख गण राजन इसके सदस्य थे। और प्राय गण सभा इनका चुनाव किया करती थी। अष्ट कुलक में से प्रत्येक का अलग अलग रंग निश्चत था। विशेष उत्सवों और अवसरों पर हर एक अष्ट कुलक अपने अपने निश्चित रंग के वस्त्रा भूषण धारण करके उसी रंग के घोड़े पर सवार होकर जाते थे।

जब गण सभा की बैठक होती थी, तो उसे गण संनिपात कहा जाता था और उस बैठक के स्थान और सभा भवन का नाम "संस्थागार" कहा जाता था। उस "संस्थागार" के निकट ही एक "पुष्करिणी" थी। जो कि आज घोमपोखर (तालाब) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें केवल गण राजन् ही स्नान करने के अधिकारी थे। जब नये गण राजन् का अभिषेक होता, तब वह बड़े समारोह के साथ इस पुष्करिणी में स्नान करता था।

(१) वैशाली के सन्निकट एक कुंडग्राम था। उस कुंडग्राम में दो वस्तियां थी, एक क्षत्रिकुंडग्राम, दूसरी ब्राह्मण कुंडग्राम। एक में क्षत्रियों की वस्ती अधिक थी। दूसरे में ब्राह्मणों की। इनमें दोनों क्रमशः एक दूसरे के पूर्व पश्चिम में थे। दोनों पास पास थे। दोनों वस्तियों के बीच एक बगीचा था। जो "बहुशाल" चैत्य के नाम से विख्यात था। दोनों नगर के दो दो खण्ड थे। ब्राह्मण कुंडपुर का दक्षिणी भाग ब्रह्मपुरी कहलाता था। क्यों कि यहां ब्राह्मणों का ही निवास था। दक्षिण ब्राह्मण कुंडपुर के नायक ऋषभ-दत्त नाम के ब्राह्मण थे। जिनकी स्त्री का नाम देवानन्दा था। दोनों पार्श्वनाथ के द्वारा जैन धर्म को मानने वाले गृहस्थ थे। क्षत्रिय कुंड के नायक का नाम सिद्धार्थ था। इसके दो भाग थे। इसमें करीब ५०० घर "ज्ञाति" क्षत्रिय थे। तथा राजा की उपाधि से मंडित थे। वैशाली के तत्कालीन राजा का नाम चेटक था। जिनकी पुत्री त्रिशला का विवाह सिद्धार्थ राजा से हुआ था।

(२) कुमारग्राम, प्राकृत भाषानुसार "कम्मार" कर्मकार का अपभ्रंश है। अर्थात् कर्म का अर्थ है, मजदूरों का गांव, अर्थात् लुहारों का गांव। यह गांव क्षत्रिय कुंडग्राम के पास ही था। महावीर स्वामी प्रव्रज्या लेकर पहली रात यहीं ठहरे थे।

(३) कोल्लाक सन्निवेश —यह ग्राम क्षत्रिय कुण्डग्राम के नजदीक ही था। कुमार ग्राम से विहार कर भगवान महावीर यहा से पधारे थे और यहीं पारणा किया था। उपाशकदशा के प्रथम अध्ययन में इस स्थान की स्थिति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यह नगर वाणिज्यग्राम से तथा उस बगीचे के बीच में पड़ता था।

(४) वाणीय ग्राम। यह जैन सूत्र का "वाणिज्यग्राम' बनियों का गाम है। गण्डकी नदी के दाहिने किनारे पर यह बड़ी भारी व्यापारी मंडी थी। यहां बडे बड़े धनाढ्य महाजनों की बस्तियां थी। यहा के एक करोडपति का नाम आनन्द गाथापति था। जो महावीर स्वामी का भक्त था।

बौद्ध ग्रथों के विशेषतः दीघनीकाय अनुशीलन से पता चलता है कि बुद्ध के समय में यह नगरी बड़ी समृद्धिशाली थी। उसमें ७७७७ महल थे। यहां एक वेणुग्राम था। जहां बुद्ध ने वर्षों तक निवास किया।

जैन ग्रथ श्री कल्पसूत्र में भगवान महावीर को विदेहे, विदेह दिन्ने, विदेहजच्चे, विदहसूमाला अर्थात विदेह, विदेह दत्ता, विदेह आत्य। विदेहसुकुमार लिखा है। वे वैशालीक भी थे। जमाली भी इसी ग्राम के रहने वाले थे। जिन्होंने ५०० राजकुमारों के साथ दीक्षा ली थी।

भगवान महावीर ने प्रथम पारणा कोलाग सन्निवेश, मे किया। जैन सूत्रों के हिसाब से ये दो ग्राम होते हैं। एक कोलाग सन्निवेश, वाणिज्य ग्राम के पास दूसरा राजगृही के पास। एक दिन में चालीस मील जाना कठिन है क्यों कि राजगृही नामक स्थान यहा से ४० मील पड़ता है। अत यही कोलाग सन्निवेश है।

भगवान महावीर ने प्रथम चातुर्मास अस्थिक ग्राम में दूसरा राजगृही में किया। राजगृही जाते समय श्वेताम्बिका नगरी से होकर गये और तदनन्तर गंगा को पार कर राजगृही में पहुँचे। बौद्ध ग्रन्थों से मालूम होता है कि श्वेताम्बिका श्रावस्ति से कपिल वस्तु की ओर जाते समय रास्ते में पड़ती थी।

भगवान महावीर :

भगवान महावीर का निर्वाण "पावापुरी" में माना जाता है। वह पावापुरी जो अभी मानी जाती है। उससे बिलकुल विपरीत बौद्ध ग्रन्थों के अनुशीलन से मालूम पड़ता है कि यह जिला गोरख-पुर के पडरोना के पास पप-उर ही है। उस पावापुरी के अन्दर मल्ल गणतंत्र राज्य था। गणतंत्र की सीमा विदेह देश में मानी जाती है। राजगृही अंग देश में है। और वहां का राजा अजातशत्रु गणतन्त्र राज्यों से बिलकुल विरुद्ध था। संगीति परियासुत (दीघनीकाय का ३३ वां सुत) के अध्यन से पता चलता है कि यह मल्ल नामक गणतंत्र लोगों की राजधानी थी। जिसको नये सस्थागार (संछागार) में बुद्ध ने निवास किया था। यह भी पता चलता है कि बुद्ध के आने के पहले ही "निगंट्ठ नात पुत्र" का निर्वाण हो चुका था। बौद्ध ग्रन्थों में महावीर "निगंट्ठ नात पुत्र श्री के नाम से प्रसिद्ध है। भ० महावीर का जन्म ई० सं० ५९९ वर्ष पूर्व हुआ था। निर्वाण ५२७ वर्ष पूर्व।

विदेह दत्ता महावीर की माता का नाम था। आचारंग सूत्र में इस प्रकार लिखा है "समणस्सणं भगवओ महावीरस्स, अम्मा वासिट्ठस्स गुत्तातिसेणं तिन्नि नाम तजह। तिशला इवा, विदेह दिन्नावा, पियकारिणी इवा। यह नाम उनकी माता को इसलिए मिला था कि उनकी माता त्रिशला विदेह देश की नगरी वैशाली के

गण सत्तानक राजा चेटक की पुत्री थी। यह घराना विदेह नाम से प्रसिद्ध था। इसी कारण माता त्रिशला को विदेह दत्ता कहा गया है।

निरावलियाओं के अनुसार राजा चेटक वैशाली का अधिपति था और उसे परामर्श देने के लिए नो मल्लि और नो लिच्छवि गण राजा रहा करते थे। मल्ल जाति काशी में रहती थी और लिच्छवी कौशल में। इन दोनों जातियों का सम्मिलित गणतंत्र राज्य था। जिसकी राजधानी वैशाली और गणतन्त्र का अध्यक्ष चेटक था। वैशाली नगरी में हैहय वंश में राजा चेटक का जन्म हुआ था। इस राजा की भिन्न भिन्न रानियों से ७ पुत्रियां थी। (१) प्रभावती (२) पदमावती (३) मृगावती (४) शिवा (५) ज्येष्ठा (६) सुज्येष्ठा (७) और चेलणा। प्रभावती वीतिभय के उदयन से, पदमावती चंपा के दधिवाहन से, मृगावती कौशाम्बि के शतानिक से, शिवा उज्जयनी के प्रद्योत से और ज्येष्ठा कुंडग्राम के वर्धमान के बड़े भाई नन्दि-वर्धन से, सुज्येष्ठा और चेलणा उस समय कुमारी ही थी।

अहिंसा के अवतार सत्य के पुजारी शान्ति के अग्रदूत भगवान महावीर का जन्म चैत सुदी १३ के दिन मध्यरात्री के पश्चात् हुआ था।

अर्वाचीन वैशाली :

वैशाली बहुत ही प्रतिष्ठा प्राप्त स्थान है। यह तो निर्विवाद वस्तु है। जैन धर्म की अपेक्षा बौद्धों ने इस नगरी को बहुत महत्त्व दिया है। अभी भी बौद्ध राष्ट्रों में अनेक स्थानों में वैशाली नाम के नगर इसकी स्मृति के रूप में बसाये हैं। विदेशों से प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में बौद्ध भिक्षु एवं गृहस्थ वैशाली की यात्रा को आते हैं और वहां की धूल पवित्र मानकर अपने सिर एवं शरीर पर लगाते हैं। पूछने पर वे कहते हैं कि यह धूल तथागत के चरणों से पवित्र बनी हुई है। वर्तमान समय में वैशाली छोटे से

ग्राम के रूप में है। पटना से उत्तर की ओर २३ मील आगे बढ़ने पर यह ग्राम आता है। अभी भी यहां महाराणा चेचट का अजय दुर्ग भग्नावशेष के रूप में अतीत की वीर गाथाएं और पवित्रता का नाद गूंज रहा है। इस दुर्ग में से सरकार द्वारा खुदाई करने पर कुछ महत्वपूर्ण वस्तुए निकली हैं जिनको सुरक्षित म्युजियम बना कर रखी गई।

इस दुर्ग से पश्चिम की ओर निकटतम एक तालाब है। जिसमें लच्छवी गणतन्त्र के निर्वाचित अधिनायकों को ही स्नान करने का अधिकार था। इसका अभी नाम बोमपोखर है।

वैशाली से पूर्व में आधा मील आगे बढ़ने पर एक हाई स्कूल आता है जिसका नाम तीर्थङ्कर भगवान महावीर हाई स्कूल है। यह हाई स्कूल स्थानीय व्यक्तियों द्वारा ही सचालित है। और वैशाली के अन्दर एक जनता द्वारा वैशाली संघ स्थापित किया हुआ है। जो कि इस ग्राम के विकास के लिए प्रति पल प्रयत्नशील रहता है।

भगवान महावीर का जन्म स्थान :

हाई स्कूल के उत्तर में २ मील की दूरी पर एक] वासु कुण्ड नामक ग्राम है। यह वही ग्राम है जो कि क्षत्रिय कुण्ड ग्राम के नाम से प्रसिद्ध था। यहां पर भ० म० के कुछ वंशज लोग रहते हैं। उनके पास वंश परम्परा से कुछ एकड़ जमीन थी। जिसका कि वे सरकार को भूमिकर तो देते थे, किन्तु उस पर खेती नहीं करते थे। सरकारी कर्मचारियों द्वारा इसका कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि यह वह स्थान है जहां महावीर का जन्म हुआ। परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं था कि महावीर कौन है? क्योंकि महावीर हनुमानजी को भी कहते हैं।

सरकार के इतिहास विभाग ने इतिहास एव कल्पसूत्र आदि ग्रन्थों का अवलोकन किया। और निश्चय किया कि यहां सिद्धार्थ पुत्र महावीर का जन्म हुआ है। यह शुभ समाचार विस्तार पूर्वक भग-

बान महावीर के वंशजों को मालूम हुआ तो बहुत ही उत्साह से यह जमीन बिहार सरकार को उसके विकास के लिए दे दी। करीब चार वर्ष पूर्व इसी स्थान पर भारत गणतन्त्र के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के कर कमलों द्वारा एक विशालकाय शिलान्यास किया गया है। जिसके एक तरफ हिन्दी में भ० म० के जन्म का वर्णन है और दूसरी तरफ प्राकृत भाषा में।

सरकार द्वारा जयन्ती समारोह :

वैशाली में करीब १५ वर्ष से प्रत्येक चैत्र सुदी १३ के दिन भ० महावीर का जन्म बिहार सरकार की तरफ से मनाया जाता है। इस प्रसग पर करीब डेढ से २ लाख आदमी बहुत ही उत्साह पूर्वक उपस्थित होते हैं। और भ० म० के प्रति अनन्य श्रद्धा व्यक्त करते हैं। मुझको भी दिनाङ्क १२-४-५७ ई० को बिहार सरकार के गवर्नर श्री आर० आर० दिवाकर एवं वैशाली सघ के अति आग्रह से इस जयन्ती समारोह में सम्मिलित होने का एवं जनता को भ० म० का सन्देश सुनाने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

जैन प्राकृत इन्स्टिट्यूट :

भारत में मुख्यतया तीन सस्कृतियों का उद्गम स्थान है। जैन, बौद्ध एवं वैदिक सस्कृति। भारत सरकार तीनों सस्कृतियों को जीवित रखने के लिए तीन इन्स्टिट्युट चला रही है। बौद्ध सस्कृति के लिए नालन्दा, वैदिक सस्कृति के लिए मैथिला (दरभंगा) एवं जैन सस्कृति के लिए वैशाली, जैन प्राकृत इन्स्टिट्युट मुजफ्फर में चला रही है। इसके प्रति वर्ष हजारों का व्यय सरकार करती है। इस इन्स्टिट्युट के लिए निजि भवन बनाने का वैशाली सघ का निर्णय करने पर वासुकुण्ड ग्राम की जनता ने ३३ बीघा जमीन सरकार को भेट दी है। जिस पर कि हमारे राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने करीब चार वर्ष पूर्व शिलान्यास किया है। और शाहु शान्तिप्रसाद जैन तथा

अन्य सद् गृहस्थ यहां अतिथि गृह, उपासना गृह आदि २ की योजनाएं बना रहे हैं।

इस प्रकार वैशाली जैनियों के लिए सभी तीर्थ स्थानों की अपेक्षा बहुत ही महत्व रखती है। अतः समस्त जैनों से अनुरोध है कि वे अपनी २ कोन्फरेन्सों के साम्प्रदायिक ममत्व दूर कर इस पवित्र भूमि के विकास के लिए जल्दी से जल्दी प्रयत्न शील बनें। अन्यथा बौद्ध धर्मावलम्बी इस पवित्र भूमि को अपने हस्तगत कर लेंगे। इसमें कोई शंका नहीं है क्योंकि वे हजारों की संख्या में विदेश से आते हैं। और कुछ न कुछ निर्माण कार्य करके जाते हैं। किन्तु जैन अभी तक इस तरफ जागृत नहीं हुए हैं। अतः इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें। ऐसी आशा है।

वासुकुंड

ता० १४-४-५७ :

सरकार ने खोज करके यह निर्णय किया है कि अहिंसा के महान उपदेष्टा भगवान महावीर का जन्म-स्थान यहां पर ही है। यह जगह वैशाली से २ मील दूर है। महावीर जन्म दिन के अवसर पर यहां की साधारण जनता भी यहां पर दीपक जलाती है और लड्डू चढ़ाती है। यहां पर ही प्राकृत विद्यापीठ का शिलान्यास किया गया है और राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के हाथ से शिलालेख की स्थापना की गई है। यहाँ पर, मीनापुर में और वैशाली में आमतौर से लोग निरमिष भोजी हैं, यह भी महावीर प्रभु की परम्परा का प्रमाण है। यद्यपि अभी तक तो जैन लोग महावीर का जन्म-स्थान एक दूसरी ही जगह मानते आये हैं, पर ऐतिहासिक प्रमाणों से यहीं पर महावीर का जन्म स्थान सिद्ध होता है।

मुजफ्फरपुर

ता० २५–४–५७ :

यह उत्तर बिहार का एक प्रमुख नगर है। बिहार में खादी का जो काम चलता है, उसका प्रधान केन्द्र यहां पर ही है। सैंकड़ों कार्यकर्त्ता खादी के इस प्रधान कार्यालय में काम करते हैं और बिहार भर में विस्तृत लाखों रुपये के खादी कार्य का संयोजन करते हैं।

यहां पर ४ घर जैनों के हैं। बाकी गुजराती घर १० और मारवाड़ियों के ६०० घर हैं। यहां पर ही अगला चातुर्मास किया जाय, ऐसी आग्रह भरी प्रार्थना यहां के निवासियों की तरफ से आ रही है। हम १६-४-५७ को यहां आये, तब से प्रतिदिन व्याख्यानों के कार्यक्रम रहते हैं और जनता अपार हर्ष तथा उत्साह के साथ लाभ ले रही है। भले ही जैन श्रावकों के घर न हों, पर लोगों में जो अनन्य श्रद्धा-भक्ति दीख पड़ती है, वह आकर्षण पैदा करने वाली है।

ता० २६–४–५७ :

यहां की जनता के आग्रह को टालना कठिन था। इसलिए आखिर हमने यही निर्णय किया है कि इस वर्ष का चातुर्मास मुजफ्फरपुर में व्यतीत किया जाय। भक्त की भक्ति आखिर रंग लाती ही है। जो लोग जैन धर्मानुयाई भी नहीं हैं और जिनके साथ हमारा कोई पूर्व परिचय भी नहीं है, उनकी इस प्रकार से अनिर्वचनीय भक्ति तथा श्रद्धा जब दृष्टिगोचर होती है, तब यह मानने के लिए हम बाध्य हो जाते हैं कि भक्त के सामने भगवान को भी झुकना पड़ता है।

जब हमने यह निर्णय किया कि अगला चातुर्मास यहां पर ही बितायेंगे तो सहज प्रश्न उपस्थित हुआ कि चातुर्मास के पहले के समय का कहां सदुपयोग किया जाय ? समस्या के साथ ही समाधान छिपा रहता है। नेपाल जाने का विचार तुरन्त सामने आया क्योंकि हजारी बाग की महारानी ललिता राज्य लक्ष्मी ने पहले ही नेपाल की विनति की थी, वे खुद नेपाल के राज्य कुंवारी हैं। तथा मुजफ्फरपुर एक तरह से भारत-नेपाल की सीमा के पास का ही शहर है। अत. यह स्वाभाविक ही था कि नेपाल-यात्रा का कार्यक्रम बनाया जा सके। विचार विमर्श के बाद आखिर हमने यह निर्णय किया कि चातुर्मास के बीच का समय नेपाल यात्रा करके उपयोग में लाया जाय।

रून्नि

ता० २८-४-५७ :

नेपाल की ओर हम बढ़े जा रहे हैं। उत्तर विहार का यह प्रदेश भी अत्यंत सुहावना है। यहां के लोग अत्यंत सरल और मेहनती होते हैं। आज हम अंबर चरखा विद्यालय में ठहरे हैं। गांधीजी ने चरखे को अहिंसा का प्रतीक बनाया और चरखे के आधार पर सारे देश को संगठित करके आजादी हासिल की। उन्होंने विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था की मौलिक कल्पना उपस्थित की और कहा कि बड़े बड़े कारखानों में मानवता शोषित है। इसलिए घर घर में उद्योगों की स्थापना होनी चाहिए और चरखा एक ऐसा ग्रामोद्योग है, जो गांव-गांव और घर घर में प्रवेश पा सकता है।

पहले का चरखा बहुत अविकसित था। बुद्धिजीवि वर्ग के लोग 'बुढ़िया का चरखा' कहकर उसकी हंसी उड़ाते थे। तब गांधीजी ने चरखे में सुधार करने की तरफ ध्यान दिया बाँस चरखे से लेकर

किसान चक्र, परश्दा चक्र और सुदर्शन चक्र के रूप में उसके विविध रूप सुविकसित होते गए। गांधीजी के निधन के बाद भी चरखे का अर्थशास्त्र उनके शिष्यों ने जीवित रखा और इसी के परिणाम स्वरूप अम्बर चरखे का आविष्कार हुआ।

अम्बर चरखा गरीबों के लिए प्राणमय सिद्ध हुआ। जो चरखा मिल के मुकाबले में किसी तरह टिक नहीं सकता था, उसमें अम्बर चरखे ने नई क्रांति पैदा की और मिल के सामने भी खड़ा रह सके ऐसी एक चीज देश को मिलगई। हिन्दुस्तान में आज 'अम्बर चरखा' बहुत लोक प्रिय सिद्ध हो रहा है।

यहाँ पर इसी अम्बर चरखे का प्रशिक्षण दिया जाता है। आजकल करीब २० स्त्रियाँ प्रशिक्षण ले रही हैं। ३ महीने में अम्बर चरखे की पूरी शिक्षा प्राप्त हो जाती है।

सीता मढी

ता० २६–४–५७ :

हम अलबेले साधु अपनी मंजिल पाने के लिए बढ़े चले जा रहे हैं। रास्ते में कहीं सम्मान तो कहीं अपमान। ठीक भी है। आज साधु वेष के नाम पर जो दंभ चलता है, उसके कारण लोगों को साधुओं के प्रति कुछ नफरत पैदा हो तो आश्चर्य ही क्या है? कोई साधु भंग और गांजे का नशेबाज होता है तो कोई भूखों मरने के बजाय साधु वेश धारण किये हुए है। कोई लोगों को उनका भविष्य बता कर ठगता है तो कोई किसी दूसरी राह से अपना उल्लू सीधा कर लेता है।

सीतामढ़ी, उत्तर बिहार का एक प्रमुख नगर है। यहां पर सरावगियों के ५ घर हैं। हमने व्याख्यानों का कार्यक्रम भी रखा और धर्म चर्चा भी खूब हुई। धर्म चर्चा में एक ऐसा रस है जो जीवन की शुष्कता को मिटा देता है और उसे मधुर सुखद बना देता है। लोग आते हैं तरह तरह के सवाल पूछते हैं शास्त्रों की बातें सामने आती हैं तर्क वितर्क होते हैं और इन सबके बाद एक सुखद समाधान मिलता है। धर्म चर्चा में भिन्न धर्मों, शास्त्रों, ग्रन्थों, परम्पराओं आदि का विश्लेषण होता है और इन सब में जो जीवन को समुन्नत बनाने का मार्ग मिलता है उसे स्वीकार करने की प्रेरणा होती है। इस दृष्टि से धर्म चर्चा का महत्व प्रवचन से कम नहीं। प्रवचन में वक्ता किसी विशिष्ट समय का विश्लेषण करता है। पर धर्म चर्चा में प्रश्नकर्ताओं के साथ वक्ता का तादात्म्य संबंध जुड़ जाता है। हमारी यात्रा में इस प्रकार धर्म चर्चा का अवसर खूब आता है।

सीतामढ़ी चम्पारण जिले का मुख्य शहर है। यह वही चम्पारण जिला है, जहां महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक किसान सत्याग्रह किया था। किसानों पर होने वाले अन्याय के विरोध में जब गांधीजी ने आवाज उठाई तो सारे देश की नजरें चम्पारण की तरफ लग गई थी। सत्याग्रह के इतिहास में चम्पारण का एक तीर्थ स्थान की भांति महत्वपूर्ण स्थान है।

लोकहा

ता० २–५–५७ :

आज हम जिस गांव में ठहरे हैं, वहां हमने देखा कि छुआ-छूत का भूत अभी तक काफी मात्रा में विद्यमान है। यहां तक कि एक मुहल्ले के लोग दूसरे मुहल्ले में पानी भरने के लिए भी नहीं

जाते। इसी तरह एक जाति की कोई स्त्री यदि पानी भरती हो तो दूसरी जाति की स्त्री तब तक वहां नहीं जायगी जब तक वह स्त्री वहां से हट न जाय।

हिन्दुस्तान को इस स्पृश्या स्पृश्य के रोग ने बहुत नीचे गिराया है। मानव-मात्र की समानता के सिद्धान्त से दूर होकर ऊँच-नीच की भ्रांति पूर्ण मान्यताओं में यह देश फसा, इसीलिए हम गुलाम होना पड़ा, गरीबी के दल दल में फसना पड़ा और दुनिया के पिछड़े हुए देशों में इसकी गिनती होने लगी।

इस देश में कोई भी चीज चरमोत्कट अवस्था में पहुँच जाती है, इसलिए आदर्श और व्यवहार में एक लम्बी खाई उत्पन्न हो जाती है। एक तरफ तो अद्वैतवाद का सिद्धान्त चलता है। जड़-चेतन, सब में ईश्वर के होने का शास्त्र प्रतिपादित किया जाता है। दूसरी ओर मानव-मानव के बीच घृणा के बीज बोये जाते हैं। ऊँच नीच की संकुचित दीवारें खड़ी की जाती है। यह स्थिति कितनी भयावह, दुखद और हास्यास्पद है। यह गांव नेपाल का है। हमने नेपाल में "गौर" से प्रवेश किया। यह प्रदेश नेपाल की तराई प्रदेश कहा जाता है। तराई प्रदेश में शिक्षा की बहुत कमी देखने में आई। गरीबी भी अधिक है।

वीर गंज

ता० ४-५-५७ :

यह नेपाल का प्रवेश-द्वार है। वीरगंज में प्रवेश करते ही मन में उत्साह की लहर दौड़ गई। एक महीने की परीक्षा और पद यात्रा के बाद नेपाल का प्रवेश द्वार आया। सुरम्य प्राकृतिक सौन्दर्य के

वातावरण में जाते हुए यदि मन आनन्द-विभोर हो उठे, तो इसमें क्या आश्चर्य ? मनुष्य जब अपनी मंजिल के निकट पहुँचता है तो उमंगें दुगुने जोश के साथ लहरा उठती है।

उधर रक्सोल, हिन्दुस्तान का आखरी रेल्वे स्टेशन है और इधर ऊंचे हिमालय के मस्तक पर बसा हुआ रमणीय नेपाल है।

वीरगंज एक मध्यम स्थिति का कस्बा है। यहां मारवाड़ी भाइयों के भी १५० के लगभग घर हैं। कालेज भी है। यहां से नेपाल जाने के लिए रेल्वे मिलती है।

अमलेखगंज

ता० ८-५-५७ :

यह स्थान स्थल प्रदेश का आखिरी स्थान है। रेल्वे भी यहां समाप्त होजाती है। आगे दुर्गम घाटियों में से एक सड़क का मार्ग है जिसके द्वारा ही सारा यातायात सम्पन्न होता है। इसे त्रिभुवन राजपथ कहते हैं। भारत की सैन्य टुकड़ियों ने इसे बनाई है। सड़क भी साधारण स्थिति की है। नदी के किनारे से बढ़ता हुआ मार्ग अत्यन्त सुहावने दृश्यों से भरा है। ऐसा घनघोर जंगल कि जिसकी कल्पना ही की जा सकती है। इस घनघोर जंगल से आच्छादित दोनों ओर ऊंची पहाड़ियाँ तथा कलकल करती हुई बहने वाली स्वच्छ सलिला सरिता ! नेपाल की राजधानी काठमांडू तक ऐसा ही सुहावना दृश्य है।

अमलेख गंज एक अच्छा व्यापार केन्द्र है। एक ओर सारा स्थल प्रदेश तथा दूसरी ओर पर्वतीय प्रदेश काठमांडू आदि। इन दोनों का मध्यबिन्दु है यह अमलेखगंज, जो दोनों को जोड़ने का

काम करता है। यहा भी मारवाड़ी व्यापारियों के १२ घर हैं। मारवाड़ी समाज एक ऐसा व्यापार कुशल समाज है, जो दुर्गम से दुर्गम स्थान में भी पहुँच कर व्यापार-कार्य करता है। व्यापार समाज की सुव्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हालाकि आज तो व्यापार में प्रामाणिकता, नैतिकता और सेवा भावना का अभाव हो गया है। व्यापार को केवल अधिकाधिक अर्थ-सग्रह का साधन बना लिया गया है। परन्तु यदि शुद्ध व्यापारिक नियमों के अनुसार प्रामाणिकता पूर्वक व्यापार किया जाय तो उसमें मारवाड़ी समाज का उल्लेखनीय योगदान माना जा सकता है।

भैंसिया

ता० ६-५-५७ :

नेपाली भाइयों से अच्छा संपर्क आरहा है। इस प्रकार से जैन साधुओं का सपर्क इन लोगों के लिए सर्वथा नई बात है। इसलिये बड़ी उत्सुकता के साथ आते हैं। हमने अपना यह नित्यक्रम बनाया है कि रात्रि काल में नेपाली भाषा में नेपाली भाइयों द्वारा ही भजन कीर्तन हो। यह कार्यक्रम बड़ा रुचिकर सिद्ध हो रहा है। नेपालियों में ईश्वर और देवी देवताओं के प्रति बहुत श्रद्धा होती है। इसलिए वे बड़े तन्मय होकर भजन कीर्तन का कार्यक्रम करते हैं।

पहाड़ों पर रहने वाले ये नेपाली स्त्री पुरुष बड़े परिश्रमी, पुरुषार्थी और सरल स्वभाव के होते हैं। यहा स्त्रिया भी पुरुषों की तरह ही काम करती हैं। खेती की मुख्य जिम्मेदारी स्त्रियों पर ही होती है। ये लोग पर्वत चोटियों पर लघु काय कुटिया का निर्माण बड़े चातुर्य के साथ करते हैं। कुटिया का रूप बहुत लुभावना होता

है। दूर से ऐसा ही प्रतीत होता है मानो कोई ऋषि कुटिया ही है। इन कुटियाओं के आस पास छोटी छोटी क्यारियों में ये लोग खेती करते हैं। दूर से ऐसा लगता है मानों ये क्यारियां नहीं बल्कि झोपड़ियों में जाने के लिये पहाड़ पर सीढ़ीयों का निर्माण किया गया है पर ये सच में सीढ़ीयां नहीं बल्कि क्यारियां होती हैं। जगह २ पर निर्मल-स्वच्छ सलिल के स्रोत और झरने मन को मोह लेते हैं। प्रकृति मानों सोलह शृङ्गार करके यहां धरती पर अवतरित हो गई है। मार्ग भी इस प्रकार टेढ़ी मेढ़ी घाटियों के बीच से निकलता है कि दूर से आभास तक नहीं होता कि आगे मार्ग जा रहा है। ऐसा ही लगता है मानों एक पर्वत श्रेणी दूसरी पर्वत श्रेणी से सट-कर खड़ी है, पर आगे जाने पर रहस्य खुल जाता है और स्पष्ट ही ये पर्वत श्रेणियां एक दूसरी से बहुत दूर हो जाती हैं।

इस प्रकार के मार्गों में से हम आगे बढ़े चले जा रहे हैं। यहां से दो रास्ते हैं एक रास्ता सड़क का है जो कि करीब ८ मील के चक्कर का है दूसरे भीमफेरी का है जो पगरास्ता पहाड़ियों पर से नेपाल काठमांडू जाता है।

भीमफेरी

ता० १०-५-५७ :

यह भीमफेरी एक ऐतिहासिक स्थान है। ऐसा कहा जाता है कि लाक्षागृह से बचकर भागे हुए पांडवों ने इसी जगह विश्राम पाया था। और भीम ने यहीं पर हिडम्बा के साथ पाणिग्रहण (फेरी) किया था।

इधर पहाड़ी जातियों के लोग बहुत असंस्कृत भी
मांसाहारी तथा निर्दयी इतने कि खुले बाजारों में भैंसें काटते हैं।

राक्षसों की कल्पना ऐसे ही लोगों के आधार पर निर्मित हुई होगी। नेपाल के आडे-टेढे रास्ते और ऊंची नीची घाटियों की झोपड़ियों में रहने वाले ये लोग आज के युग के लिए चुनौती हैं। यह एक आवश्यक काम है कि इन लोगों का सुधार किया जाय, तथा इन्हें मांसाहारी असंस्कृतिक जीवन से मुक्ति दिलाई जाय।

जिस युग में नेपाल की राजधानी काठमाडू तक पहुँचने के अन्य विकसित मार्ग नहीं थे तब भीमफेरी के पैदल रास्ते से ही लोग काठमाडू पहुँचा करते थे। अब भी वह रास्ता है। पर भैंसिया से काठमाडू तक ८० मील का एक सड़क हिन्द सरकार ने बनाई है। जिसका नाम त्रिभुवन राजपथ है। ८१२६ फीट की चढ़ाई लाघकर इस मार्ग से ही हमें काठमाडू पहुँचना है।

कुलेखानी

ता० ११-५-५७ :

भैंसिया और भीमफेरी के बीच में एक गाव है धुरसी। इस गाव से काठमाडू तक तार के सहारे से चलने वाली डोलियों का मार्ग है। वह मार्ग आज हमने भीमफेरी से १ मील पूर्व दूर देखा। पहाड़ की चढ़ाई बहुत कठिन है। इसलिए इस आकाश-मार्ग का निर्माण किया गया है।

रास्ते में गढी-पुलिस चौकी आई। यहा पर कडाई के साथ विदेशी यात्रियों के सामान और पासपोर्ट की जाच की जाती है। हमसे भी पासपोर्ट के लिए पूछा गया। हमने अधिकारियों को बताया कि जैन साधुओं के कुछ विशिष्ट प्रकार के नियम होते हैं। वे किसी एक देश के नहीं होते। सारे ससार में मुक्त विचरण करने

बाजार का और व्यवसाय का जीवन इन गावों में नहीं के बराबर है। अत इन लोगों के लिए रात्रि चिर शाति तथा विश्राम का सदेश लेकर आती है। आज कल शहर में, जहा व्यापार तथा उद्योग ही जीवन के संचालन का प्रधान माध्यम है, सूर्यास्त के बाद चहल पहल प्रारभ होती है। बारह एक बजे तक सिनेमा चलता है। होटल चलते है। लोग जागते हैं बिजली के तेज प्रकाश में रहते हैं, इससे न केवल प्राकृतिक नियम टूटता है, बल्कि शरीर पर भी प्रतिकूल प्रभाव पडता है विदेशों में कई जगह बाजार २४ घटों लगता है। हम जैन मुनियों के लिए तो कहीं भी, एक व्यवस्थित जीवन क्रम रहता है। सूर्यास्त से पहले पहले आहार आदि की क्रियाओं से निवृत हो जाते है। रात्रि का उपयोग विश्राम, चिन्तन और ध्यान योग में करते हैं।

यहा के लोग जिस प्रकार खेती करते हैं, वह विशेष दर्शनीय है। ऊचा-नीचा पहाड़ी प्रदेश होने के कारण हल-बैल से तो खेती हो नहीं सकती। सारी खेती हाथ से ही होती है। राष्ट्र के नेता कहते हैं हाथ से की जाने वाली खेती न केवल सुन्दर होती है। बल्कि उसमें उत्पादन भी ज्यादा होता है। एक एक पौधे से किसान का सीधा सपर्क आता है। फिर कुछ अर्थ शास्त्रियों का यह भी कहना है कि एक समय ऐसा आयेगा, जब इस धरती पर मनुष्य संख्या अत्यधिक बढ़जाने से बैलों को खिलाने के लिए और उनका पालन करने के लिए मनुष्य के पास जमीन ही नहीं बचेगी। यहा के लोगों ने तो प्राकृतिक अर्थशास्त्र से हाथ की खेती स्वभावत ही अपना ली है। खेती का दृश्य इतना कलात्मक होता है कि देखते ही बनता है। कौन कहता है कि इन अनपढ देहाती किसानों को कला का ज्ञान नहीं है।

काठमांडू

ता० १३-५-५७ :

नेपाल की यह सुप्रसिद्ध नगरी और राजधानी है। २४ मील के घेरे में दूर दूर बसी हुई नेपाल की इस रमणीय नगरी में पहुँच कर एक संतोष हुआ। काठ मांडू आधुनिक सभी साधनों से सम्पन्न है। वैसे नेपाल का पूरा क्षेत्रफल ५४,३४३ वर्ग मील है। जिसमें ३१,८२० गांव हैं और लगभग १ करोड़ की आबादी है। नेपाल का हृदय है काठमांडू। साधुओं के भक्त नेपाल नरेश ने किसी युग में अपने परम श्रद्धास्पद गुरुदेव के लिए एक ही वृक्ष की लकड़ी का एक 'काष्ठ मंडप' तैयार करवाया। धीरे धीरे आगे चलकर काष्ठ मंडप के नाम को ही आम जनता ने काठमांडू कहकर प्रसिद्ध कर दिया।

यहीं है विश्व विख्यात हिन्दुओं के पशुपति नाथ का विशाल मन्दिर, जिसके सामने वागमती नदी अपने स्वच्छ प्रवाह के साथ बहती है। भगवान नीलकंठ की एक सुषुप्तावस्था की प्रतिमा भी यहीं पर है, जिसके दर्शन के लिए यात्रियों को जलकुंड के बीच जाना पड़ता है। वहां निरन्तर २२ धाराएँ गिरती हैं। इसी तरह प्राचीन कला-वैभव से संम्पन्न अनेक बुद्ध, कृष्ण आदि के मन्दिर काठमांडू में एक छोर से दूसरे छोर तक फैले हुए हैं।

यहां पर कहीं कहीं बुद्ध की प्रतिमाओं पर सर्प का चिन्ह भी देखने को मिलता है। एक विद्वान जैन यात्री ने इस प्रसंग का उल्लेख करते हुए लिखा है "भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर सर्प का जो चिन्ह है, उससे जैन तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ की प्रतिमा का अद्भुत साम्य है। बारह वर्षीय दुर्भिक्ष के समय आचार्य भद्रबाहु ने नेपाल

में प्रवास किया था। पार्श्वनाथ उनके इष्ट थे। उन्होंने शायद पार्श्वनाथ की प्रतिमाएं स्थापित करवाई हों, और ये ही कालान्तर में बुद्ध-प्रतिमाओं के रूप में परिवर्तित हो गई हों। जैन साधुओं की नेपाल यात्रा स्थगित होने से हजारों वर्षों का परिणाम यह हो सकता है कि जिन-मूर्तियों को बुद्ध मूर्तियों के रूप में लोग पूजने लग जांय। बुद्ध परिचित रहे हैं, इसलिए पार्श्वनाथ का परिचय बुद्ध में समाहित हो गया हो।"

(राह के संघर्ष पृष्ठ १७)

नेपाल में द्वितीय भद्रबाहु स्वामी आठमी शताब्दी में विचरण कर रहे थे, उनको पूर्वो का ज्ञान था, उनसे ज्ञान संपादन करने के लिये स्थुलीभद्रजी ने अपने दो साधुओं को लेकर नेपाल की ओर प्रयाण किया था, तब नेपाल की विकट पहाड़ियों की उतार चढ़ाई मे घबराकर स्थूलीभद्रजी के दो साथी साधु पुनः लौट गये और सिर्फ स्थुलीभद्रजी भद्रबाहु स्वामी की सेवा में पहुँचे। सुना है कि नेपाल में १२ वीं शताब्दी तक जैन धर्म था।

ता० २७-५-५७ :

दो सप्ताह तक नेपाल की इस राजधानी में बिताकर आज हम विदा हो रहे हैं। इस अरसे में जो मुख्य कार्यक्रम रहे उनमें से एक है, नेपाल राज्य के कुछ प्रमुख व्यक्तियों से मिलन और दूसरा है २५ सौ वर्ष के बाद सारे संसार में मनाई जाने वाली बुद्धजयंती में भाग लेना।

जिन प्रमुख व्यक्तियों से मिलन हुआ, उनमें से नेपाल नरेश श्री महेन्द्र वीर विक्रम, वर्तमान प्रधान मन्त्री टंकप्रसाद आचार्य, जनरल कर्नल श्री केशर शमशेर जंगबहादुर, आदि के नाम विशेष

रूप से उल्लेखनीय हैं। सभी के साथ जैन धर्म अहिंसा आदि विषयों पर बड़ी गंभीरता के साथ विचार-विमर्श हुआ। सभी ने जैन-साधुओं के जीवन में उनकी आचार-क्रियाओं में और उनके व्रतों को जानने में बड़ी अभिरुचि प्रगट की।

बुद्ध जयंती का आयोजन वैसे तो सारे संसार में हो रहा है पर भारत तथा एशिया के अन्य बौद्ध देशों में बड़े जोर-शोर के साथ यह कार्यक्रम मनाया जा रहा है। हर जगह पर लाखों रुपये व्यय हो रहे हैं और विशाल पैमाने पर आयोजन किये जा रहे हैं यहां पर भी बहुत बड़े रूप में समारोह था, इस समारोह में मैंने अहिंसा के सूक्ष्म विश्लेषण के साथ बुद्ध के जीवन पर प्रकाश डाला—

"२५ सौ वर्ष पहले हुए महात्मा बुद्ध से ५६ वर्ष पूर्व भगवान महावीर हुए हैं जिन्होंने संसार को जो प्रेम, करुणा और मैत्रि का मार्ग बताया था, उसकी आज भी उतनी ही आवश्यकता है। क्योंकि संसार विनाश के कंगारे पर खड़ा है। आणविक प्रतिस्पर्धा ने संपूर्ण मानव जाति के लिए खतरा पैदा कर दिया है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आंख गड़ाए बैठा है। अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए दूसरे को गुलाम बनाने में आज के राजनीतिज्ञ किंचित भी नहीं झिझकते। ऐसी दशा में दुनिया का भविष्य अत्यंत अंधकार पूर्ण है"।

इसके अलावा एक और मुख्य आयोजन हमने किया। जैन, बौद्ध, और वैदिक धर्मावलम्वी एक साथ मिलकर एक अहिंसा सम्मेलन में आये। यह सम्मेलन नेपाल में १५०० सौ वर्ष के बाद सर्व प्रथम था। इस तरह के सम्मेलनों की आज भी कितनी आवश्यकता है, यह कहने की जरुरत नहीं। क्योंकि सभी

धर्मावलम्बियों के कन्धों पर आज के समस्या सकुल वातावरण में यह जिम्मेदारी है कि आतंक, भय और हिंसा से सत्रस्त मानव को अहिंसा का मार्ग दिखाए। धर्म स्थापना का यही वास्तविक उद्देश्य है। धर्म के छोटे मोटे सांप्रदायिक मतभेदों को लेकर लड़ने से अब काम नहीं चलेगा। आज का मानव अंधेरे में कुछ टटोल रहा है, उसे मार्ग नहीं मिल रहा है। जब अहिंसा का प्रकाश फैलेगा तब अपने आप मनुष्य सशक्त होकर आगे बढ़ सकेगा।

इस सम्मेलन मे भी मैंने अहिंसा का तात्विक विश्लेषण उपस्थित किया —

शक्ति का अक्षय स्रोत अहिंसा :

(सामाजिक जीवन छोड़कर किसी गिरि कन्दरा में बैठकर कोई कहे कि मैं अहिंसा का पालन कर रहा हूँ तो यह कोई बड़ी बात नहीं! बड़ी बात है—दूकान पर सौदा लेते और देते समय, यहा तक कि किसी को दण्ड देते और युद्ध करते समय भी अहिंसक बने रहना! मुनिजी का यह विश्लेषणात्मक भाषण अहिंसा के सम्बन्ध में नई दृष्टि, नया विचार और नया चिन्तन देगा, और तार्किक बुद्धि को नया समाधान '—स०)

"मानव-विचार, मनन और मथन में, सूक्ष्म शक्तियों का पुञ्ज है। यह अपने जीवन को नितान्त उज्ज्वल बना सकता है। वैसे तो प्राणी मात्र में सिद्धत्व और बुद्धत्व जैसे गुणों की उपलब्धि की सम्भावनाए हैं, किन्तु वे अपनी शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलताओं के कारण दैवी सम्पत्ति के महत्व को हृदयङ्गम करने में बहुत

एवं अथवा स्वर्ग है। नारकीय जीवों में शान्ति का अभाव रहता है तथा वे वातावरण में अभिभूत रहने के कारण, निरन्तर व्यथित एवं शमित रहते हैं। उनका सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि वे मानवों के समान अपने हिताहित कृत्याकृत्य को परख नहीं सकते। विवेक-बुद्धि का उनमें अभाव है। स्वर्गीय देवतागण भोग-विलास-मय जीवन व्यतीत करते हैं, जिससे केवल तप और त्याग से प्राप्त परमानन्द से वे वंचित ही रहते हैं। इस भांति केवल मानव ही एक ऐसा विचारशील एवं मननशील प्राणी है, जिसमें अपने वास्तविक हिताहित कृत्याकृत्य को परखने की विलक्षण क्षमता पाई जाती है। मानव ही अपने जीवन की संजीवन-विद्या के रहस्य को समझ सकता है।

समस्त भारतीय वाङ्मय एवं प्राचीन उपलब्ध साहित्य की सर्व प्रथम, सर्व प्रमुख अन्तर्चेतना एवं अन्तर्प्रेरणा है—अहिंसा। हमारे समस्त पुराण एवं इतिहास ग्रन्थ अहिंसा के गुरु-गम्भीर जयघोष से गुञ्जित हैं। सर्वत्र ही इस बात पर जोर दिया गया है कि मानव-जीवन की सफलता एवं सिद्धि के लिए अहिंसा तत्त्व को जानना अत्यावश्यक है। यह अहिंसा तत्त्व वास्तव में अखिल शक्तियों का अजस्र स्रोत है। वैसे तो अहिंसा तत्त्व की विशद व्याख्या महाकाय ग्रन्थ द्वारा ही विवेचित की जा सकती है, फिर भी उसका सूक्ष्म आभास करना ही आज के प्रवचन का मूलोद्देश्य है।

अहिंसा के दो प्रमाण पक्ष हैं, जिनका हृदयङ्गम किया जाना सबसे पहले आवश्यक होगा। अहिंसा, विधेयात्मक होती है एवं निषेधात्मक भी। अहिंसा का साधारण अथवा विविध अर्थों में प्रयोग का अभिप्राय है—किसी को पीड़ा नहीं पहुँचना, हिंसा न करना। यह तो केवल अहिंसा का निषेधात्मक अभिप्राय हुआ।

किन्तु अहिंसा का एक और अधिक गहन एवं रहस्यात्मक अभिप्राय भी है, जिसका आशय है—अपने जीवन की विविध शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं प्रक्रियाओं द्वारा, किसी प्रकार की अशान्ति, विक्षोभ एवं विषाद की अनुभूति होने की सम्भावना ही नष्ट हो जाए।

निषेधात्मक अहिंसा—इस तत्त्व के भी अनेक पक्ष हैं, जो मननीय एवं विचारणीय हैं। यह किसी गुण-विशेष का द्योतक न होकर एक सर्वतोमुखी आध्यात्मिक अनुशासन का प्रतीक है। सूक्ष्म दृष्टि से देखे जाने पर, उसमें सभी उत्तम गुणों का समावेश पाया जाता है। उदाहरणार्थ क्षमा से अभिप्राय है—यदि कोई व्यक्ति, अपनी इच्छा के विरुद्ध भी व्यवहार करे, तो भी हमारे हृदय में उसके लिए रञ्चमात्र भी रोष न उपजे। यही नहीं, हम उसके अज्ञान का बोध कराने के अभिप्राय से, उसके साथ ऐसा मधुर एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करें कि उसे अपनी भूल का स्वयं ही अनुभव हो जाए। क्षमा की परिणति एवं चरम अभिव्यञ्जना यही है। ध्यान पूर्वक विचार करने पर ज्ञात होगा कि क्षमा के इस सक्रिय रूप के मूल में अहिंसा ही प्रमुख आधार है। जो व्यक्ति क्रोध या आवेश के परिणाम में स्वयं जला जा रहा है, उसके साथ आक्रोशपूर्ण व्यवहार तो उसकी क्रोधाग्नि में घृत-सिंचन का काम ही करेगा। ऐसा करने से तो स्वयं क्लेश की प्राप्ति एवं दूसरे को भी क्लेश का परिणाम मिलने के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। ऐसे में स्वयं अहिंसक भाव को अपनाने से ही आत्म-सन्तोष एवं पर-मार्ग प्रदर्शन सम्भव हो पायेंगे। जो अपने साथ बुराई करे, उसके साथ हम मृदु-मिष्ट व्यवहार करें—जहर देने वाले को अमृत दें और पत्थर बरसाने वाले पर फूलों की बिखेर करें—ये सभी उदारतापूर्ण व्यवहार निषेधात्मक अहिंसा के मंगलमय पक्ष हैं।

विधेयात्मक अहिंसा—अहिंसा-तत्त्व का गहनतर एवं रहस्यात्मक तत्त्व ज्ञान है और तदनुसार अपने जीवन का नव सृजन है। उससे आध्यात्मिक अर्थ-दृष्टि की उपलब्धि होती है। वह एक प्रकार से मानव जीवन का सुसंस्कृत, सुविकसित एवं समुज्ज्वल विकास का राज-मार्ग है। उससे सभी प्राणियों में समान भाव, शान्ति-पूर्ण व्यवहार एवं धैर्यशीलता के अद्भुत गुणों की सिद्धि होती है। यह विधेयात्मक अहिंसा की साधना, निरन्तर अध्यवसाय स्वात्मानुशासन एवं तपस्या की अपेक्षा रखती है और जल्दबाजी में सिद्ध नहीं हो सकती। श्रद्धा, विश्वास एवं तदर्थ कष्ट सहन की उद्यतता, उसके अनिवार्य उपकरण हैं। अहिंसा के इस बलशाली पक्ष से नीच विचार, अधीरता एवं क्षुद्रता के अवगुण विनष्ट हो जाते हैं। महाकवि मिल्टन ने अपनी एक विश्रुत कविता में कहा है कि—"अहिंसा एवं क्षमा अपूर्व गुण हैं, जिनके द्वारा मानव सर्वोत्तम सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है और मानव-गुणों का मुख्य द्वार अहिंसा अथवा निर्वैर ही है।"

प्रेम अहिंसा का उद्गम स्रोत है। इसका प्रारम्भ होता है ममत्त्व से! और इसकी परिणति होती है तादात्म्य में। जब दूसरे के दुःख-दर्द को हम अपना दुःख दर्द मानने लगते हैं तो हमारे मन में अहिंसा का प्रादुर्भाव होता है। इस भांति यह स्पष्ट है कि अहिंसा तथा उत्तम व्यवहार के मूल में प्रेम ही मौलिक तत्त्व है। प्रेम-मूलक अहिंसा के द्वारा ही एक-दूसरे को परखने का अवसर मिलता है। ऐसी अहिंसा के राज्य में भय का अस्तित्व नहीं रहता। आज मानव को जितना भय एवं त्रास अन्य मानवों के द्वारा मिलता है, उतना तो उसे सिंह या सर्प से भी मिलने की आशा नहीं रहती। इसका कारण यही है कि मानव-हृदय में प्रेम का स्थान स्वार्थ ने प्राप्त कर लिया है। अहिंसा और प्रेम नैसर्गिक मानव गुण

है। उनके क्रियात्मक व्यवहार के लिये हमें किन्हीं कार्यों एवं व्यापारों की खोज करनी नहीं पड़ती। दूसरे शब्दों मे इसी को यों भी कहा जा सकता है कि अहिंसा तो अपने आप में स्वयंभू है, किन्तु हिंसा के प्रयोग के लिए हमें दूसरों की अपेक्षा रहती है। एक प्रकार से यदि व्यापक दृष्टि से देखें तो समस्त कार्य, व्यापार एवं प्रत्येक क्रिया का आधार या तो अहिंसा है अथवा हिंसा। हिंसायुक्त आचरण एवं चिन्तन से मानव पाशविक बन जाता है। इसके अतिरिक्त अहिंसा के आचरण से मानव की प्रकृति में दिव्यत्व की प्रतिष्ठा होती है।

भगवान् महावीर ने कहा है :

'एवं खु नाणिणो सारं जन हिंसइ किंचणं।'—सू० १, १, ३, ४।

ज्ञान का सार तो यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करना, आघात न पहुँचाना अथवा पीड़ा न देना। दूसरे शब्दों में समस्त प्राणियों को आनन्द पहुँचाने में ही ज्ञान की सार्थकता है। उपर्युक्त सूत्र में अहिंसा के निषेधात्मक एवं विधेयात्मक—दोनों ही पक्षों की विशद एवं सम्पूर्ण परिभाषा आगई है। उपर्युक्त सूत्र की पूर्ति हमें दशवैकालिक सूत्र में मिलती है, जहां कहा गया है कि—"अहिंसा निउणा दिट्ठा": अर्थात—द्रष्टा वही है जो कि अहिंसा के प्रयोग में निपुण है। इन थोड़े से शब्दों में गर्भित अहिंसा की विशद व्याख्या बारम्बार माननीय है।

हिंसा क्यों नहीं करनी चाहिये, इसको भी स्पष्ट किया गया है। उत्तराध्ययन-सूत्र में 'सव्वे पाणा पियाउया।' आ० २८, उ० ३। सभी प्राणियों को जीवित रहना ही प्रिय है। कोई भी, किसी भी अवस्था में मृत्यु एवं दु:ख को नहीं चाहता। इसलिए किसी को भी दुःख या

मृत्यु अभीष्ट नहीं है, इसको सदा सर्वदा ही ध्यान रखना उचित है। अहिंसक व्यवहार इसीलिये सभी प्राणियों के लिए प्रेय भी है और श्रेयस्कर भी। इसी तत्त्व को यों कहा गया है—

"पाणे य नाइवाएज्जा........निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥" उ० ८-६

जो व्यक्ति प्राणियों का वध नहीं करता, वह उसी भांति हिंसा कर्मों से मुक्त हो जाता है, जैसे कि ढालू जमीन पर से पानी बह जाता है। उसको जन्म-मृत्यु के बीच परिव्याप्त विभिन्न हिंसात्मक कार्य कलापों की कालिमा नहीं लग पाती और वह आद्योपान्त आत्म शुद्ध बना रहता है। इसी हेतु भगवान महावीर ने शान्ति की उप-लब्धि का मार्ग बताते हुए यों कहा है—'क्रमशः प्राणीमात्र पर दया करना ही शान्ति प्राप्त करना है।'

इस प्रकार अहिंसा तत्त्व की यदि व्यापक परिभाषा की जाये तो आध्यात्मिक दृष्टि से अहिंसा का व्यावहारिक स्वरूप है—राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, भीरुता, शोक आदि निकृष्ट भावों का परित्याग। केवल प्राणियों के प्राणों का हनन ही हिंसा नहीं है वरन् वास्तविक बात तो यह है कि जब तक मानव हृदय में क्रोध भाव आदि विद्यमान हैं, तब तक किसी के प्रति बुरा बर्ताव न करते हुए भी वह हिंसा से विमुक्त नहीं है। अहिंसा एक देशीय एवं सर्व देशीय—दो प्रकार की मानी जाती है। सांसारिक जीवन बिताने वाला व्यक्ति सर्व देशीय अहिंसा का पालन तो नहीं कर सकता, किंतु फिर भी वह नित्य प्रति के सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए एक देशीय अहिंसा का पालन करता ही रह सकता है। अहिंसक गृहस्थ, बिना प्रयोजन के या प्रयोजन से प्रेरित होकर दोनों ही अवस्थाओं में तुच्छ से तुच्छ प्राणी को भी कष्ट नहीं पहुँचायेगा। साथ ही देश रक्षा एवं समाज रक्षा के अभिप्राय से यदि उसे किसी

कर्त्तव्य प्रेरणा से प्रेरित होकर अस्त्र शस्त्रों तक का प्रयोग भी करना पडे तो वह अहिंसा व्रत का खण्डन नहीं माना जायेगा क्योंकि ऐसे शस्त्र प्रयोग में मौलिक प्रेरक तत्त्व तो वही 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय ही है।

धर्मानुयायी गृहस्थ केवल स्थूल हिंसा का परित्याग कर पाता है। स्थूल हिंसा से अभिप्राय है—निरपराधी प्राणियों का सकल्प पूर्वक, दुर्भावना या स्वार्थ से प्रेरित होकर हिंसा न करना। किसी भी प्राणी का भोजन के निमित्त प्राण हरण न करना। प्रत्येक प्राणी को उपयुक्त समय पर भोजन की आवश्यकता होती है। उसे टालने का कभी भी आलस्य व प्रयत्न न करे। जैन शास्त्रों में—"भत्त पाण विच्छेए" नामक दोष से गृहस्थ दूर रहें ऐसा उल्लेख है, अर्थात्—अपने आश्रित व्यक्ति से उसकी सामर्थ्य से अधिक काम लेना तथा उसे समय पर भोजनादि न देना भी हिंसात्मक दोष है। किसी भी प्राणी को अनुचित बन्धन में डालने से 'बन्धन' नामक हिंसात्मक दोष लगता है। किसी को मारना पीटना या गाली देना आदि 'भत्त पाण विच्छेए' दोष कहाता है। मारने की अपेक्षा अपशब्द का व्यवहार भी महादोष माना जाता है। उक्त पाच प्रकार के हिंसात्मक दोषों से परे रहना ही व्यावहारिक जीवन मे अहिंसा का प्रयोग करना एवं हिंसा से दूर रहना है।

आध्यात्मिक दृष्टि से अहिंसा पथ के पथिक को इस भांति सोच विचार करना चाहिये कि "जिसे मैं मारना चाहता हूँ, वह भी मैं ही हूँ, जिसके ऊपर मैं आधिपत्य स्थापित करना चाहता हूँ, वह भी मैं ही हूँ। जिसको मैं पीडा पहुँचाना चाहता हूँ, वह भी मैं ही हूँ। साम्य योग की दृष्टि के अनुसार जिन दूसरे व्यक्तियों के साथ मैं भला या बुरा बर्ताव करना चाहता हूँ वह भी मैं ही हूँ दूसरों को

बंधन में डालना, वस्तुत. स्वयं को ही बंधन में डालना है।" इस प्रकार का निरन्तर चिन्तन साधक को अहिंसक जीवन की ऊंची आदर्श भूमि पर ला खड़ा करता है।

गृहस्थ जीवन की भूमिका पर, जीवन निर्वाह करने वाले व्यक्ति को चार प्रकार की हिंसा से बचना आवश्यक है—संकल्पी, विरोधी. आरम्भी और उद्यमी। हिंसा के, इस दिन प्रतिदिन के जीवन में आरोप की परिभाषा करनी आवश्यक है। सबसे पहले हम संकल्पी हिंसा को ही लें। किसी विशेष संकल्प या इरादे के साथ किये गए. हिंसात्मक व्यापार को 'सकल्पी' हिंसा कहा गया है। शिकार खेलना मांस भक्षण करना आदि संकल्प कार्यों में 'संकल्पी' हिंसा होती है।

'विरोधी' हिंसा का अभिप्राय है—किसी अन्य द्वारा आक्रमण किये जाने पर उसके प्रतिकार करने में जो हिंसात्मक कार्य करना पड़ जाता है उससे। यह आक्रमण अपने व्यक्तित्व पर, समाज पर या देश पर, किसी पर भी, किसी के द्वारा कभी किया जा सकता है। ऐसे संकट काल में अपनी मान प्रतिष्ठा अथवा आश्रितों की रक्षा के लिये युद्ध आदि में प्रवृत्त होने को 'विरोधी' हिंसा कहा जाएगा। गृहस्थ जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग उपस्थित हो सकते हैं। ऐसे अवसर पर पीठ दिखा कर भागना अथवा जी चुराना, तो गृहस्थ अथवा सामाजिक कर्त्तव्य से प्रतिकूल होना है। हाँ, अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा यदि विरोध को अपनी व्यवहार कुशलता से टाला जाना सम्भव हो, तो उसके टालने का प्रयत्न अवश्य ही किया जा सकता है।

अमरीका के राष्ट्र-निर्माता अब्राहम लिंकन के कहे गये कुछ स्मरणीय शब्द यहाँ उल्लेखनीय हैं—'युद्ध एक नृशंस कार्य है। मुझे उससे घृणा है। फिर भी न्याय या देश-रक्षार्थ युद्ध करना

वीरता है। अपने देश की अखंडता के लिये किये गये धर्म-युद्ध को मैं न्याय समझता हूँ। मुझे उससे दुःख नहीं होता।" एक जैनाचार्य का इस सम्बन्ध में कथन है—

"केवल दण्ड ही निश्चय रूप से इस लोक की रक्षा करने में समर्थ होता है। किन्तु राजा द्वारा समान बुद्धि एव निष्पक्ष भाव से प्रेरित होकर यथा दोष चाहे वह शत्रु हो या अपना पुत्र हो, उसके साथ न्याययुक्त आचरण किया जाना उचित है। ऐसा दण्ड भी इस लोक में या परलोक में रक्षा करने वाला सिद्ध होता है।"

'आरम्भी हिंसा', मानव की नित्य प्रति की सहज जीवन-चर्या में भी जो हिंसात्मक कार्य-व्यवहार, बिना संकल्प के बनते ही रहते हैं। उनसे लगे हुए दोष का नाम आरम्भी हिंसा है। मानव को धर्म-कार्य के लिये भी शरीर की रक्षा अभिप्रेत है। तदर्थ भूख-प्यास के निवारण और 'आतप, शीत वर्षा आदि से स्वरक्षण, इन मे भी स्वाभाविक रूप से हिंसा होती रहती है। उसे हिंसा का 'आरम्भी' दोष कहा जाता है। 'हितोपदेश' में उक्त 'आरम्भी' हिंसा के सम्बन्ध में एक मनोहर कथा को हरिणी के मुख से कहलाया गया है—

"जब वन में पैदा होने वाले शाक-सब्जी, घास-पात आदि के खा लेने से ही, किसी भी प्रकार उदर-पूर्ति की जा सकती है; तो भला फिर इस आग लगे पेट को भरने के लिये महा पाप क्यों करें ?"

जैनाचार्य श्री हरि विजय सूरि आदि के सम्पर्क में आने से जब सम्राट् अकबर के मन में अहिंसा के प्रभाव से विवेक-बुद्धि जागृत हुई, उसका अबुलफजल ने यों वर्णन किया है कि— 'सम्राट

अकबर ने कहा कि यह उचित नहीं जान पड़ता कि इन्सान अपने पेट को जानवरों की कब्र बनाये। मांस भक्षण मुझे प्रारम्भ से ही अच्छा नहीं लगता था। प्राणी रक्षा के संकेत पाते ही मैंने माँस भक्षण त्याग दिया।"

'उद्योगी हिंसा' आजीविका-सम्बन्धी वृत्ति के निर्वाह करते समय स्वतः होती रहने वाली हिंसा को कहते हैं; जोकि कृषि आदि कर्मों में, जाने-अनजाने बन हो जाती है। फिर भी कृषि एवं वाणिज्य के मूल में लोक-मंगल एवं लोक-हित की भावना रहने पर 'उद्योगी हिंसा' के दोष का यत्किञ्चित परिमार्जन भी होना सम्भव होता है। इस भांति हम देखते हैं कि जीवन क्या है? एक सतत संग्राम है। इसमें अनन्त परिस्थितियों में होकर निकलना पड़ता है। किन्तु फिर भी यदि मानव अहिंसा के जीवन-सूत्र का निर्वाह करता हुआ इस धर्म-युद्ध में प्रवृत्त होता है तो उसकी विजय स्वतः ही सुनिश्चित रहती है। सभी महा पुरुषों की जीवन घटनाएँ इस तथ्य की साक्षी है कि उन्होंने अपने अपने कर्त्तव्य-निर्वाह की दुर्गम यात्रा में सदा ही 'अहिंसा' को सर्व-प्रथम माना है।

मानव एक चेतनाशील प्राणी है। किसी कारण वश उसकी यह चेतना शक्ति मन्द पड़ जाती है, तब वह आततायी एवं अत्याचारी हो जाता है। फिर भी उसकी नैसर्गिक सुषुप्त चेतना कभी न कभी जाग ही उठती है। तब उसे अपने किये हुए अज्ञानमय कार्यों पर पश्चाताप भी होता है। सिकन्दर, नेपोलियन, हिटलर आदि सभी ने अपनी जीवन-संध्या में यह अनुभव अवश्य किया कि उनके जीवन-काल में उनसे अनेक अन्यायपूर्ण एवं अनुचित कार्य बन पड़े, जिनका निराकरण करने के लिए उनके पास अन्त में कोई भी उपाय नहीं रहा। अपनी महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति की धुन में उन्होंने असंख्य नर-नारियों के हँसते-खेलते जीवनों को

ध्वंस कर डाला। सारांश तो यही है कि हिंसा में निरन्तर प्रवृत्त रहने पर भी अन्त मे अहिंसा की ही स्नेहमयी गोद में मानव को शांति एवं विश्रान्ति मिल पायेगी।

आज के अविश्वासपूर्ण वातावरण में, इस बात पर विश्वास करना कठिन होता है कि हिंसक विचारों द्वारा आयु बल क्षीण होते रहते हैं। निरन्तर हिंसात्मक विचारों में लीन रहना—निश्चित मृत्यु की ओर अग्रसर होने का ही द्योतक है। हिंसापूर्ण विचारों से मानव की बुद्धि भ्रान्त हो जाती है। उसकी शांति नष्ट हो जाती है। सद्वृत्तियां चली जाती हैं। इस भांति वह अनजाने ही सर्व नाश एवं मृत्यु के गह्वर में स्वयं ही दौड़ा चला जाता है।

वैज्ञानिक अभ्युदय के इस युग में, अहिंसा सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है। आज का मानव भौतिक पदार्थों के मायामोह में मतिमूढ हो रहा है। फिर भी उसका प्रत्यक्ष परिणाम सभी के समक्ष है। एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति से आशंकित एवं भयभीत है। एक देश दूसरे देश से शंकित एवं त्रस्त है। अणुबम आदि अनन्त परम संहारकारी अस्त्र शस्त्रों की होड़ ने आज मानव जाति के भविष्य पर प्रलयंकर घटनाएँ छा डाली हैं। चन्द्रलोक में भी अपनी सत्ता जमाने की महत्त्वाकांक्षा रखने वाला मानव कहीं अपनी इस घातक, संहारक उपकरण निर्माण की विघातक होड़ द्वारा कभी अपना अस्तित्व ही न मिटा ले, इसकी सदा ही आशंका बनी रहती है। इस विश्व-व्यापी अविश्वास, आतंक एवं हिंसा का निराकरण, केवल अहिंसात्मक संजीवन विद्या की साधना द्वारा ही सम्भव है।

अहिंसा के प्रयोग के लिए, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू पर, व्यापक क्षेत्र खुला हुआ है। समाज का प्रत्येक नागरिक

अपने-अपने क्षेत्र एवं परिस्थिति के अनुसार अहिंसात्मक जीवन अपनाने की साधना में प्रवृत्त हो सकता है। एक डाक्टर या चिकित्सक यदि अपनी चिकित्सा वृत्ति एवं भेषज विद्या का लक्ष्य मात्र धनोपार्जन न रखकर, लोक सेवा रख पाए, तो वह अधिक से अधिक अर्थों में एक अहिंसक जीवन बिताने में समर्थ हो सकता है। यदि कृषक संसार के भरण पोषण की भावना से अन्न का उत्पादन करे, तो वह भी अहिंसा-व्रत का व्रती कहा जा सकता है। व्यापारी लोक-हित को यदि प्रथम स्थान दे एवं धनार्जन को दूसरा, तो वह भी 'उद्योगी' हिंसा-दोष से बचा रह सकता है। श्रीमद् भगवद्-गीता के अंतर्गत् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया है कि—'जो व्यक्ति अपनी परिस्थिति के अनुसार अपने उत्तरदायित्व एवं स्व-धर्म का निर्वाह करता है, वह चिरस्थायी एवं शाश्वत श्रेय का भागी बनता है।'

इस संजीवन-विद्या की महाशक्ति 'अहिंसा' की आराधना-साधना द्वारा मानव ऊँची से ऊँची आध्यात्मिक सिद्धि का अधिकारी बन सकता है। भगवान् महावीर का आविर्भाव, महात्मा बुद्ध से ८२ वर्ष पूर्व हुआ था। उन्होंने अहिंसा की अमोघ शक्ति का ज्ञान जन-साधारण को हृदयंगम कराया एवं २५ सम्राटों ने उनके धार्मिक उद्बोधन को सुनकर राजपाट का परित्याग करके अपरिग्रह व्रत अपनाया था। उन्होंने श्रेणिक महाराजा बिम्बसार द्वारा, उसके संपूर्ण राज्य में हिंसा निषेध करवा दिया था। उन्हीं की प्रेरणा पाकर लाखों कोट्याधीशों एवं लाखों सुकुमार ललनाओं ने वैभव पूर्ण जीवन को ठुकराकर, वैराग्य वृत्ति स्वीकार की थी। आज भी भगवान् महावीर द्वारा प्रवर्त्तित जैन-धर्म के कारण विश्व में अहिंसात्मक भावनाओं एवं सिद्धान्तों का प्रचलन व अंगीकरण पाया जाता है।"

(२५०१ वीं बुद्ध जयंती, स्थान नैपाल)

नेपाल यात्रा का, इस तरह के सर्वजनोपकारी कार्यक्रमों का आयोजन होने से, बहुत महत्त्व बढ़ गया।

नगर के अनेक प्रमुख लोगों के अलावा वर्तमान खाद्य मंत्री श्री सूर्य बहादुर, माल पोत उपमंत्री श्री देवमानजी प्रधान न्यायाधीश श्री अनिरुद्ध प्रसादजी आदि के साथ हुई मुलाकात तथा धर्म चर्चा भी खूब याद रहेगी।

अब यहां से जिस रास्ते से होकर आये थे, उसी रास्ते वापस भारत के लिए लौट जाना है। नेपाल-यात्रा बड़ी सुखद, अनुभव दायी, सर्व जनोपकारी एवं संस्मरणीय रहेगी। ऐसे प्रदेशों में आने से ही वास्तविक दुनिया का ज्ञान होता है और नई नई बातें सीखने-समझने का अवसर मिलता है

रक्सोल

ता० ५-६-५७ :

नेपाल की दुर्गम दुरूह घाटियां लांघ कर अब हम पुन: हिन्दुस्तान में प्रवेश कर रहे हैं। रक्सोल दोनों देशों के मध्य में पड़ने के कारण एक अच्छा सेंटर बन गया है। यहां से नेपाल और मुजफ्फरपुर के बीच के लिए एक सीधे राजमार्ग का निर्माण हो रहा है। यहां से सीतामढी, दरभंगा, समस्तीपुर, मुजफ्फरपुर आदि के लिए रेलें जाती हैं। हम भी इसी रास्ते से आगे बढने वाले हैं। उत्तर-बिहार की पूरी परिक्रमा हो जाएगी उत्तर बिहार का भारत में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहां कई विशिष्ट एतिहासिक स्थान भी हैं और इस क्षेत्र के लोगों ने देश के विकास में अपना उल्लेखनीय योग दिया है। क्योंकि हमें चातुर्मास के लिए मुजफ्फरपुर पहुँचना है, इसलिए समय तो थोड़ा ही है, पर इस थोड़े समय का ठीक ठीक उपयोग करके उत्तर-बिहार का पूरा परिचय तो प्राप्त कर ही लेना है।

दरभंगा

ता २४-६-५७ :

हम दरभंगा में २० जून को पहुँचे। यहां के लोगों की भक्ति और आग्रह ने हमें ४ दिन रोक लिया। दरभंगा संस्कृत-प्रचार की दृष्टि से काशी के बाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। मिथिला-क्षेत्र का केन्द्र होने से दरभंगा का अनूठा ही महत्त्व हो गया है। हमने यहां चार व्याख्यान दिये। व्याख्यानों में शहर की आम जनता बड़ी संख्या में आती थी।

जिन विषयों पर व्याख्यान हुए, वे इस प्रकार हैं—

(१) आज के युग की समस्याएँ कैसे हल हो ?
(२) व्यावहारिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग
(३) मानव के कर्त्तव्य
(४) मानवता के सिद्धांत

लोगों का आग्रह रहा कि अगला चातुर्मास यहां पर ही संपन्न किया जाय। इस तरह यहां आना बहुत सार्थक रहा। मारवाड़ी भाइयों के भी यहां पर दो सौ घर हैं। एक राजस्थान विद्यालय भी है। हमने राजस्थान विद्यालय का निरीक्षण किया। अच्छे ढंग से चल रहा है। विद्यार्थियों से दो शब्द कहते हुए मैंने बताया कि "आप आज विद्यार्थी हैं, लेकिन जब पढ़-लिखकर बड़े बनेंगे, तब आपके कंधों पर देश के निर्माण तथा संचालन की जिम्मेदारी आयेगी। आप ही नेता, विचारक, डाक्टर, वकील, प्रोफेसर उद्योगपति, व्यापारी आदि बनेंगे। अतः आपको अभी से अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए। यदि आप अभी कुसंगत, व्यसन, आलस्य,

प्रमाद, उद्दण्डता, आदि दोषों के शिकार हो जायेंगे, तो आगे कैसे राष्ट्र की बागडोर सभाल सकेंगे ? यह विचार करने की बात है। इसलिए अभी से अपने जीवन में संयम, सदाचार आदि सद्गुणों को स्थान दीजिये। कोई भी आदमी आत्म-गुणों के आधार पर ही बड़ा बन सकता है। आज के विद्यार्थी अविनीत और उद्दण्ड होते हैं, यह ठीक नहीं है। विद्या के साथ विनय तथा नम्रता आनी चाहिए।"

समस्तीपुर

ता० ३०—६—५७ :

यहां पर आने से स्थानीय जन-समाज में एक विशेष प्रकार का औत्सुक्य फैल गया। हमें देखने के लिए, चर्चा तथा वार्तालाप करने के लिए विविध प्रकार के लोग आने लगे। हम जब २८ तारीख को यहां आये, तो विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान देने के लिए आग्रह भी होने लगे। आखिर ३ व्याख्यान स्वीकार किये। पहला व्याख्यान मारवाड़ी, ठाकुरवाड़ी में 'विश्व की समस्याएं" विषय पर हुआ। इस व्याख्यान से आम लोगों में विशेष रुचि देखी गई। दूसरा व्याख्यान जैन मारकेट में हुआ जिसका विषय था ' दैनिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग।" तीसरा व्याख्यान नई धर्मशाला में "विकास के मूलभूत सिद्धांत"के संबध में हुआ। समस्तीपुर में भी ३ दिन का दिलचस्प वातावरण रहा।

पूसारोड़ स्टेशन

ता० २—७—५७ :

पहले यहां पर भारत प्रसिद्ध कृषि महा विद्यालय था। जिसमें विभिन्न प्रकार की कृषि संबंधी प्राविधिक शिक्षा दी जाती थी। अब वह महा विद्यालय नई दिल्ली में इसी नाम से चल रहा है।

यहां पर अभी गांधीवादी कार्यकर्ताओं के बहुत बड़े २ केन्द्र चलते हैं। एक कस्तूरबा महिला विद्यालय और दूसरा खादी ग्रामोद्योग कार्यक्रम। दोनों में कुल मिलाकर सैंकड़ों भाई-बहन काम करते हैं। कस्तूरबा विद्यालय महिलाओं के शिक्षण का और उन्हें ग्राम सेविका बनाकर गांवों में भेजने का आदर्श कार्य कर रहा है। इस विद्यालय की बहनें प्रान्त भर में फैली हुई हैं और गांवों में अशिक्षित महिलाओं को शिक्षा देना, ग्रामोद्योग सिखाना, सिलाई सिखाना, सफाई सिखाना, उनके गंदे बच्चों को नहलाकर उन्हें तैयार करना, उनको नाचना, गाना भी सिखाना, बीमारों की सेवा करना आदि करुणा मूलक काम करती हैं। इनका संचालन बिहार शाखा कस्तूरबा स्मारक निधि की ओर से होता है। यहां की संचालिका सु श्री सुशीला अग्रवाल बहुत ऊंचे विचारों की और सेवा-त्यागमय जीवन बिताने वाली ब्रह्मचारिणी तरुणी हैं! ये पहले किसी कालेज में प्रोफेसर थी। अब सब कुछ छोड़कर सेवा का काम करती हैं। एक यहां माताजी हैं, जिन्हें लोग 'गायों की माताजी' के नाम से पुकारते हैं। वे भी बहुत उच्च कोटि की सेवा-भावी महिला हैं। और भी बहुत सी बहनें हैं। यह संस्था राष्ट्र के लिए आदर्श कार्य कर रही है।

यहां की दूसरी मुख्य प्रवृत्ति खादी ग्रामोद्योग की है। खादी का आरंभ से लेकर अंत तक समग्र दर्शन यहां होता है। कपास पैदा करना, धुनना, कातना, कपड़ा बनाना, इसी तरह चरखे तैयार करना आदि सब काम यहां होते हैं और सिखाए भी जाते हैं। यह सस्था एक गांव की तरह बहुत बड़े पैमाने पर बसी हुई है। इस संस्था की ओर से आसपास के देहाती-क्षेत्र में जो काम चल रहा है, वह भी दर्शनीय एवं उल्लेखनीय है। अंबर चरखे-द्वारा स्वावलंबन करने और गरीबी मिटाने का एक सफल प्रयोग यहां पर

हो रहा है। दिनभर खेती करने के बाद रात को स्त्री-पुरुष-बच्चे सब अंबर चर्खा चलाते हैं। उनकी यह मान्यता है कि यह मजदूरी का तो सबसे बड़ा साधन है ही, देश में जो बेकारी का भूत है, उसे भगाने के लिए यह अचूक प्रयोग है। गांधीजी ने ग्राम स्वावलंबन का जो चित्र अपने मस्तिष्क में बनाया था, वह यहां पर साकार-जैसा होता दीख रहा है।

यदि हम इस यात्रा में पूसारोड न आते तो, एक कमी ही रह जाती। ये दोनों संस्थाएं बहुत दर्शनीय है। राष्ट्र सेवा का यदि सरकार के अलावा कोई ठोस आर्थिक कार्यक्रम चल रहा है तो वह सर्वोदय वालों की ओर से चल रहा है ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

मुजफ्फरपुर

ता० ६-७-५७ :

पूसा से हम लोग बखरी, पीलखी तथा रोहुआ होकर आये हैं। इन तीनों गावों में रात्रि प्रवचन हुआ। लोगों ने बहुत उत्साह के साथ स्वागत किया। धर्म चर्चा की और व्याख्यान सुना। इस क्षेत्र में वैष्णव ब्राह्मणों की तादाद काफी है। ये सब शुद्ध शाकाहारी होते हैं।

चातुर्मास व्यतीत करने के लिए आज हम पुन. मुजफ्फरपुर आगये हैं। चार महिने तक यहां रह कर हमें अपने आध्यात्मिक जीवन का विकास करते हुए जन मानस को आध्यात्मिक चिन्तन की ओर प्रवृत्त करने की कोशिश करनी है। क्योंकि आखिर साधु का कर्तव्य यही तो है। उसे अपने और समाज के आध्यात्मिक जीवन की ओर निरन्तर ध्यान रखना है। जो साधु अपने इस

पावन कर्तव्य से विमुख हो जाता है वह अपने उद्देश्य तक पहुँचने में सफल नहीं हो सकता।

यह नया क्षेत्र है इसे तैयार करना हमारा काम था अतः हमने सम्प्रदाय के भेदभावों को जनता के सामने न रखते हुए हमने मानवता के सिद्धान्त ही जनता के सन्मुख रखे।

ता० २–९–५७ :

इस चातुर्मास का सबसे मुख्य कार्यक्रम आज सानंद सम्पन्न हुआ है। यह कार्यक्रम सांस्कृतिक सप्ताह समारोह का था। ता० २५-८-५७ को सप्ताह आरम्भ हुआ और आज समाप्त हुआ। इन ७ दिनों में विविध विषयों के सम्बन्ध में विद्वान वक्ताओं ने जो विचार प्रस्तुत किये, वे न केवल विद्वतापूर्ण थे बल्कि चिन्तनीय एवं मननीय भी थे।

कार्यक्रम इस प्रकार रहा:—

ता० २५–८–५७ रविवार :—

सभापति—डा० सुखदेवसिंह शर्मा, M ·A. Ph., D.,
प्राध्यापक, दर्शन विभाग,
लङ्गटसिंह कालेज, मुजफ्फरपुर।
वक्ता—डा० हीरालाल जैन, M. A., LL. B., D. Litt.,
निर्देशक, प्राकृत जैन विद्यापीठ, मुजफ्फरपुर।
विषय—भारतीय संस्कृति और उसको जैन धर्म की देन।

ता० २६–८–५७ :

सभापति—डा० एस० के० दास, M.A.,P.R.S Ph.D.,
अध्यक्ष, दर्शन विभाग, लङ्गटसिंह कालेज।

वक्ता—श्री चन्द्रानन ठाकुर, लङ्गटसिंह कालेज।
विषय—वेदान्त दर्शन।

ता० २७–८–५७ :

सभापति—प० रामनारायण शर्मा M.A., वेदान्ततीर्थ,
साहित्याचार्य, न्यायशास्त्री, साहित्यरत्नादि,
अध्यक्ष—संस्कृत विभाग, लंगटसिंह कालेज।
वक्ता—प० सुरेश द्विवेदी, वेद व्याकरण, वेदान्ताचार्य,
प्रिंसिपल, धर्मसमाज संस्कृत कालेज, मुजफ्फरपुर।
विषय—वैदिक संस्कृति।

ता० २८–८–५७ बुधवार:—

सभापति—डा० हीरालाल जैन, M.A., L.L.B , D. Litt.,
वक्ता—डा० याई० मसीह,
प्राध्यापक, दर्शन विभाग, लंगटसिंह कालेज।
विषय—वर्तमान युग में धर्म का स्थान।

ता० २९–८–५७ बृहस्पतिवार:—

सभापति—प० रामेश्वर शर्मा
वक्ता—मुनि श्री लाभचन्द्रजी महाराज।
विषय—अहिंसा एवं विश्वमैत्री।

ता० ३०–८–५७ शुक्रवार:—

सभापति—प्रिंसिपल गया प्रसाद,
रामदयालुसिंह कालेज, मुजफ्फरपुर।

वक्ता—श्री रामस्वरूपसिंह, M.A.,
दर्शनविभाग, लंगटसिंह कालेज।
विषय—वर्तमान युग में धर्म की आवश्यकता।

ता० ३१–८–५७ शनिवारः—

सभापति—डा० वाई० मसीह, M. A., Ph. D., (Eden) D. Litt.,
दर्शनविभाग, लंगटसिंह कालेज।
वक्ता—प्रिंसिपल एल० घोष,
महन्त दर्शनदास महिला कालेज।
विषय—ईसाई धर्म।

ता० १–९–५७ रविवारः—

सभापति—प्रिंसिपल एल० घोष,
महन्त दर्शनदास महिला कालेज।
वक्ता—श्रीमती रत्नाकुमारी शर्मा, अध्यक्षा हिन्दी विभाग,
महन्त दर्शनदास महिला कालेज।
विषय—बौद्ध धर्म।

ता० २–९–५७ सोमवारः—

सभापति—श्री सीतारामसिंह, M. A.,
प्राध्यापक, इतिहास विभाग, लंगटसिंह कालेज।
वक्ता—श्री राजकिशोर प्रसाद सिंह, M. A.,
अध्यक्ष, इतिहास विभाग, रामदयालुसिंह कालेज।
विषय—सैन्धव सभ्यता।

इस कार्यक्रम में मुजफ्फरपुर की जनता ने आशातीत संख्या में भाग लिया। संस्कृति ही जीवन के विकास की सीढ़ी है। मानव-समाज प्रकृति की ओर बढ़े, यह परम आवश्यक है। आज तो चारों ओर विकृतियां दिखाई दे रही हैं। खान पान, रहन-सहन, वेष-भूषा बोल-चाल इत्यादि सब कामों में ऐयाशी, दिखाऊपन, आडम्बर, स्वार्थ और अवास्तविकता का समावेश हो रहा है। यह दिशा संस्कृति की नहीं, बल्कि विकृति की है। अतः जगह-जगह सांस्कृतिक सप्ताहों के द्वारा जनता को शिक्षित करने की जरूरत है और उसे सांस्कृतिक-जीवन अपनाने की प्रेरणा देनी चाहिए। मुजफ्फरपुर में सांस्कृतिक सप्ताह के इस आयोजन ने एक प्रकार की वैचारिक जागृति उत्पन्न की और लोगों को यह अनुभूति हुई कि उन्हें अपने जीवन में संयम, स्वाध्याय, आध्यात्मिकता आदि को प्रश्रय देना चाहिए और प्रत्येक प्रवृत्ति के पीछे एक निश्चित उद्देश्य होना चाहिए। इस सांस्कृतिक सप्ताह से यहां की जनता बहुत प्रभावित हुई एवं जैन धर्म की विशालता एवं सर्व धर्म समन्वय करने की स्याद्वाद नीति की भूरि भूरि प्रशंसा की।

ता० ३-११-५७ :

मुजफ्फरपुर के इस चातुर्मास में विभिन्न मुहल्लों और बाजारों में आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन होते रहे एवं जनता को सद्-प्रेरणा मिलती रही। इसके साथ ही महिला-जागृति की ओर भी विशेष ध्यान दिया। क्योंकि बिना दोनों चक्कों के समाज रूपी रथ आगे नहीं बढ़ सकता। पर आज भारतीय समाज में और विशेष रूप से उच्च एवं मध्यमवर्ग में महिलाओं की दशा अत्यंत शोचनीय है। उनमें शिक्षा का तथा अच्छे संस्कारों का अभाव है। उन्हें किसी प्रकार की स्वतन्त्रता नहीं है, अतः वे हर क्षेत्र में बहुत पिछड़ी हुई हैं। इसलिए हमने इस पहलू की ओर विशेषरूप से ध्यान दिया।

पहला महिला सम्मेलन ता० १३-१०-५७ को गंगाप्रसाद पोद्दार स्मृति भवन में किया गया। दूसरा सम्मेलन ता० १८-१०-५७ को हुआ। तीसरा सम्मेलन ३१-१०-५७ को किया गया। चौथा सम्मेलन आज महिला मण्डल में हुआ। इन सम्मेलनों का स्वरूप काफी विराट था और कुल मिलाकर हजारों स्त्रियों ने भाग लिया।

इन सभी प्रवचनों में हमने नारी-जागृति के लिए विशेषरूप से प्रेरणा देते हुए कहा कि—

"नारी ही समाज की रीढ़ है। मां, पत्नी और बहन के रूप में उस पर बहुत बड़े-बड़े सामाजिक उत्तरदायित्व हैं। किन्तु आज हर क्षेत्र में चाहे, विद्या का क्षेत्र हो, चाहे सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र हो, चाहे दूसरा कोई क्षेत्र हो पुरुष ने नारी को किनारे कर रखा है। यह स्थिति स्वस्थ नहीं है। नारी समाज को अपने उत्तर-दायित्वों का भान करना चाहिए और उसे हर क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहिए।

आज नारी के पीछे रहने का बड़ा कारण उसकी रुढ़िवादिता एवं अशिक्षा है। यदि वह इन दो रोगों से मुक्त होकर जीवन-पथ में आगे बढ़े तो निश्चय ही अनेक क्षेत्रों में उसे पुरुषों से अधिक सफलता प्राप्त होगी।"

ता० ८–११–५७ :

ता० ६-७-५७ को यहां चातुर्मास व्यतीत करने के लिए हम आये थे और आज यहां से आगे रवाना हो रहे हैं। संयोग के साथ ही वियोग जुड़ा है और आने के साथ ही जाना जुड़ा है। यही प्रकृति का नियम है और इसी नियम के सहारे पर संपूर्ण सृष्टि चल रही है।

डा० हीरालालजी तथा डा० नथमलजी टांटिया जैसे धुरंधर जैन विद्वानों का सहयोग सदा याद रहेगा। वे आज विदा के अवसर पर भी उपस्थित थे। इसी तरह इस अजैनों की बस्ती में अजैन भाइयों ने हमें जो सहयोग दिया, प्रचार कार्य में हमारा साथ दिया और आध्यात्मिक मार्ग को समझने का प्रयत्न किया, वह सब उल्लेखनीय है। विहार के समय पर गद्-गद् हृदय से विदाय देने के लिये हजारों भक्त सावण जलधर की तरह अपने नेत्रों में आंसू धाराए बहाते हुए ३ मील तक चले। उस समय का दृश्य बड़ा करुणाप्रद था और चातुर्मास की महान् सफलता का यही एक बड़ा नमूना भी है।

आरा

ता०-१७-११-५७ :

आरा में दिगंबर समाज के काफी घर हैं। कई विद्वान भी यहां पर हैं। दिगम्बर समाज की ओर से महिला-शिक्षण और महिला जागृति का यहां पर जो काम हो रहा है, यह बहुत ही उल्लेखनीय है। इस प्रकार के केन्द्र देश के कोने कोने में होने से ही स्त्री-शक्ति का जागरण संभाव्य है।

आरा का सरस्वती पुस्तकालय भी अपने आप में एक अनुपम संग्रह है। पुस्तकें मानवजाति की सबसे बड़ी निधि होती हैं। मनुष्य का ज्ञान-कोष पुस्तक में ही संचित रहता है। आदमी चला जाता है, पर पुस्तक में प्रतिष्ठापित उसका अनुभव और ज्ञान सदा अमर रहता है। अगर मानव समाज के पास पुस्तक न होती तो आज जो हजारों वर्षों पुराना वेद, पुराण, सूत्र, आगम; त्रिपिटक, कुरान,

बाइबिल, रामायण महाभारत आदि हमें उपलब्ध है, वह कहां से मिलता। इसीलिए ज्ञान भंडार, आगम भंडार, पुस्तकालय आदि का बहुत महत्त्व होता है। यहां के सरस्वती पुस्तकालय में भी महत्त्वपूर्ण ग्रथों का संग्रह कनड़ी भाषा में करीब १५००० हस्त-लिखित पुस्तकों का ताड़पत्र पर है।

शाँतिनाथ मन्दिर में दिगम्बर जैन मुनि श्री आदिसागरजी के साथ व्याख्यान देने का अवसर मिला। जनता पर इस प्रेम पूर्ण मिलन का अत्यंत अनुकूल प्रभाव पड़ा। हम सभी संप्रदायों के जैन मुनि अनेकान्तवादी भगवान महावीर के पुजारी हैं। पर आपस में प्रेम पूर्वक व्यवहार नहीं रखते। इससे जैन धर्म की स्थिति क्षीण होती जा रही है। मान्यताओं और सिद्धांतों में मतभेद होने के बावजूद आपसी प्रेम का व्यव्हार नहीं तोड़ना चाहिए।

इसी प्रकार श्री चन्द्रसागरजी महाराज के साथ भी जो मिलाप हुआ वह सदा स्मरण रहेगा।

आज भगवान महावीर का पवित्र शासन दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी, मूर्तिपूजक, तेरापंथी आदि विभिन्न संप्रदायों में बंटगया है। एक संप्रदाय वाले दूसरी संप्रदायवालों को अपने में शामिल करने की धुन में रहते हैं। तथा एक दूसरे के विरुद्ध वातावरण तैयार करने में शक्ति लगाते हैं। इससे जैन धर्म का आगे विस्तार नहीं हो पाता। अतः इस समस्या के बारे में जैन विद्वानों को गंभीरता से विचार करना चाहिएं।

सहसराम

ता० २४-११-५७ :

सहसराम मुगल युग में एक महत्त्वपूर्ण नगर था। इसलिए अब इसका ऐतिहासिक महत्त्व माना जाता है। शेरशाह ने १४४५ में एक

सुन्दर जलागार यहां पर बनाया था, वह अभी भी इतिहास-जिज्ञासु पर्यटकों के लिए आकर्षण एवं दिलचस्पी का केन्द्र है। इसी पक्के जलागार के बीच में वह "रोजा" बना हुआ है, जिसे देखने के लिए दूर दूर के लोग आते हैं।

सहसराम एक केन्द्र-स्थान है। यहां से चारों ओर जाने के लिए पक्के राजमार्ग बने हुए हैं। पटना, धनबाद, कलकत्ता, दिल्ली, आगरा, आदि की ओर सड़कें गई हैं।

सड़क पर ही घासीराम कालीचरण की जो धर्मशाला है, उसमें हम लोग ठहरे। यहा से हमें मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र होते हुए आन्ध्र-हैदराबाद की ओर आगे बढना है। लंबा रास्ता है।

वाराणसी

ता० १६-१२-५७ :

वाराणसी भारत का प्रसिद्ध तीर्थ ही नहीं है, बल्कि यह विद्या, संस्कृति और साहित्य का एक अनूठा केन्द्र भी है। एक ही शहर में २ विश्व विद्यालय, और वे भी अपने अपने ढंग के अद्वितीय।

हमने हिन्दू विश्व विद्यालय और संस्कृत विश्व विद्यालय का निरीक्षण करके यह महसूस किया कि काशी नगरी सचमुच विद्या की नगरी है। हिन्दू विश्व विद्यालय तो अपने आप में एक सुन्दर नगर ही है। इसकी स्थापना पं० मदन मोहन मालवीय के सद्प्रयत्नों का परिणाम है उन्होंने दिन रात एक करके इस संस्थान को खड़ा किया। ४ फरवरी १९१६ में तत्कालीन वाइसराय लार्ड हार्डिंग ने इसका शिलान्यास किया। सन् १९२१ में ग्रेट ब्रिटेन के

राजकुमार प्रिंस ओफ वेल्स ने इसका उद्घाटन किया। पांच स्क्वायर मील की परिधि के अन्दर लगभग १३०० एकड़ भूमि में विश्व-विद्यालय बना हुआ है। छात्रालय, महाविद्यालय, अध्यापकों के निवास, पुस्तकालय, चिकित्सालय आदि की सुन्दर इमारतें शिल्प कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नमूने की हैं। विश्व विद्यालय के मध्य में लाखों रुपये खर्च करके विश्वनाथजी का एक दर्शनीय मंदिर भी बनाया गया है। यहां पर जैन दर्शन के अध्ययन का भी विशेष प्रबंध है। पहले भारत विश्रुत जैन विचारक पं० सुखलालजी जैन दर्शन के अध्यापक थे और आजकल उन्हीं के शिष्य तथा प्रकांड विद्वान पं० दलसुख मालवणिया अध्यापक हैं।

विश्व विद्यालय से संबद्ध एक जैन संस्था भी है जो पंजाब की श्री सोहनलाल जैन-धर्म प्रचारक समिति की ओर से चलती है। इस सस्था का नाम है— श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम। हम यहां पर भी आकर रहे। अधिष्ठाता पं० कृष्णचन्द्राचार्य तथा मुनि आईदानजी से मिलाप हुआ। यह संस्था जैन-समाज की उत्कृष्ट सेवा कर रही है। जैन-विषयों पर एम. ए., आचार्य ओ. पी. एच. डी. के अध्ययन के लिए, छात्रवृति, निवास, पुस्तकालय आदि की सुविधाएँ दी जाती हैं। एक उच्चस्तर का मासिक पत्र "श्रमण" भी यहां से निकलता है। काशी के घाट भी बहुत सुन्दर हैं, इसलिए बहुत प्रसिद्ध है। गंगा नदी काशी के चरणों को पखारती हुई आगे बढ़ती है।

न केवल हिन्दुओं के लिए बल्कि जैनों और बौद्धों के लिए भी काशी तीर्थ स्थान है। तीन जैन तीर्थंकरों के चरणों से काशी नगरी पवित्र हुई है। हम एक दिन भेलूपुर के श्री पार्श्वनाथ मन्दिर में भी रहे। इस ऐतिहासिक मन्दिर के दर्शनों के लिए हजारों जैन धर्मावलम्बी प्रतिवर्ष आते हैं।

बौद्धों का तीर्थ स्थान सारनाथ है। ऐसा बताया जाता है कि तपस्या करते समय महात्मा बुद्ध के पांच शिष्य उन्हें छोड़कर यहां आगये थे। इसके बाद बोद्धगया में, बुद्ध को बोद्धि (आत्म ज्ञान) मिली। तब बुद्ध ने सोचा कि सबसे पहले मुझे अपने उन पांचों शिष्यों को ही उपदेश देना चाहिए। अतः वे बोधगया से चलकर वाराणसी आये और सारनाथ में ठहरे हुए अपने पांचों शिष्यों को प्रथम उपदेश दिया। यह प्रथम उपदेश ही धर्म चक्र प्रवर्तन के रूप में विख्यात हुआ। यही स्थान यह सारनाथ होने के कारण, इसका बहुत महत्त्व माना जाता है।

हम बनारस में ता० ३-१२-५७ को ही आगये थे। यहां १३ दिन रहकर विभिन्न स्थानों का पर्यवेक्षण किया। यहां पर भूतपूर्व तेरापंथी मुनि श्री हस्तीमलजी 'साधक' से मिलाप हुआ। ये बहुत अच्छे विचारक और सर्वोदय कार्यकर्ता हैं। बनारस में सर्वोदय का साहित्य प्रकाशन मुख्य रूप से होता है। अखिल भारत सर्व सेवा संघ इस काम को करता है। विविध पहलुओं से विविध प्रकार का साहित्य यहां से निकाला गया है। इस प्रकार लगभग दो सप्ताह का वाराणसी प्रवास बहुत अच्छा रहा। यहां पर स्थानक वासी समाज के करीब ३० घर हैं। बाकी श्वेताम्बर तथा दिगम्बर समाज के घर काफी सख्या में हैं। और सभी बिना भेद भाव के आपस में अच्छा व्यवहार रखते हैं।

पन्नी

ता० २८-१२-५७ :

पैदल यात्रा में अनुकूल तथा प्रतिकूल अनेक परिस्थितियों मे से गुजरना पड़ता है। हम महुगज से पन्नी पहुँचे। रास्ते में

आहारादि की सुविधा न मिली। हम "पन्नी" गांव के श्रीमान राजा राम के मकान पर पहुँचे। राजारामजी बाहर गए हुए थे। केवल महिलाएँ ही थी। सिर्फ तीन घर का छोटा गांव। हमको भूख और प्यास लग रही थी, अतः हमने छाछ की याचना की। बहनों ने कुछ छाछ वहराई और हम आगे चले। करीब १ मील की दूरी पर स्कूल में रात्री विश्राम लिया।

श्री राजारामजी जब घर आये तो महिलाएँ उनसे बोली कि आप तो बाहर गए हुए थे और पीछे से यहां मुंह बांधकर दो डाकू आये थे। अपना घर वगैरा देखकर गये हैं और स्कूल में हैं। यह सुनते ही श्री राजारामजी ने आस-पास के ३-४ व्यक्तियों को एकत्रित कर; लाठियां भाले वगैरा ले जहां हम ठहरे हुए थे वहां आये। स्कूल में सर्व प्रथम श्री राजारामजी भाला लेकर आये और बोले तुम कौन हो? कहां रहते हो? कहां से आये हो? उनका विकराल रूप देखकर हम डरे नहीं और हंसते हुए कहा—हम जैन साधु हैं, और पैदल यात्रा करते हुए हम नागपुर की तरफ जा रहे हैं। हम पैसे वगैरा-धातु मात्र नहीं रखते हैं। और पैदल यात्रा द्वारा संसार की सेवा करते हैं।

इस प्रकार निखालस भाव के शब्द सुनकर वे रोने लगे और बोले—हमने आपका बहुत बड़ा अपराध किया। माफ करना। हम तो आपको डाकू समझते थे क्योंकि आप जैसे मुनियों का यह प्रथम दर्शन हमको हुआ है। सभी लोगों ने करीब दो घंटे तक सतसंग किया, और बहुत प्रभावित हुए।

सतना

ता० ३-१-५८ :

नया वर्ष, नया प्रदेश, नया वातावरण, नया प्राण, नया आलोक ! सब कुछ नया ! नवीनता ही जीवन है।

"पदे पदे यन्नवता मुपैति, तदेव रूपं रमणीय तायाः !"

यह कालचक्र घूमता ही रहता है, दिन बीतता है, सप्ताह जाता, महीना भी चला जाता है और वर्ष भी देखते देखते व्यतीत हो जाता है। इस प्रकार वर्ष और युगों के साथ ही मनुष्य की आयु भी बीत जाती है। इस काल-चक्र को कोई भी पकड़ कर नहीं रख सकता।

हम बंगाल से चले, बिहार में आये, नेपाल को निहारा, उत्तर प्रदेश का भ्रमण किया और अब मध्यप्रदेश में बढ़े चले जा रहे हैं। सतना मध्यप्रदेश का एक छोटा पर रमणीय नगर है। यहां से बनारस १८० मील है और जबलपुर ११८ मील। जबलपुर होते हुए हमें आगे बढ़ना है।

जबलपुर

ता० ३०-१-५८ :

आज महात्मा गांधी का निधन-दिवस है। महात्माजी को जो मृत्यु प्राप्त हुई वह एक शहीद की मृत्यु थी। वीर मृत्यु थी। कहना तो यों चाहिये कि उनका बलिदान था। उन्होंने अपने जीवन में अहिंसा, सत्य और स्वातंत्र्य की उच्च साधना की। अं० में हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष को मिटाने की साध मन में लेकर वे चले गए।

२६ जनवरी को जबलपुर में जो गणतंत्र दिवस समारोह हुआ उसके संदर्भ में आज का दिन बड़ा भयानक सा मालूम देता है। क्योंकि जिस व्यक्तिकी तपस्या से भारत में गणतंत्र का उदय हुआ वही व्यक्ति एक भारतीय हिन्दू की गोली का शिकार हो गया।

हम १६ जनवरी को जबलपुर पहुँचे और कल यहां से आगे विहार करना है। इस अरसे में जबलपुर के शहर, और कैंट एरिया दोनों में रहे। दोनों ही क्षेत्रों में कत्ल खाने बंद हो, इस आशय का प्रस्ताव भी पारित किया गया। एवं उसी से गणतंत्र के रोज कत्ल खाने बन्द रहे।

जबलपुर मध्यप्रदेश का विशिष्ट नगर है। सारे मध्यप्रदेश की राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन करने में इस नगर का प्रमुख योगदान है। नित्य प्रवचन और धर्म चर्चा होती रही।

नागपुर

ता० २४-२-५८ :

मध्यप्रदेश से महाराष्ट्र! शिवाजी का मराठा देश। भारत के इतिहास में महाराष्ट्र की अपनी विशिष्ट देन है। शिवाजी जैसे देश भक्त राजाओं से लेकर तिलक एवं गोखले तक की कहानी भारतीय इतिहास में गौरव के साथ कही जाती रहेगी। न केवल राजनीतिज्ञों की दृष्टि से बल्कि संतों की दृष्टि से भी महाराष्ट्र उर्वर भूमि रही है ज्ञानदेव, नामदेव, तुकाराम, स्वामी रामदास और भी ऐसे कितने ही संतों ने भारतीय संत परम्परा की प्रथम श्रेणी को सुशोभित किया और आज भी आचार्य विनोबा जैसे संत महाराष्ट्र ने दिये हैं।

गांधीजी ने भी महाराष्ट्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था और जमनालालजी बजाज जैसे साथी भी उन्हें महाराष्ट्र की भूमि से ही प्राप्त हुए थे। गांधीजी की तपोभूमि वर्धा और सेवाग्राम यहां से केवल ५० माइल है। जिन दिनों में आजादी का आन्दोलन चल रहा था, उन दिनों में सारे देश की नजरें वर्धा और सेवाग्राम पर रहती थी।

इस महाराष्ट्र भूमि से होकर जब हम गुजर रहे हैं, तो यहां की ये समस्त विशेषताएँ हमारे मन पर एक विशिष्ट प्रभाव डालती हैं।

नागपुर हिन्दुस्तान का शिखर है। कलकत्ता, बंबई, मद्रास और दिल्ली ये चारों यदि इस देश के मजबूत स्तंभ हैं और बाकी सारा देश इन स्तभों पर खड़ा महल है तो नागपुर सारे देश के ठीक बीच में सुशोभित होने वाला शिखर है, ऐसा कहना अत्युक्ति नहीं।

जैनशाला के विद्यार्थियों और शहर के नागरिकों ने हमारा भाव भरा स्वागत किया।

नागपुर में कुछ दिन रुककर आगे बढ़ेंगे! रास्ता लंबा तय करना है, नेपाल देश के उत्तरी सिरे पर है और मद्रास दक्षिणी सिरे पर है। हमें हैदराबाद होकर आगे मद्रास एवं दक्षिण भारत की ओर बढ़ना है।

हिंगन घाट

ता० १३-३-५८ :

हिंगनघाट एक छोटासा सुन्दर नगर है। यहां पर स्थानक-वासी समाज के भी काफी घर हैं। मूर्तिपूजक समाज के लोग भी

अच्छी संख्या में हैं। स्थानक, मन्दिर उपाश्रय सभी हैं। चातुर्मास के लायक गांव है। भाव-भक्ति बहुत अच्छी है।

यहां पर कपड़े की मिलों के कारण आस-पास के मजदूरों का तथा व्यापार का अच्छा केन्द्र है। कुछ बाग बगीचे भी अच्छे हैं।

हम आये, तो भाई बहनों ने अच्छा स्वागत किया। जैन-समाज के रूप में सभी लोग आये। वातावरण बहुत सुन्दर रहा। वास्तव में यही तो जैन-धर्म का सच्चा लक्ष्य है। यदि जैन लोग आपस में ही छोटे छोटे मतभेदों को लेकर झगड़ते रहेंगे तो दुनिया को प्रेम, मैत्री, तथा अहिंसा का पाठ कैसे पढ़ा सकेंगे।

बोलारम

ता० १८-५-५८ :

यहां स्थानकवासी समाज के ३० घर हैं। पहुँचने पर खूब स्वागत हुआ। प्रतिदिन प्रवचन होते रहे। सिकन्दराबाद से काफी संख्या में श्रावकगण व्याख्यान सुनने आते थे।

मुनिवर श्री हीरालालजी महाराज एवं दीपचन्दजी महाराज से मिलाप हुआ। इस तरह के मिलन से सारी पूर्व-स्मृतियां जागृत हो उठती हैं और सात्विक- सौजन्य व भक्ति का सागर उमड़ पड़ता है। आज मुनिराजों से मिलन होने पर वैसा ही आनन्द हुआ जैसा किसी बिछुड़े के मिलने पर होता है। साधु तो आत्म साधना करने वाला मुक्त विहारी होता है पर गुरु परम्परा की डोर से वह बंधा हुआ भी है। यह डोर बहुत कोमल है और इस डोर में एक ही गुरु-परम्परा में विहरण करने वाले एक दूसरे से दूर होकर भी बंधे ही रहते हैं।

इस वर्ष का चातुर्मास सिकंदराबाद करना है। अत: यहां से सीधे सिकन्दराबाद के लिए ही विहार होगा।

सिकंदराबाद

ता० २५–६–५८ :

चातुर्मास करने के लिए आज सिकन्दराबाद में प्रवेश करने पर समस्त संघ ने हार्दिक स्वागत किया। बालक बालिकाओं ने एक भव्य जुलूस बनाकर सुन्दर दृश्य उपस्थित कर दिया था। मुनियों का चातुर्मास के लिए किसी भी नगर में आना उस नगरवासी जनता के लिए अत्यंत आनन्द और उल्लास की बात होती है। चार महीने तक लगातार धर्म प्रवचन श्रवण का लाभ भी तो अपने आप में एक महनीय लाभ है।

ता० १५ अगस्त ५८ :

यह आजादी का दिन! १५ अगस्त १९४७ की अर्ध रात्रि में जब सारा संसार सो रहा था तब हिन्दुस्तान जाग रहा था और स्वातन्त्र्य की खुशियाँ मना रहा था। आज आजादी प्राप्त हुए ११ वर्ष हो गये। एक बहुत बड़ी क्रांति हुई कि सदियों से राजनैतिक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ देश मुक्त हुआ पर वह क्रांति अधूरी थी। क्रांति की पूर्णता तो तभी होती जब इस देश के लोग आत्म-जागृति का और आन्तरिक स्वातन्त्र्य का पाठ सीखते। आजादी के इतने वर्ष बाद भी देश में दुःख दैन्य, पाप, भ्रष्टाचार, हिंसा, भेदभाव आदि दोष घटने के स्थान पर निरन्तर बढ़ते ही जा रहे हैं। क्या आजादी का अर्थ उच्छृंखलता है। कभी नहीं! आजादी का अर्थ

संयमित स्वातन्त्र्य से है। पर देश में संयम के स्थान पर, अनुशासन के स्थान पर असयम और उद्दंडता बढ़ रही है।'

१५ अगस्त के अवसर पर आयोजित एक विशाल सार्वजनिक सभा में मैंने उपरोक्त विचार प्रस्तुत किये।

ता० ३१–८–५८ :

एस० एस० जैन विद्यार्थी संघ ने एक विराट सभा का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता प्रमुख नागरिक श्री ताताचार्यजी एडवोकेट ने की। विषय रखा गया "भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता" मैंने अपने विचार व्यक्त करते हुएकहा कि "संस्कृति के टुकड़े नहीं किये जा सकते। संपूर्ण मानव संस्कृति अखण्ड है। अतः भारतीय और अभारतीय इस तरह के भेद संस्कृति में नहीं हो सकते। मानव-संस्कृति पर जब हम विचार करेंगे, तब इतना ही कह सकते हैं कि मानव दो प्रकार के होते हैं सत् और असत्। अतः संस्कृति भी दो प्रकार की हो सकती है—सत् संस्कृति एवं असत् संस्कृति। ये दोनों तरह की संस्कृतियां हर जाति और हर देश में पाई जाती है। भारत में यदि महावीर हुए तो गोशालक भी हुए। राम हुए तो रावण भी हुए। कृष्ण हुए तो कंस भी हुए। इसी तरह भारत से बाहर भी मुहम्मदसाहब तथा ईसा मसीह जैसे संत हुए हैं।

प्रत्येक मानव को सत् संस्कृति के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

ता० २१–६–५८ :

२१–६–५८ को क्षमापना पर्व मनाया गया प्रगति समाज की ओर से, आज सभी संप्रदायों के लोग मिलकर क्षमायाचना करें, ऐसा

आयोजन किया गया। हमने इस आयोजन में सहर्ष शामिल होना स्वीकार किया। दिगंबर पंडित, तेरापंथी साधु सागर मुनि, मूर्तिपूजक साधु प्रभावविजयजी आदि ने भी इस आयोजन में भाग लिया। इस तरह के आयोजनों से परस्पर प्रेम और मैत्रि बढ़ती है। विभिन्न सम्प्रदायों को मानने के बावजूद आखिर जड़ तो सबकी एक जैन धर्म ही है। आयोजन खूब सफल रहा।

पर्यूषण पर्व भी बहुत उत्साह और शान के साथ मनाया गया। त्याग, प्रत्याख्यान, तपस्या, पौषध, प्रतिक्रमण सभी कामों में स्थानीय समाज ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लिया। इस प्रकार हमारी सिकन्दराबाद तक की पैदल यात्रा सफल समाप्त हुई।

●●●●

यात्रा संस्मरण

卐

कलकत्ता से १६१ मील झरिया

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१५	सेवड़ा फूली	अग्रवाल भवन	अग्रवाल भाई अच्छे सज्जन हैं।
६	चन्द्रनगर	अग्रवाल भाई के यहां	,, ,, ,,
६	मगरा	मारवाड़ी राइस मिल	तीन घर मारवाड़ी भाईयों के।
६	पांडुवा	सिनेमा	सरदारमलजी कांकरिया।
१२	मेहमारी	मारवाड़ी राइस मिल	
६	शक्तिगढ़	बंगाली राईस मिल	
८	वर्धमान	रमजानी भवन	गुजराती मारवाड़ी के बहुत घर हैं।
५	फगुपुरा	स्कूल	
६	गलसी	स्कूल	

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
६॥	चुदचुद	पचेश्वर महादेव मन्दिर	
६॥	पानागढ़	हजारीमल बनारसीदास	तीन मारवाड़ी भाई के घर हैं।
३॥	खरासोल	स्कूल	
८	फरीदपुर थाना	थाना का बरामदा	
२	मोहनपुर	डाक बंगला	
५	करजोड़ा	पेट्रोल पम्प	
५	रानीगंज	धर्मशाला	यहां गुजराती स्था० जैन के १० घर हैं
४	मादग्राम कोल्यारी	कोल्यारी	
६	आसनसोल	स्कूल	
७	मिर्जापुर रोड	भीमसेनजी के यहां	
७	बर्द्धनपुर	बाम्बे स्टोर	यहां गुजराती भाईयों के तथा मारवाड़ी भाईयों के १० घर हैं।
६	श्यामलपुर	शांतिलाल एंड कंपनी	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
६	बराकर	मारवाड़ी विद्यालय	" " "
१२	बला	डाक बंगला	
८	गोविन्दपुर	मन्दिर	मारवाड़ी के ७ घर हैं।
७॥	धनबाद	महेता हाउस	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
४	झरिया	स्थानक	१५० घर हैं।

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
५	करकेन्द	धर्मशाला	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के बहुत घर हैं।
६	कतरास	स्थानक	३० घर हैं।
१॥	माताडीह कोल्यारी	गेस्ट हाउस	गुजराती भाईयों के घर हैं
७	वागमारा	नवलचन्द महेता	मारवाड़ी जैन के अनेक घर हैं।
७	चन्द्रपुरा	स्टेशन	
७	घोरी कोल्यारी	गेस्ट हाउस	
६	वेरमो	स्थानक	
६	बोकारो बोध	दयालजी भाई	
७	साडिम	दि० जै० मन्दिर	
६	बड़गांव	रामसती भवन	
६	दिगवाड़	स्कूल	
४	रामगढ़	बी० ओ० सी० पेट्रोल पंप	
६	चुटुपालु	डाक बंगला	
५	ओर मांझी	सुशीला भवन	
५	विकाश विद्यालय		
७	रांची	गुजराती स्कूल	

रांची से १९८ मील पटना

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
७	विकाश विद्यालय		
१०	चुटुपालु		
६	रामगढ़		
७	कुजु	जगदीश बाबू	एक घर गुजराती का है।

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७	माडु	माध्यमिक विद्यालय	
६॥	मेरागी	स्कूल	
७॥	हजारी बाग	स्कूल	
७	सिन्दुर	दि० जैन धर्मशाला	
६।	सूरजपुर गेट(पद्मा गेट)	स्कूल	
७	बरटि	गृहस्थ का मकान	
५	नयाग्राम	” ” ”	
६	झूमरीतिलैया	मारवाडी धर्मशाला	
४	कोडरमा	जैन पेट्रोलपप	
७	ताराघाटी	सरकारी मकान	
४	दिवौर	डाक बंगला	
७	रजौली	उच्च विद्यालय	
५	आन्दरबोरी	महावीर महतो	
६	फरहा	प्राथमिक स्कूल	
४	गुणावा	धर्मशाला	
८।	गिरियट	गृहस्थ के यहा	
५	पावापुरी	जैन धर्मशाला	
८	बिहार सरिफ	” ” ”	
६॥	बेटना	स्कूल	
२	बोएना	स्टेशन	
१	बख्त्यारपुर	धर्मशाला	
६	बाहुपुर	शभु बाबू	
२	बकटपुर	शिवमन्दिर	
५	फतुहा	महन्तजी का आश्रम	
४	सबरपुर	शिवमन्दिर	

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१	मवरपुर	धर्मशाला	
३	पटना	श्वे० जैन मन्दिर	

पटना से २०६ मील नेपाल

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	सोनापुर	हाई स्कूल	यहां की जनता धर्म प्रेमी है
४	हाजीपुर	गांधी आश्रम	" " "
८	चानिधनुकी	श्री तृप्तिनारायणसिंह	" " "
६	लालगंज	जगन्नारायण शाहु	" " "
६	भगवान पुररति	मन्दिर	" " "
३	वैशाली	जैन विश्राम गृह	यहां श्री तीर्थङ्कर भगवान हाई स्कूल है
२॥	वासुकुण्ड	जैन मन्दिर	यहां से दो फर्लाङ्ग पर एक स्थान है जहां भगवान महावीर का जन्म स्थान है।
२	सरौया कोडी	एक सोनी के मकान पर	ग्राम ठीक है
६	करजाचट्टी	रामलखन शाह	" " "
७	पताही गोला	सेठ नागरमल बंका का बगीचा	" " "
२	मुज्जफरपुर	मारवाड़ी धर्मशाला	नागरमल बंका आदि मारवाड़ियों के ६०० घर हैं वहां प्राकृत जैन इन्स्युच्युट चलता है
८	धरमपुरा	प्राईमरी राष्ट्रीय स्कूल	ग्राम साधारण
२॥	रामपुरा हरी	हाई स्कूल	ग्राम ठीक है
६॥	रुन्नि	अंबर चरखा सघ विद्यालय	" " "

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५	भुमा	संस्कृति विद्यालय	यहां महन्तजी अच्छे प्रेमी हैं
५	डुमरा	वसिष्ठ नारायणसिंह	ग्राम ठीक है
३	सीतामढ़ी	धर्मशाला	नन्दलाल जयप्रकाश अग्रवाल आदि के अनेकों घर हैं
११॥	सभासमोल	शिवमन्दिर	ब्राह्मणों के बहुत घर हैं भाविक हैं
४॥	ढेंग	बाबू सूर्यनारायणजी भोमियार	ग्राम अच्छा है
५	गोर	मारवाड़ी भाई के यहां	मारवाड़ियों के यहां ७ घर हैं नेपाल की सरहद शुरु होती है
४	बलुआ	खखनभगत	ग्राम ठीक है
३	लेकहा	मठ	" " "
१०	चिमदाहा	रामचरितसिंहजी का मठ	" " "
५	वरीयारपुर	मठ	
६	फलियाबाजार	बगीचा	
३	धीरगंज	महावीर प्रसाद धर्मशाला	मारवाड़ी भाईयों के १८० घर हैं रामकुँवार सुन्दरमलजी आदि अच्छे हैं
८	जीवपुर	गौशाला	ग्राम साधारण
३	सीमरा	वेटिंगरूम	हवाईजहाज का अड्डा है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१०	अमलेसगंज	विश्वनाथ दीनानाथ की गादी	मारवाड़ी ७ दुकानें हैं यहां से रेल का यातायात बंद हो जाता है।
६॥	रोडसेस की चोकी	चोकी	
६॥	हटोडा	चेनराम मारवाड़ी	४ घर मारवाड़ी के हैं
६	भेंसिया	कृष्णमन्दिर	यहां से सड़क काठमांडु को जाती है। और पैदल रास्ता भी है।
६	भीमफेरी	धर्मशाला	यहां से पहाड़ की विकट चढ़ाई चालू होती है।
४	कुलेखानी	धर्मशाला	ग्राम साधारण
८	चितलांग	धर्मशाला	" " "
६	थानकोट	रामेश्वर श्रेष्टि का मकान	" " "
६	काली माटी	सुन्दरमल रामकुंवार	ग्राम ठीक है
१॥	काठमांडु	दुर्गाप्रसाद घडसीराम	मारवाड़ियों के ६० घर हैं

वीरगंज से १५८ मील मुज्जफरपुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
३	रक्सोल	भारतीय भवन	यहां मारवाड़ी भाइयों के १० घर हैं
७	आदापुर	वंशीधर मारवाड़ी	तीन घर मारवाड़ी के हैं
७॥	छोडादाना	स्टेशन	
७॥	छोडा सहन	विश्वनाथ प्रशाद जयवाल	मारवाड़ी के ६ घर हैं
३॥	चेनपुर	स्टेशन	

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	बेरगनिया	महावीर प्रशाद मारवाड़ी	मारवाड़ी के ६० घर हैं
५	ढेंग	बाबू सूर्यनारायण मी जी	
४	सभा समोल	योगिन्द्र नाथजी त्रिपाठी	
६	रीगा	सुगर फैक्ट्री गेस्ट हाउस	मैनेजर सुरजकरण जीपारिख जोधपुर वाले तथा अन्य ५ घर जैन के हैं
६	सीतामढी		
६	भासर पकडी	जयकिशोर बाबू	ग्राम अच्छा है
४	बासपटी मधुबाजार	जसकीराम रामसुन्दर	सु डा ४ घर मारवाड़ियों के हैं
८	जनकपुर रोड (पुपरी)	धर्मशाला	१० घर मारवाड़ियों के हैं
४	रामपुर पचासी	स्कूल	शितलजी शाहु आदि अच्छे हैं
८	कमतोल	शिव मन्दिर	सूर्यनारायणजी डिप्टी आदिअच्छे सज्जन हैं
७	अहमदपुर	शिवनारायण मारवाड़ी	
६	दरभगा	अमरचन्द बालचन्द लुणिया	मारवाडियों के १०० घर हैं
३	कटलोया सराय	अमरफीलाल महादेव	ग्राम अच्छा है
८	बिरानपुर	रामचन्द्र गोखले	
५	जनार्दनपुर	महन्तजी के मठ में	
७	समस्तिपुर	जैन मारकेट	जैन के तथा मारवाड़ी के ८० घर हैं
७॥	नाजपुर	दुर्गामाता का मन्दिर	ग्राम अच्छा है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५	पुषा स्टेशन	कालुराम चत्रभुज मारवाड़ी	अम्बर चरखा एवं कस्तुरबा राष्ट्रीय स्मारक निधि की ओर से महिला विद्यालय चल रहा है।
७	बखरी	ठाकुरवाड़ी	ब्राह्मण बस्ती अधिक है
५॥	पीलखी	स्कूल	अनिन्द्र बाबू आदि अच्छे सज्जन हैं
८	राहुआ	वैष्णव मठ	ब्राह्मणों की अच्छी वस्ती है तथा बहुत प्रेमी हैं
३॥	मुज्जफरपुर	मारवाड़ी धर्मशाला	यहां को प्रजा प्राणवान है

मुज्जफरपुर से १२५ मील सासाराम

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
३	भगवानपुर चट्टी	नागरमलजी बका का बगीचा	यहां धर्म प्रेम अच्छा है
७॥	करजा	रामदेव मिश्र	ग्राम ठीक है
३	पोखरेरा	मधुमंगल प्रसाद	जनता भाविक है
३॥	सरैया कोठी	भगवान प्रशाद साहु	ग्राम ठीक है
३	बखरा	हाई स्कूल	ग्राम ठीक है
४	मकेर	शिवचन्द्र मिश्र	" "
४	सोनोटो (भाथा)	ईग्व विकास संघ की ओफिस	" "
६॥	गरखा	मठ	मनिलाल शाहु आदि अच्छे सज्जन हैं
२	अनुनि	कमालपुर बोर्ड ऊपर प्रा. स्कूल	ग्राम साधारण
६	छपरा	जैन मन्दिर	ललनजी जैन आदि अच्छे सज्जन हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७	बलेरापुर	बैसिक सिनियर स्कूल	ग्राम अच्छा है
७	आरा	हरप्रशाद जैन धर्मशाला	जैन बस्ती अच्छी है
४॥	उदवन्त नगर	मठ	गांव ठीक है
८॥	गदहनि	मठ	गांव साधारण
६	सेमराबि	सरयु विद्या मन्दिर	ग्राम अच्छा है कुछ दूरी पर है
६	पीरो	धर्मशाला	गाव अच्छा है
४॥।	सहजनि	देव नारायणसिंह	" " "
७।	विक्रमगंज	मढिया	" " "
५	मढिया	रामजगासिपाइवे	" " "
८॥	नोखा	शंकर राईस एन्ड मिल्स	मालिक अच्छा है
५	लक्ष्मणटोल	टपरी बलदेव सिंह	ग्राम साधारण
७	सासाराम	धर्मशाला	मारवाड़ी के अच्छे घर हैं

सासाराम से ११० मील मिरजापुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७॥	शिवसागर	शिव मन्दिर	सहदेव साहु बड़े सज्जन हैं
२	टेकारी	बुनियादी विद्यालय	जंगल में
६	कुदरा	नथमलजी जैन के गोले पर	सरावगियों के तीन घर हैं
५॥	पुसोली	काकराबाद मिडिल स्कूल	
७॥	मोहानिया	सत्तनारायण मील	मील मालिक सज्जन
७॥	दुर्गावति	श्री महावीरजी का स्थान	महन्तजी बड़े सज्जन
११	सय्यदराजा	चौथमल लक्ष्मीनारायण धर्मशाला	चोथमलजी आदि लोग बड़े सज्जन हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५	चन्दोली	प्राईमरी स्कूल	ग्राम ठीक है
५	जन्सो की मढी	मठ	यहां के बाबाजी बड़े सज्जन हैं
५	मोगल सराय	परमार भवन	गुजराती भाई बड़े सज्जन हैं
७।।	बनारसी	अंग्रेजी कोठी	स्था. जैन के ३० घर हैं
२	भेलुपुर	दिगम्बर जैन मन्दिर	
१०	राजा तालाब	राजकीय लोटा जाली उत्पादन केन्द्र	ग्राम साधारण
४।	मिरजा मुराद	धर्मशाला	ग्राम के लोग बड़े सज्जन हैं
७।।	बाबूसराय	डाक बंगला	श्रीरामजी वर्णलाल आदि लोग सज्जन हैं
७	औराई थाना	बड़ा मन्दिर	सभापति रामनाथजी ब्राह्मण आदि लोग बड़े सज्जन हैं
२।।	सहसेपुर अमरटोला	धर्मशाला	राधा कृष्ण अग्रवाल आदि लोग बड़े सज्जन हैं
७	मिरजापुर	वुढेनाथ श्वे. जैन मन्दिर	श्वेताम्बर दिगम्बर भाइयों की अच्छी बस्ती है

मिरजापुर से ६६ मील रींवा

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	समग्रा	मन्दिर	ग्राम अच्छा है
८	तलसी	मठ	सज्जनता की कमी है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
४	लालगंज	डाक बंगला	ग्राम अच्छा है
६	बराधा	प्राईमरी स्कूल	ग्राम ठीक है
७	महेषपुर	द्वारकादास बनिया	साधारण ग्राम
२	दरामगंज	संस्कृत महाविद्यालय	ग्राम साधारण है
५	जहुरियादर	सरकारी क्वाटर	" " "
६	हनमता	धर्मशाला	मारवाड़ी ५ घर हैं
८।	खटखरी	स्कूल	लालचन सेठ आदि लोग बड़े सज्जन हैं
८।	महुगंज	शिव मन्दिर	ग्राम साधारण है
४	पन्नि	स्कूल	ग्राम ठीक है
६॥।	लेओर	स्कूल	आगे पालिया ग्राम अच्छा है।
७॥	पत्थरहा	सुभलायकसिंह	ग्राम ठीक है
१२	सुरमा	लोलाराम	ब्राह्मण बस्ती ठीक है
१२	रींवा	जैन धर्मशाला	दि. जैन के १२ घर हैं

रींवा से ३२७ मील नागपुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
८॥	बेला	तेजसिंह ठाकुर	ग्राम ठीक है
७	रामपुर	दद्धीराम की धर्मशाला	दद्धीराम हलवाई अच्छा सज्जन है
६	सज्जनपुर	हाई स्कूल	ग्राम अच्छा है
४	माधोगढ	हाई स्कूल	सत्येन्द्रप्रसाद तिवारी जी बड़े सज्जन हैं
६	सतना	जैनमन्दिर	श्वे. जैन के २० एवं स्था. जैन के १२ घर हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६॥	लगरगवां	केबिन	
६॥	उचेहरा	कामदार बिल्डिंग	ग्राम ठीक है
४॥	इचोल	स्कूल	जंगल
४॥	मैयर	दि. जैन मन्दिर	दि० जैन के १० घर हैं
८॥	कुसेडि	जगन्नाथ प्रशादजी मिश्र	ग्राम ठीक है
८	अमदरा	जूनियर हाई स्कूल	" "
६	पकरिया	स्कूल	
६	भूठेही	स्कूल	बचुप्रशादजी शुक्ल आदि बड़े सज्जन हैं
५	कोलवारा	स्कूल	ग्राम साधारण
७॥	कटनी	श्री सम्पतलालजी जैन	रबर फेक्टरी वाले
८॥	पीपरोद	पूर्णचन्द जैन	दि. जैन के ३ घर हैं
८॥	तिवारी सलेमाबाद	जैनमन्दिर	दि. जैन के ५ घर हैं
३	छपरा	पंचायत का मकान	ग्राम साधारण है
४	धनंगवां	हुकुमचन्द बनिया	४ घर बनियों के हैं
७	सिहोरा	हाई स्कूल	दि. जैन के २० घर हैं
७	गोसलपुर	दि. जैन मन्दिर	दि. जैन के १६ घर हैं
४	गांधीग्राम	स्कूल	
६	पनागर	दि. जैन मन्दिर	दि. जैन के ७५ घर हैं
४	महाराजपुर	जैन का मकान	स्था. जैन के ६० घर हैं
६	जबलपुर	धर्मशाला	
१॥	गोलबाजार	दीक्षितजी के मकान पर	
२	गडा	गृहस्थ के मकान पर	
१	निगरी	स्कूल	
३॥	बरघी	दि० जै० मन्दिर	दि० के २२ घर हैं
६	सुकरी	हाई स्कूल	दि० के १ घर है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
[illegible]॥	रमनपुर	धर्मशाला	जंगल
४।	बनजारी की घाटी	सरकारी मकान	गांव साधारण
६	धूमा	जैन के यहां	दि० के दो घर हैं
६	धनाई डोंगरी	स्कूल	गौपालों की अच्छी बस्ती है
७।	लखनादोन	दि० जैन मन्दिर	दि. जैन के ४० घर हैं।
४	मड़ई	सरकारी मकान	
३॥	गणेशगंज	स्कूल	ग्राम अच्छा है।
६	घुणाई	दशरथलाल जैन	ग्राम साधारण।
४॥	छपरा	जमनादास रतिलाल	दि० जैन के १०० घर हैं।
३	साधक शिवनी	स्कूल	ग्राम अच्छा है।
७॥	बंदोल	त्रिलोकचन्द अग्रवाल	" " "
३	सोनाडोंगरी	ब्राह्मण के मकान पर	" " "
७	शिवनी	श्वे० जैन मन्दिर	जैन के १५ घर हैं
४॥	सिलादेही	बगीचा	
८	मोहोगांव	सेठ भागचंदजी	
४	रूकड़	नाका	
५	कुरई	दवाखाना	
२	पिपरिया	नत्थु हवलदार	
६	खवासा	कस्तूरचन्द दि० जैन	
२	मनिग्राम	स्कूल	
८	देवलापार	सुन्दरलाल बनिया	
४॥	मोनी	स्कूल	ग्राम साधारण

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१॥	कांद्री	सिंडीकेंट प्राइवेट लिमिटेड कांद्री माईन	कच्छी भाईयों के बहुत घर हैं।
३॥	आमडी	नीलकंठ	यहां तुकाराम मंडप अच्छा है।
१।	कन्हनकादरी	घुसाराम तेली	
५	गोरा बाजार कामठी	दीपचंदजी छलाणी	स्था० के ४ घर हैं
१॥	कामठी	शुक्रवारिया	
६	पाली नदी	मांगीलालजी मुणोत का बंगला	
४	नागपुर	इतवारिया जैन स्थानक में	

नागपुर से ३०३ मील हैदराबाद

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
४	अंजनी	पोपटलाल शाह	
८	गुमगांव मोटरस्टेंड	स्कूल	गांव साधारण
६	बुटिबोरी	दि० जैन मन्दिर	४ घर ओसवालों के हैं।
५	बमनी	स्कूल	
३॥	सोनेगांव	देशमुख पांडे	ग्राम ठीक है
४॥	काढरी	स्कूल	" " "
८॥	जाम	स्कूल	" " "
७॥	हिंघनघाट	स्थानक	भक्तिमान श्रावक लोग हैं।
३	कवलघाट	गृहस्थ के मकान पर	साधारण ग्राम
८॥	बडनेरा	सोभागमलजी डागा	पंजाबी भाईयों के ३ घर हैं।

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६॥	पोहना	स्थानक	४ घर स्थानक वासी के हैं।
६	पिपलापुर	सुलाखीदासजी	२ घर स्थानकवासी
३	एकुर्ली	रतनलालजी शाग	१ घर स्था० जैन
११	करंजी	स्कूल	ग्राम ठीक है
३	धारणा	हनुमानजी का मन्दिर	" "
७	पोढर कवडा	स्थानक	१५ घर स्था. जैन के हैं
३॥	जुजालपुर	बगीचा	
६॥	पाटणबोरी	कच्छीभाई	३ घर मारवाड़ी २ घर कच्छी के हैं
६	पिपलवाड़ा	स्कूल	ग्राम साधारण
६	चान्दा	हनुमानजी का मन्दिर	ग्राम ठीक है
३	आदीलाबाद	मील	६ घर स्था० जैन के है
७॥	सीता गोंदी	बावड़ी	१ घर गुजराती का है
४॥	गडी हथनुर	शिव मन्दिर	ग्राम ठीक है
८॥	इन्होचा	गोविन्दरावजी	ग्राम ठीक है
४	सातनम्बर	मनजारे का टाडा	
६॥	निछणकुडा	दरजी	ग्राम ठीक है
२॥	रोड मामला	लकड़ी गोदाम	
४॥	बोकड़ी	थाना	
८	इलोची	एक सद्‌गृहस्थ के यहां	
४	निरमल	महादेवजी सीताराम राइसमिल	८ घर मारवाड़ी के हैं
७॥	सोन	मठ	ब्राह्मण बस्ती अच्छी है
७॥	किसाननगर	किसान राईस मिल	ग्राम ठीक है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१२	अरगुल	शिवमन्दिर	ग्राम ठीक है
१२	दिच्छपली	रामजी मन्दिर	ग्राम ठीक है
१२	फलवराल	डाकबंगला	ग्राम साधारण है
४॥	सदाशिवनगर	होटल	ग्राम साधारण है
७॥	कामारेड्डी	स्थानक	ग्राम ठीक है स्था. १० घर हैं
६	जंगलपेली	शिव मन्दिर	" "
६	बिकनु स्टेशन	भीमजीभाई कच्छी	ग्राम ठीक है
४	रामायण पेठ	गिरनी सड़क पर	ग्राम ठीक है
५॥	नारसींगी	शिवमन्दिर	ग्राम ठीक है
४	वलुर	सतनारायण धोबी	ग्राम साधारण
६	मासाइ पेठ	हनुमानजी का मन्दिर	ग्राम ठीक है
४	तुपराम	सतनारायण कलार	ग्राम ठीक है
७	मनुरावाद	व्यंकटरेड्डी	ग्राम ठीक है
४	कालकंठी	हनुमानजी का मन्दिर	" "
६	मेड्चल	ग्राम पंचायत ओफिस	
६	कोंपली	ग्रहस्थ के मकान पर	
२॥	बोलारम	स्थानक	
३	लाल बाजार	सरक्युलर इन्सपेक्टर	
३	सिकन्दराबाद	स्थानक	
६	हैदराबाद	डबीरपुरा स्थानक	

मद्रास प्रांत

१. सेठ मोहनमलजी चोरडिया C/० सेठ अगरचन्दजी मानमलजी चोरडिया ठी. मीन्टस्ट्रीट साहूकार पेठ न० १०३ मु० मद्रास १
२ एस एस जैनस्थानक मीन्टस्ट्रीट साहूकार न० १११ मु० मद्रास १
३ सेठ मेघराजजी महेता C/० हिन्द बोतल स्टोर्स न० ६३ नयनाप्पा नायकस्ट्रीट मु० मद्रास ३
४. सेठ जयवन्तमलजी मोहनलालजी चोरडिया न० ७ मेलापुर मु० मद्रास ४
५. सेठ शम्भूमलजी माणकचन्दजी चोरडिया नं० १५/१६ मेलापुर मु० मद्रास ४
६. सेठ अमोलकचन्दजी भंवरलालजी विनायकिया नं० १३६ माऊन्ट रोड मु० मद्रास ६
७ सेठ हेमराजजी लालचन्दजी सिंघवी नं० ११ बाजार रोड रामपेठ मु० मद्रास १४
८. श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन बोर्डिङ्ग होम नं० ८ मांडलीय रोड ठी. नगर मु० मद्रास १७
९ ए किशनलाल न० १४ एम एच. रोड मु० पेरम्बूर मद्रास ११
१०. सेठ गणेशमलजी राजमलजी मरलेचा मु० पो० रेडहिल्स (मद्रास)
११. सामी रिखबदासजी केसरवाडी C/० श्री आदिनाथ जैन टेम्पल मु० पो० पोलाल रेडहिल्स व्हाया मद्रास
१२ सेठ बिरदीचन्दजी लालचन्दजी मरलेचा ठी. रामपुरम् (मद्रास)
१३ सेठ मोहनलालजी C/० पी एम. जैन नं० ८५ वाणा स्ट्रीट मु० मद्रास ७
१४ गेलड़ा बैंक न० २ परीयनपकारन स्ट्रीट, साहूकार पेठ मु० मद्रास १

१५. सेठ खीमराजजी चोरडिया नं० ३६ जनरल मुथिया मुदालि स्ट्रीट साहूकार पेठ मु० मद्रास १

१६. सेठ मिसरीमलजी नेमीचन्दजी गोलेछा ठी० पो० मद्दनावरम् कोतूरहाई रोड नं० ३६ मद्रास २३

१७. सेठ जुगराजजी पारसमलजी लोढ़ा नं० २६ बाजार रोड मु० सैदापेठ मद्राम १५

१८. सेठ मूलचन्दजी माणकचन्दजी सावकर ४ कारस्ट्रीट सैदापेठ मद्रास १५

१९. सेठ विजयराजजी मुथा ४६७ थी. थी. रोड़ मु० पो० अलंदूर मद्रास १६

२०. सेठ गुलाबचन्दजी घीसुलालजी मरलेचा नं० ४६ बाजार रोड़ मु० पो० पल्लावरम् जिला चंगलपेठ (मद्रास)

२१. सेठ देवीचन्दजी भवरलालजी विनायकिया मु० पो० ताम्बरम् जिला-चगल पेठ (मद्रास)

२२. सेठ धनराजजी मिश्रीमलजी सुराना मु० पो० ताम्बरम् जिला-चगल पेठ (मद्रास)

२३. सेठ सुमेरमलजी माणकचन्दजी धोका नं० ४४ जनरल पीठ रसरोड माउन्टरोड मु० मद्रास २

२४. सेठ बस्तीमलजी धरमीचन्दजी खिवेसरा १६५ अमन कुलई स्ट्रीट नेहरू रोड मु० मद्रास १

२५. सेठ घीसुलालजी पारसमलजी सिंघवी मु० चगल पेठ (मद्रास)

२६. सेठ दीपचन्दजी पारसमलजी मरलेचा मु० चंगल पेठ (मद्रास)

२७. सेठ मिश्रीमलजी पारसमलजी बरमेचा नं० २१५ बाजार रोड़ मु० पुन्नमल्ली कन्टोनमेन्ट (मद्रास)

२८. सेठ पृथ्वीराजजी दुलीचन्दजी कवाड़ नं० १५० टंकरोड
मु० पुन्नमल्ली (मद्रास)

२९. सेठ किशनलालजी रूपचन्दजी लूणिया टी गोदावन स्ट्रीट
मु० मद्रास

३०. सेठ धीरजमलजी रेखचन्दजी दाका मु० चिन्तादारी पेठ (मद्रास)

३१ सेठ समरथमलजी जोगीदासजी पटामी स्टोर नेहरू बाजार
मु० आवडी (मद्रास)

३२ सेठ मिश्रीमलजी प्रेमराजजी लूंकड़ नं० ११४, बाजार रोड
मु० तीरु वल्लुर (मद्रास)

३३ सेठ जुगराजजी खीवराजजी वरमेचा टी० गोदावन स्ट्रीट
मु० (मद्रास)

३४. सेठ गणेशमलजी जेठमलराजजी मरलेचा मु० तिरकली कुन्द्रम्
जिला-चंगल पेठ (मद्रास)

३५ सेठ बख्तावरमलजी मिश्रीमलजी मरलेचा मु० तिरकली कुन्द्रम्
जिला-चंगल पेठ (मद्रास)

३६ सेठ शिवराजजी इन्द्रचन्दजी लुणावत नं० ४ वेंकटेश रोड
कुलापटलम् मु० मद्रास १२

३७ सेठ जवानमलजी सज्जनराजजी मरलेचा मु० पो० करगुडी
जिला चंगल पेठ (मद्रास)

३८ सेठ मंगोलचन्दजी जंवरीलालजी मामड़ मु० मधुरान्तकम्
नं० ४२ बाजार रोड जिला चंगल पेठ (मद्रास)

३९. सेठ हिरनचंदजी चांदमलजी मामड़ बाजार रोड
मु० मधुरान्तकम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)

४०. सेठ सोभागमलजी धरमचंदजी लोढ़ा बाजार रोड
मु० मधुरान्तकम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)

४१. सेठ कचरूलालजी करणावट साहूकार
मु० पो० अचरापाकम् जिलाचंगल पेठ (मद्रास)

४२. सेठ चन्दनमलजी घेवरचन्दजी सकलेचा पेरुमाल कोइलस्ट्रीट
मु० तिन्डीवनम् जिला-चंगल पेठ मद्रास

४३. एम. सी. धर्मीचन्दजी गोलेछा कासीकेड
मु० तिन्डीवनम् जिला-चंगल पेठ (मद्रास)

४४. सेठ मंगलजी मणिलाल महेता C/० ओवरसीज ट्रेडर्स २२
डुप्लेक्स स्ट्रीट मु० पांडीचेरी

४५. सेठ हीरालालजी लक्ष्मीचन्द मोदी C/०एच. एल. मोदी वैशाल
स्ट्रीट मु० पांडीचेरी

४६. सेठ शान्तिलाल बछराज महेता C/० एस. बछराज नं० १
लबोरदनी स्ट्रीट मु० पांडीचेरी

४७. सेठ जशवंतसिंह संग्रामसिंह महेता C/० इम्पोर्ट एक्सपोर्ट
कोरपोरेशन पोस्ट बाक्स नं० २८ कोसेकडे स्ट्रीट मु० पांडीचेरी

४८. सेठ जसराजजी देवराजजी सिंघवी मु० वलवानूर (मद्रास)

४९. सेठ प्रेमराजजी नेमीचन्दजी बोहरा मु० वलवानूर (मद्रास)

५०. सेठ प्रेमराजजी महावीरचन्दजी भंडारी मु० वलवानूर (मद्रास)

५१. सेठ जशराजजी अजीतराजजी सिंघवी मु० पन्नरूटी

५२. सेठ आईदानजी अमरचन्दजी गोलेछा ज्वेलर्स बाजार रोड
मु० विल्लूपुरम् (मद्रास)

५३. सेठ सुखराजजी पारसमलजी दुगड़ बाजार रोड
मु० विल्लू पुरम् (मद्रास)

५४. सेठ नथमलजी दुगड C/० श्री जैन स्टोर्स ठी० पांडीरोड़
मु० विल्लू पुरम् (मद्रास)

५५ सेठ देवराजजी मोहनलालजी चौधरी मु० तिरू कोईलूर

५६. सेठ चुन्नीलालजी धरमीचन्दजी नाहर मु० अरगन्डनलूर स्टेशन
तिरू कोइलूर

५७ सेठ ए छगनमल जैन ज्वेलर्स मु० तिरूवन्नामलै जिला एन न

५८ सेठ तेजराजजी बाबूलालजी छाजेड़ मु० पोलूर जिला-एन ए.

५९ सेठ भवरलालजी जवरीलालजी बांठिया मु० पोलूर जिला एन. ए.

६० सेठ बालचन्दजी बादरमलजी मुथा
मु० तिरूवन्नामलै जिला-एन ए

६१ सेठ सेसमलजी माणकचन्दजी सिंघवी मु० आरनी जिला-एन ए.

६२. सेठ भंवरलाल भंडारी मु० चेतपेट जिला एन. ए.

६३ सेठ हीराचन्दजी नेमीचन्दजी बांठिया
मु० ऑरकाट जिला-एन. ए.

६४ सेठ माणकचन्दजी सपतराजजी पोकरना ठी० बाजार स्ट्रीट
मु० ऑरकाट जिला एन ए

६५. सेठ धनेचन्दजी विजयराजजी भटेवरा न० ४२४ मेन बाज़ार
मु० वेल्लूर (मद्रास)

६६. जी० रघुनाथमलजी न० ४१९ मेन बाजार मु० वेल्लूर

६७ एन. घेवरचन्दजी भटेवरा न० ४११ मेन बाजार मु० वेल्लूर

६८ सेठ नेमीचन्दजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा नं० ७१ मेन बाजार
मु० वेल्लूर

६९. सेठ केवलचन्दजी मोहनलालजी भटेवरा नं० ७५ मेन बाजार
मु०

७०. सेठ तेजराजजी घीसुलालजी बोहरा मु० पो० विरंचीपुरम्
७१. सेठ लालचन्दजी मोहनलालजी मु० पो० विरंचीपुरम्
७२. सेठ सोहनराजजी धर्मीचन्दजी मु० पुन्नरी जिला-चंगलपेठ (मद्रास)
७३. सेठ पुखराजजी भवरलालजी चूरड मु० राणी पेठ जिला-एन. ए.
७४. सेठ केसरीमलजी मिसरीमलजी आछा मु० वाला लाजाबाद जिला-एन. ए.
७५. सेठ केसरीमलजी अमोलकचन्दजी आछा मु० वीग कांचीपुरम् एस. रेल्वे
७६. सेठ मिसरीमलजी घेवरचन्दजी संचेती मु० छोटी कांजीवरम् जिला-चगलपेठ
७७. सेठ उगमराजजी माणकचन्दजी सिंघवी मु० वन्दवासी जिला-एन. ए.
७८. सेठ सेसमलजी संपतराजजी सकलेचा मु० उत्तरमलुर जिला चंगलपेठ
७९. सेठ नेमीचन्दजी पारसमलजी आछा मु० चंगलपेठ (मद्रास)
८० सेठ सुपारसमलजी धनरूपमलजी चौरडिया मु० नेलीकुपम् (एस. ए.)
८१ सेठ जालमचन्दजी गोलेछा मु० मंजाकुपम् (एस. ए.)
८२. सेठ पारसमलजी दुगड़ मु० परंगी पेठ (एस. ए.)
८३. सेठ जुगराजजी रतनचन्दजी मुथा मु० काटपाड़ी (एन. ए.)
८४. सेठ समरथमलजी सुगनचन्दजी ललवानी मु० चगम (एन. ए.)
८५. सेठ अम्बूलालजी संजतराजजी दुगड़ मु० गुडीयातम (एन. ए.)
८६. सेठ जसवंतराजजी चम्पालालजी सिंघवी मु० आम्बुर (एन. ए.)

८७ सेठ मिसरीमलजी पारसमलजी मुथा मु० आम्बुर (एन. ए.)

८८- सेठ पुकराजजी अनराजजी कटारिया मु० आरकोणम्

८९. सेठ गुलाबचन्दजी कन्हैयालालजी गादिया मु० आरकोणम्

९०. सेठ सुजानमलजी बोहरा मु० सीयाली जिला-तन्जावर (मद्रास)

९१ सेठ भोपालसिंहजी पोखरना मु० चिदम्बरम् (एस. आर. रेल्वे)

९२. सेठ मोहनलालजी सुराना न० ४५ बीग स्ट्रीट
मु० कुम्भ कोणम् जिला-तन्जावर

९३ सेठ मोतीलालजी श्री श्रीमाल ठी० बीग स्ट्रीट
मु० कुम्भ कोणम् जिला- तन्जावर

९४. सेठ बीसनलालजी मुकुनचन्दजी कानुगा
मु० पो० मायावरम् जिला- तन्जावर

९५. सेठ जेठमलजी बरडिया मु० मायावरम् जिला-तन्जावर
(एस. आर.)

९६ सेठ ताराचन्दजी कोठारी ६/२ जाफरा शाह स्ट्रीट
मु० त्रिचनापल्ली (मद्रास)

९७ सेठ मोतीलालजी श्री श्रीमाल मु० कोलारम. बी. (एस. रेल्वे)

९८. सेठ गणेशमलजी त्रिलोकचन्दजी मु० कडलूर (एन. टी)

९९ सेठ चपालालजी जैन मु० कडलूर (एन. टी)

१००. सेठ मूलचन्दजी पारख मु० वीरची (मद्रास)

१०१, सेठ सलराजजी मोतीलालजी राका नं० ५८ एलीफेन्ट गेट
मु० मद्रास

१०२. सेठ जुगराजजी भंवरलालजी सोढ़ा नेहरू बाजार मु० मद्रास

१०३. सेठ चम्पालालजी तालेड़ा धोबी बाजार मु० मद्रास

१०४. सेठ हीरालालजी रीकबचन्दजी पाटनी मु० सेलम,

१०५. सेठ सुखलालजी मंगलचन्दजी गुलेछा मु० तीरुपातुर (एन. ए.)

१०६. सेठ गणेशमलजी मुथा मु० भुवनगीरी (यस. ये)

१०७ सेठ दीपचन्दजी घेवरचन्दजी चोरडिया
मु० वलुन्दर पेठ (यस. ये.)

१०८ सेठ चम्पालालजी बाबूलालजी लोढ़ा ठी० बाज़ार रोड
मु० चीक बालापुर

१०६. सेठ जुगराजजी खिवराजजी मु० पेरम्बतुर जिला चंगल पेठ

११०. सेठ शंकरलालजी भंवरलालजी कांकरिया मु० पेरना पेठ
(एन० ए०)

१११. सेठ भीकमचन्दजी भुरंट मु० कलवे (एन० ए०)

११२. सेठ शकरलालजी बाकलीवाल मु० केवि कुपम (एन० ए०)

११३. एल० पुखराजजी साहूकार मु० सुगुवा छत्रम्
जिला चंगल पेठ

११४. सेठ हस्तीमलजी साहूकार मु० कावेरी पाकम् (एन० ए०)

११५. सेठ घनराजजी केवलचन्दजी मु० तिरूमास (जिला० चंगल पेठ)

११६. सेठ अमोलकचन्दजी साहूकार मु० पालसिटी छत्रम् (जिला
चंगल पेठ)

११७. सेठ केवलचन्दजी सुराना मु० त्रीमसी (जिला चंगल पेठ)

११८. सेठ जुगराजजी दुगड़ मु० अमजी केरा (मद्रास)

११६. सेठ दीपचन्दजी तिलोकचन्दजी नास्टा मु० वंगार पेठ

१२०. सेठ आर० कंवरलालजी गोलेछा मु० तीरपातुर (एन० ए०)

१२१ सेठ जीवराजजी साहूकार मु० सोलींगर (एन० ए०)

१२२ सेठ धनराजजी नगराजजी मु० वामनवाड़ी (एन० ए०)
१२३ सेठ मानमलजी वसन्तीलालजी मु० तीरूपती पुरम् (एन० ए०)
१२४. सेठ घेवरचन्दजी साहूकार मु० चीक्क भवडो (एन. ए.)
१२५. सेठ फकीरचन्दजी लूंकड़ मु० मनार गुडी, जिला तंजावर
१२६ सेठ केसरीमलजी नथमलजी दुगड़ मु० सात वावड़ी (मद्रास)
१२७. सेठ फतेराजजी भवरलालजी नवलखा मु० कोलार
१२८. सेठ ताराचन्दजी कोठारी ६/२ जाफरा शाह स्ट्रीट
मु० त्रिचना पल्ली (मद्रास)
१२९. सेठ सूरजमलजी हीरालालजी बैंकर्स पो० ब० नं० ४
मु० रावर्टशन पेठ के० जी० एफ०
१३०. सेठ केसरीमलजी लालचन्दजी बोहरा मार्केट रोड़
मु० रावर्टशन पेठ के० जी० एफ०
१३१. सेठ रघुनाथमलजी जेवन्तरायजी धाड़ीवाल नं० १ क्रासरोड़
मु० रावर्टशन पेठ के० जी० एफ०
१३२. सेठ जीवराजजी मीठालालजी रुनवाल मु० पलीकुंडा
१३३ जे० एम० कोठारी शोभा स्टोर्स मु० अन्डरसन पेठ के. जी. एफ.

मैसूर प्रान्त

१३४. सेठ पुखराजजी उत्तमचन्दजी जैन कारगुडी मु० वैटफील्ड
(बेंगलोर)
१३५ सेठ माणकचन्दजी पुखराजजी छल्लाणी डी० अशोकरोड़
मु० मैसुर
१३६ सेठ घीसुलालजी सोहनलालजी सेठिया डी० अशोकरोड़
मु० मैसुर
१३७. सेठ मागीलालजी लुणावत किस्टाजी मोहल्ला भरमैया चौक
मु० मैसूर

१३८. सेठ मिलापचन्दजी वोहरा मु० मंडिया (मैसूर)

१३९. सेठ पुखराजजी कोठारी मु० रामनगर (मैसूर)

१४०. सेठ पन्नालालजी जैन मु० चिन्पटनं (मैसूर)

१४१. सेठ किशनलालजी फूलचन्दजी लूणिया दीवान सुराप्पा लेन
मु० बैंगलोर सिटी २

१४२. सेठ किस्तुरचन्दजी कुंदनमलजी लूकड़ ठी० चीकपेठ
मु० बैंगलोर सिटी २

१४३. सेठ मिश्रीलालजी पारसमलजी कातरेला ठी० मामूल पेठ
मु० बैंगलोर सिटी २

१४४. सेठ सिरेमलजी भंवरलालजी मुथा न० ४५ रंग स्वामी टेम्बल
स्ट्रीट मु० बैंगलोर सिटी २

१४५ सेठ घेवरचन्दजी जसराजजी गुलेच्छा रंगस्वामी टेम्बल स्ट्रीट
मु० बैंगलोर सिटी २

१४६. सेठ मगनलाल केशवजी तुरकिया ठी० बोम्बे फैन्सी स्टोर्स
चीक पेठ मु० बैंगलोर सिटी २

१४७. सेठ रूपचन्दजी शेषमलजी लूणिया ठी० मोरचरी बाजार
मु० बैंगलोर १

१४८. सेठ गणेशमलजी मानमलजी लोढ़ा ठी० संपिंसरोड़
मु० बैंगलोर १

१४९. सेठ मिश्रीमलजी भंवरलालजी बोहरा मारवाड़ी बाजार
मु० बैंगलोर १

१५०. सेठ हीराचन्दजी फतहराजजी कटारिया ठी० केवलरीरोड़
मु० बैंगलोर १

१५१. सेठ मीठालालजी खुशालचन्दजी छाजेड़ तिमैयारोड़ बैंगलोर १

१५२ सेठ हिम्मतमलजी भंवरलालजी चोठिया ६४ तिमैयारोड
मु० बेंगलर १

१५३ सेठ मंगलचन्दजी मालोस ठी० शिवाजी नगर मु० बेंगलोर १

१५४ सेठ छगनमलजी C/o सेठ शमूमलजी गंगारामजी मुथा
४६ मौरेट रोड १ बेंगलोर.

१५५ सेठ चन्दनमलजी संपतराजजी मरलेचा
C/o सेठ हजारीमलजी मुलतानमलजी मरलेचा नं० ३
मुलिया स्ट्रीट शूले बाजार मु० बेंगलोर १

१५६ सेठ हिम्मतराजजी माणकचन्दजी छाजेड ठी० अलसूर बाजार
मु० बेंगलोर ८

१५७ पी० जी० धरमराज जैन न० २ मुदलियार स्ट्रीट अलसूर
बाजार मु० बेंगलोर ८

१५८ सेठ गुलाबचन्दजी भंवरलालजी सकलेचा ठी० मलेश्वर
मु० बेंगलोर ३

१५९ सेठ गणेशमलजी मोतीलालजी काठेड़ न० ५ बी० टेनीरीरोड
मु० बेंगलोर ५

१६० सेठ घीसुलालजी मोहनलालजी छाजेड़ ठी० यशवंतपुर
मु० बेंगलोर

१६१ सेठ हंसराजजी चैनमलजी कटलेरी वाला मु० हिन्दुपुर

१६२ सेठ पोसाजी लक्ष्मीचन्दजी मु० अणतपुर

१६३ सेठ चुंनीलालजी भूरमलजी मु० धर्मावरम्

१६४ सेठ हजारीमलजी मुलतानमलजी मरलेचा मु० कुप्पल

१६५. सेठ सेहसमलजी घेवरचन्दजी बागमत जिला धारवाड़
मु० गजेन्द्रगढ़

१६६. सेठ बदनमलजी सुगनचंदजी मुथा कुष्टगी जिला रायपुर

१६७. राजेन्द्र क्लोथ स्टोर्स मु० गंगावती जिला रायचूर

१६८ सेठ गुलाबचन्दजी मनोहरचन्दजी बागमार
मु० गदक जिला-धारवाड़

१६९. सेठ हजारीमलजी हस्तीमलजी जैन मारकीट मु० बल्लारी

१७०. सेठ मुलतानमलजी जशराजजी कानूगा मु० गुटकल

१७१. सेठ इन्द्रमलजी धोका C/o सेठ गुलाबचन्दजी धनराजजी
मु० आघोनी

१७२. सेठ छोगमलजी नगराजजी खीवसरा मु० सिघनूर
जिला-रायपूर

१७३. सेठ बादरमलजी सूरजमलजी धोका मु० यादगिरी

१७४. सेठ चुन्नीलालजी पीरचन्दजी बोहरा मु० रायचूर

१७५. सेठ कालुरामजी हस्तीमलजी मूथा गांधी चौक मु० रायचूर

१७६. सेठ जालमचन्दजी माणकचंदजी ह० राजेन्द्रगंज मु० रायचूर

आन्ध्र प्रांत

१७७. सेठ बचनमलजी गुलाबचन्दजी सुराना ठी० बड़ा बाजार
मु० बोलारम

१७८. सेठ समर्थमलजी आलमचन्दजी रांका ठी० पोस्ट मारकीट
मु० सिकन्द्राबाद

१७९ सेठ लालचन्दजी मोहनलालजी डुंगरवाल ठी० मोईगुडा
मु० सिकन्दराबाद

१८० वरजीवन० पी० सेठ ठी० सुलतान बाजार इन्द्रबाग, मु हैदराबाद

१८१ सेठ जशराजजी नेमीचन्दजी लोढा ठी० नूरखा बाजार
मु० हैदराबाद

१८२ सेठ चांदमलजी मोतीलालजी बब ठी. शमशेर गंज मु० हैदराबाद

१८३ सेठ मिश्रीमलजी कटारिया उपाश्रय के पास ठी० कबोरपुरा
मु० हैदराबाद

१८४ सेठ उम्मेदमलजी भीखुलालजी बाठिया मु० परभणी

१८५ सेठ मिश्रीमलजी मन्नालालजी हलवाई ठी० वजीराबाद
मु० नांदेड

१८६ सेठ मदनलालजी दवा वेचनेवाला मु० कामारेडी

१८७. सेठ बंशीलालजी भंडारी मु० परतुर तालुका परभणी

१८८ चौधरी सोभागमलजी C/o सेठ विनोदीराम बालचन्द
मु० पो० उमरी (वी० रेल्वे)

१८९. सेठ धनराजजी पन्नालालजी जागडामुथा मु० जालना (वी रेल्वे)

१९० सेठ सहसमलजी जीवराजजी देवडा ठी० कसारा बाजार
मु० औरंगाबाद

मैसुर प्रांत

१९१. सेठ हीराचन्दजी विनेचन्दजी एण्ड कं० हीरेपेठ

१६२. सेठ छोगालालजी मुलतानमलजी क्लोथ मर्चेन्ट

ठी० सुभापरोड़ मु० धारवाड़ (मैसुर)

१६३. सेठ मुलतानमलजी हरकचन्दजी ठी० खड़ा बाजार

मु० बेलगांव (मैसूर)

महाराष्ट्र प्रांत

१६४ सेठ ठाकरसी देवसी वसा पो० व० नं० २२३ साहुपुरी

मु० कोल्हापुर

१६५. सेठ नेमचन्दजी डायाभाई वसा ठी० नवीं पेठ मु० सांगली

१९६. सेठ रतीलाल विठ्ठलदास गोसलिया मु० माधव नगर

१६७. सेठ कालीदास भाई चन्दभाई मु० सतारा

१६८. जयसिंगपुर आईल मील मु० जयसिंगपुर

१६६. सेठ बालचन्दजी जशराजी १३३५ रविवार पेठ मु० पुना २

२००. सेठ दौलतरामजी माणकचन्दजी जैन मु० बारामती जिला पुना २

॥ समाप्तम् ॥